# दृष्टान्तमंजूषा

श्रीः

# दृष्टान्तमंजूषा

पेशावरनगरनिवासी परमहंस स्वामी
श्रीपरमानन्दजीने लोकोपकारार्थ
बढे परिश्रमसे निर्माण किया

★

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास™,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई – ४०० ००४.

# प्रस्तावना

☆

इस ग्रंथका नाम " दृष्टांतमंजूषा " इसलिये रखा है कि, मंजूषा नाम पिटारीका है, दृष्टांतोंकी भरी हुई जो पिटारी हो उसीका नाम दृष्टांत पिटारी अर्थात् " दृष्टांतमंजूषा " है सो इस ग्रन्थमें दृष्टांतरूपी रत्नही सब भरे हैं, सो लिखते हैं।

१–प्रथम अध्यायमें ज्ञानवानोंके २० दृष्टांत हैं उनमें अठारह वैराग्यवानोंके और दो बद्ध ज्ञानियोंके हैं।

२–दूसरे अध्यायमें ईश्वरके भक्तोंके २७ दृष्टांत हैं।

३–तीसरे अध्यायमें काम, क्रोध, लोभ, मोहादिकों पर सब ३५ दृष्टांत हैं।

४–चतुर्थ अध्यायमें कर्मोंके फलपर चौबीस २४ दृष्टांत लिखगये हैं।

५–पञ्चम अध्यायमें सत्संग, कुसंग वगैरहपर ४१ दृष्टांत हैं।

६–छठे अध्यायमें बुद्धिमानोंके ४१ दृष्टांत लिखे हैं।

७–सातवें अध्यायमें २५ दृष्टांत अदालतपर हैं। अर्थात् सब मिलकर सातों अध्यायोंमें २१३ दृष्टांत हैं। इस ग्रन्थके अवलोकन करनेसे सर्व प्रकारकी बुद्धि बढती है अर्थात् पारमार्थिक और व्यावहारिक दोनों प्रकारकी बुद्धि उन्नतिको प्राप्त होती है। विज्ञ महाशयोंको अधिक लिखनेकी कोई

जरूरत नहीं है, क्योंकि इसके देखनेसे आपहि मालूम हो जायगा ।

मैंने इस ग्रन्थको परोपकारार्थ निर्माण किया है। इसके देखने तथा मनन करनेसे ऐहिक तथा पारलौकिक सिद्धान्तोंका सच्चा हाल मालुम होजाता है । इस ग्रन्थका पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार मैंने " श्रीवेंकटेश्वर " स्टीम् मुद्रणालयके मालिक सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी, बम्बई को सदाके लिये परम सन्तोषसे प्रदान किया है। इस कारण आशा है कि कोई भी इसके छापनेका इरादा न करेंगे ।

सज्जनों का कृपाभिलाषी—

परमहंस स्वामी परमानंद,

पेशावर.

---

ॐ

# दृष्टान्तमंजूषा भाषा

## प्रथम अध्याय

### मंगलाचरण

★

दोहा.

परमानन्द चिद्रूप जो, व्यापरह्यो सबथाहिं ।
ताको करूं प्रणाम मैं, घाट बाढ कहुँ नाहिं ॥ १ ॥
नित्यानंद स्वरूप जो, आदि अंत जेहि नाहिं ।
सो मम करै सहाय अब, ग्रन्थ पूर्ण है जाहि ॥ २ ॥
प्रथम धरो दृष्टान्तको, मंजूषा फिर आन ।
नाम येहि है ग्रन्थको, जानैही बुधिमान ॥ ३ ॥
जैसा नाम ग्रन्थका, गुण भी जैसा जान ।
बारंबार विचार कर, मिल आनंद महान ॥ ४ ॥
हंसदास गुरुको प्रथम, प्रणमों बारंबार ।
नाम लेत जहँ तम मिटे, अघ होवत सब छार ॥ ५ ॥

चौपाई—परमानंद मम नाम पछानो । उदासीन मम पथको जानो ॥ रामदास मम गुरुको गुरु है । आत्मवित्त जो मुनिवर मुनि है ॥

दोहा.

परसराम मम नगर है, सिन्धु नदी उस पार ।
भारतमंडलके विषै, जानै सब संसार ॥ ६ ॥

इस अध्यायमें ज्ञानवानोंके दृष्टान्तोंको लिखते हैं:–

## दृष्टान्त ज्ञानीका १.

एक आदमी एक दिन जंगलमें हवा खानेको जो गया, वहांपर उसको एक बडा सुंदर जंगली आदमी पत्तोंको खाता हुआ दिखाई पडा. उस जंगली आदमीको पकडकरके वह अपने नगरमें ले आया और उसको अन्नका खाना उसने सिखाया और उत्तम भोजनोंको उसके प्रति वह खिलाने लगा। एक दिन वह बागमें उस आदमीको साथ लेकरके गया, वहांवर कोमल २ घास और पत्तोंको देखकर वह जंगली आपभी खानेको दौडा, तब उस जंगलीसे उसने कहा अब तो तुमको उत्तम २ भोजन खानेको मिलते हैं फिर तू क्यों घास खानेको दौडता है? उसने कहा हमारा स्वभाव पड़ा है सो हटते २ ही हटैगा। यह तो दृष्टांत हैं, दार्ष्टान्तमें ज्ञानकी प्राप्ति हो जानेपर भी यदि कदाचित् ज्ञानवान्का मन विषयभोगोंकी तरफ चलाजाय तब भी उसकी कोई हानि नहींहै॥ क्योंकि मनका अनादिकालसे विषयोंकी तरफ जानेका स्वभाव पडा है, वह धीरे २ अभ्याससे हट जायगा ॥ १ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर २.

एक वजीरके लडकेकी दोस्ती राजाकी लडकीके साथ होगई यह खबर राजाके कानमें भी पहुँचगई, राजाने मनमें विचार किया, लडकीका विवाह अभी हुवा नहीं अगर लोग इस खबरको सुनपावेंगे तब हमारी बडी बदनामी होगी, कोई

उपाय करके इस लडकेको मरवादेना चाहिये । ऐसा विचार करके राजाने वैद्यको बुलाकरके कहा कोई ऐसी औषधी तैयार करो जिसकी गंधीसे आदमी मर जाय । वैद्यने औषधी बनाकर एक डिबियामें बंद करके राजाको दी और कहा इस डिबियाको उस लडकेके सिराने रखवा देना, धीरे २ उसको यह जहर चढैगा और वह सबेरेतक मर जायगा । राजाने रात्रिको किसी नौकर द्वारा इस डिबियाको उसके सिराने रखवा दिया। आगे वह लडका अफीम खाताथा उसने जाना यह अफीमकी डिबिया नौकरने रक्खी है उसने उस डिबियाको खोलकर मनमानी दवाई खाली और सोगया, मगर मरा नहीं । दूसरे दिन राजाने वैद्यसे कहा जिसकी सुगंधीसे तुम मरनेको कहतेथे उसके खानेसे भी वह नहीं मरा । वैद्यने कहा उसका मन अपनेमें नहीं है उस लडकीमें लगा है इस वास्ते वह नहीं मरा है। अब ऐसा करो, लडकी हार श्रृंगार करके उसके आगेसे निकलजाय और तिसको दिखाई न पडे वह मरजायगा । लडकीने इसी तरह किया वह फौरन मर गया । यह तो दृष्टांत है । दार्ष्टान्तमें जिस कालमें ज्ञानवान्‌की ब्रह्मविद्या रूपी स्त्री श्रृंगारको करके मनके आगेसे होकर आत्मा के सम्मुख होती है उसी कालमें मन मरजाता है ॥ २ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर ३.

किसी सौदागरके पास एक बहुतही उम्दा घोडा था तिसको लेकर सौदागर किसी जमीदारके पास बेचने

को गया । जमीदारने उस घोडेका दाम पूछा सौदागरने पांच हजार रुपये बताये, जमीदारने पूछा इसमें ऐसा कौनसा गुण है जिस वास्ते तुम इतना बडा दाम कहते हो । सौदागरने कहा जिधरको इसको बाग फेरो फिर उधरसे लौटता नहीं है यही इसमें गुण है । जमीदारने कहा हमारी जमीदारी तो पांच कोशके अंदरही है, यदि यह उससे बहार हमको लेजायगा तब हमारी जमीदारीहि जाती रहेगी ! तब वह सौदागर दूसरे दिन एक राजाके पास उस घोडेको बेचनेके लिये लेगया और राजाने जब उसका दाम पूछा तब वही दाम बता दिया । फिर उस राजाने भी जब कि घोडेका गुण पूछा तब कहा जिधरको यह रुख करता है, फिर हटता नहीं है । राजाने कहा हमारा राज तो पांच सौ कोसके अंदर है, जब कि यह जिधरको जायगा उधरसे अगर नहीं फिरैगा तब तो हमारा राजही जातारहेगा । फिर चक्रवर्ती राजाके पास उस घोडेको वह सौदागर लेगया । उसने भी घोडेका दाम और गुण पूँछा, सौदगारने दोनों बतादिये उसने घोडेको खरीद करके कहा जिधरको जायगा हमाराही राज्य है । यह तो दृष्टान्त है, दार्ष्टांतमें मनरूपी ऐसा घोडा है जिधरको जाता है फिर लौटता नहीं है और ज्ञानवान् चक्रवर्ती राजा है, क्योंकि आत्माको वह सर्वव्यापक जानता है और अपना आत्माही जानता है कहींको मन जाय वहीं ज्ञानवान् अपने

आत्माकोही देखता है, आत्मासे भिन्न वह किसी पदार्थ-कोभी नहीं देखता है क्योंकि उसकी पूर्णदृष्टि रहती है इसी-वास्ते वह सदैवकाल अपने आपमें मग्न रहता है ॥ ३ ॥

## दृष्टांत आत्मज्ञानीपर ४.

जिस कालमें पतिव्रता स्त्री ऋतुमती होती है उस कालमें वह माता पिता भ्राता और दूसरे सब संबंधियोंका त्याग करके अपने पतिके पासही जाकर अपने पतिके साथ ही वह रमण करती है, क्रीडा करती है और आनंदको प्राप्त होती है। और बाहरके संसारकी उसको कुछभी खबर नहीं रहती है, यह तो दृष्टांत है अब इसको दार्ष्टांतमें घटाते हैं जिस कालमें आत्मवित् ज्ञानवानकी ब्रह्माकार वृत्ति होती है उस कालमें वह देह इन्द्रियादिकोंमें अध्यासका त्याग करके आत्मामें ही रमण करता है, क्रीडा करता है बाहरके किसी पदार्थकी उसको कोई भी खबर नहीं रहती है अपने आत्मा-नंदमेंही लीन हो जाता है ॥ ४ ॥

## दृष्टांत ज्ञानीपर ५.

एक प्यासी बकरी पहाडके झरनेके पास पानी पीनेके लिये गई। झरनेका पानी जो पहाडसे नीचेको गिरै तब उसका शां २ शब्द होवै उस शब्दको सुनकर वह बकरी प्यासी ही लौट आई। थोडी देरके पीछे फिर झरनेके पास गई और शां २ शब्दको सुनकर लौट आई, बकरीके मनमें यह था कि ये शब्द बंद होजाय तब मैं पानीको पीवूं इतनेमें

एक दूसरा पशु झरनेके पास आया और आकरके उसने बकरीसे कहा तू क्यों नहीं पानीको पीती है?बकरीने कहा यह शब्द बंद होले तब मैं पानीको पीवूं।उस पशुने बकरीसे कहा तू पागल है यह शब्द तो इसी तरह होताही रहैगा यह तो कभी बंद होनेका नहीं है और जब यह बंद होजायगा तब पानी भी नहीं रहेगा। यह तो दृष्टांतमें है दार्ष्टांतमें संसारके जितने व्यवहार हैं यह सब शां २ रूपी शब्द हैं सो जबतक शरीर है तबतक तो यह संपूर्ण व्यवहार होतेही रहेंगे। जब कि शरीरका नाश होजायगा तब व्यवहार भी बंद होजायँगे। सो विद्वान् पुरुष शां २ रूपी शब्दके होनेपर भी आत्म-विचाररूपी जलको पान करके अपनी तृष्णारूपी तृषाकी निवृत्ति करलेता है और मूर्ख अज्ञानी बकरीकी तरह प्यासाही रहजाता है ॥ ५ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर ६.

ईरान देशमें सौदागर लोक चार २ पांच २ सौ घोडि-योंके गोलोंको रखते हैं और जंगलोंमें रहते हैं और उस जंगलमें एक किलाभी बनाते हैं। जिसके गिरदे तीन खाँई चारों तरफ होती हैं, जब कि घोडियें ब्याती हैं तब जन्म-तेही अच्छे २ बच्चोंको उस किलेके अंदर डाल देते हैं। और किलेके दरवाजेको बंद कर देते हैं ऊपर दीवारके सीढी लगाकर उन बच्चोंको दूध वगैरहसे पालते हैं और वहाँ पर किसी प्रकारके शब्दको नहीं होने देते हैं, जब कि

वह बच्चे एक सालके होजाते हैं, तब एक तोपको लाकर उस किलेके समीप वह चलाते हैं उसकी आवाजको सुनकर बाजे २ तो तीनों खाइयोंको कूदकर जंगलको भागजाते हैं और बाजे २ दो खाइयोंको कूदकर तीसरीमें फँसजाते हैं और कोई दूसरीमें कोई पहिलीमें ही धसजाता है और कोई किलाके अंदरही फड़फडा करके रहजाता है, यह तो दृष्टांत है। दार्ष्टांतमें जब कि किसी नगरमें कोई ज्ञानी महात्मा आकरके वैराग्यकी तोप चलाता है तब जिनको उसके सुननेसे तीव्रतर वैराग्य उत्पन्न होता है वह तो तीनों खाइयोंको कूदकर वनको चलाजाता है वह तीनों खायें ये हैं गृहस्थाश्रमरूपी तो किला है, दूसरी खाई भेष हैं, सो कोई २ गृहस्थसे निकलकर भेषोंमें जाकर चेले और मकानोंमें फँसजाते है। तीसरी खाई भेष अध्यास है सो कोई २ गृहस्थ और भेषोंसे निकलकर संन्यास और त्यागके अभिमानमें फँसजाते हैं। यह दोनों ज्ञानी नहीं कहे जाते हैं, ज्ञानी वही कहाजाता है जो कि इन सब खाइयोंसे निकलकर और सर्वपदार्थोंमें अध्यासको दूर करके केवल आत्मचिंतनपरायण होजाता है वही मोक्षको प्राप्त होता है ॥ ६ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर ७.

किसी कुम्हारके पास बहुत से गधे थे वह कुम्हार शामके वक्त हरएक गधे के पावमें रस्सी बांधकर उनका कान मरोडकर एक थप्पड तिनके मुँहपर लगाकर वह

आप सो रहता था और गधे जान लेतेथे हम सब बाँधे गये हैं। कुछ दिनके पीछे उसने गधोंके पाँवमें रस्सी का डालना भी छोड दिया केवल गधोंका कान मरोडकर थप्पड लगादे' गधे जान जायँ हम बँधगये हैं रात्रिभर उसी खूटेके पांस खड़े रहें यह तो दृष्टांत है। दार्ष्टांतमें आजकल गुरु तो कुम्हारकी जगहपर हैं और चेले सब गधोंकी जगहपर हैं। सब जिसके पेचमें जो फँस जाता है वह उसके कानमें मन्त्र फूँककर थापी पीठपर लगादेता है, वह चेला जान लेता है मैं अब बँधगयाहूं उसको परमार्थका विचार कुछ भी नहीं फुरता है जन्मभर उसी गुरुका पशु बना रहता है। ऐसे मूर्ख चेलेको कदापि परमार्थका रास्ता नहीं दीखता है जैसे उसके गुरु अज्ञानी होते हैं वैसे चेले भी होते हैं ॥ ७ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर ८.

किसी कसाईके पास बहुतसी भेडियें थीं वह नित्य एक भेडीको मारकरके अपने काममें लाता था। उन भेडियोंमें एक भेडीपर बडी सुन्दर ऊन थी एक दिन उस भेडीकी ऊनको वह काटनेलगा, भेडीने जाना यह आज मारैगा उसने ऊनको काटकर भेडीको छोडदिया। इसी तरह जब २ ऊन बढजाय और उसके काटनेके लिये भेडीको वह कसाई पकडे तब २ भेडीको अपने मरनेका ख्याल होजाय। इसी तरह करते २ जब कि कुछ काल व्यतीत होगया,

तब एक रोज उस भेडीको भी कसाईने मारडाला, यह तो दृष्टांत है। दार्ष्टान्तमें कालरूपी कसाई जीवरूपी भेडियोंको नित्यही मारता रहता है सो जिस २ कालमें इस जीवको कोई रोग हो जाता है तब२यह जीव जानलेता है कि अब काल मारेगा, जब कि अच्छा होजाता है तब बेफिकर हो जाता है। बहुत दफा बीमारीसे बचने पर इसको निश्चय हो जाता है कि अब नहीं मरूंगा यह तो बीमारी हमेशा हमको होती ही रहती है। अंतको एक दिन काल भगवान् इसको मारही लेता है। यह जीव गफलतमें पडा है आत्मविचारको नहीं करता है, इसको आत्मविचार करना उचित है जो कालसे बचजांय ॥ ८ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर ९.

अविद्यारूपी कुतिया व्याई है, जीवरूपी पिल्ले उसने जने हैं, आचार्यरूपी बालकोंने अपने पट्टे जीवोंके गलेमें बांध रखे हैं। तात्पर्य यह है कि, जब कोई कुतिया ब्याती है तब लडके उसके पिल्लोंके गलेमें अपने २ लाल, काले, पीले, पटोंको बांधकर अपनी २ मेर करलेते हैं। इसी प्रकार जीवरूपी पिल्लोंके गलेमें अपने आचार्यने अपने २ तुलसी रुद्राक्ष वगैरहके पटोंको बांधरखा है और जीव विचारसे शून्य होकर उन झूठे पटोंमेंही बँधे पडे हैं। आगे आत्मविचारमें उन्नतिको नहीं करसक्के हैं। इसी वास्ते सब पिल्लोंकी तरह अपने आचार्यके पीछे दौडते

हैं, ज्ञानको प्राप्त करनेकी इच्छावाला पुरुष किसीके भी पटेमें नहीं फँसता हैं ॥ ९ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर १०.

किसी जुलाहेके घरमें लडका उत्पन्न नहीं होता था; वह जुलाहा और उसकी स्त्री नित्यही कहे कि या खुदा हमको कोई लडका दे, तब दैवयोगसे उसके घरमें एक लडकी पैदा हो गई, तब वह बडे प्रसन्न हुए और उस लडकीका लाड प्यार करने लगे। एक दिन जुलाही लडकीको गोदमें लेकर अपने कोठेपर बैठके इस लडकीकी योनिपर उँगलीको रखकर कहने लगी, अगर खुदा इस जगह में नूनी लगा देता तब क्या अच्छा होता। एकमहात्मा साधु नीचे गलीमें चले जाते थे उन्होंने कहा जब कि यह बडी होगी और इसको शौक होगा तब बहुतसी नूनियां लगवालेगी। यह तो दृष्टांत है, दार्ष्टांतमें अगर किसी वैराग्यवान् मुमुक्षुको प्रथम अज्ञानी गुरु मिलभी जाय तबभी जब कि उसकोज्ञानकी प्राप्तिका शौक होगा तब उस अज्ञानी गुरुको त्याग करके किसी न किसी विचारवान्से आत्मज्ञानका उसको लाभ होही जायगा ॥ १० ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर ११.

कोई आदमी नित्यही गणेशकी मूर्तिकी पूजा करता था एक दिन उसने जब कि गणेशकी मूर्तिको भोग लगाया, तब मूसा आकर उसके आगेसे उठाकर ले गया। उसने

जाना मूसा जबर है इसकी पूजा करनी चाहिये। वह मूसेकी पूजा करने लगा। एक दिन बिलार जो आई तो मूसा भाग गया, तब वह बिलारकी पूजा करने लगा क्योंकि पूजा जबरेकी होती है। एक दिन कुत्ता जो आया तो बिलार भागी फिर वह कुत्तेकी पूजा करने लगा। एक दिन उसकी स्त्रीने कुत्तेको जो लाठी मारी वह भागा तब वह अपनी स्त्रीकी पूजा करने लगा। एक दिन वह अपनी स्त्रीसे किसी बातपर लडपडा और दो चार जूते स्त्रीको जो उसने लगाये स्त्री भागी तब वह अपनी पूजा करने लगा। क्योंकि ज्ञानवान् अपनेही आत्माकी पूजाको करते हैं दूसरे अनात्माकी पूजाको वह नहीं करते हैं॥ ११॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर १२.

जैसे सब घटोंमें एकही गंगाजल भरा है तब भी चमारके घटका गंगा जल पिया नहीं जाता है इसी तरह सर्वशरीरोंमें एकही आत्मा है; तब भी चमारके साथ ज्ञानवान्का खाना नहीं बनता है और सर्व स्थानोंमें एकही चेतन है तब भी गिरजा, मसीद तथा कबरजान वगैरहका पूजना नहीं बनता है, क्यों कि ज्ञानी नाम विचारवान्का है विचारसे हीन अज्ञानी कहेजाते हैं॥ १२॥

## दृष्टांत ज्ञानीपर १३.

शरदृऋतुमें रात्रिके समयमें सब तारागण साफ दिखाई पडते भी हैं तब भी इसी शरदृतुमें दिनके समयमें एकभी

तारा दिखाई नहीं पडता है। इसी प्रकार जिज्ञासुको जब कि शरद् ऋतु स्थापन आत्मविद्यामें आत्माका साक्षात्कार होता है और अज्ञानियोंको दिनरूपी अज्ञानावस्थामें आत्माका प्रकाश नहीं होता है इतना ही ज्ञानी अज्ञानीका फरक है ॥ १३ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर १४.

लोहा पारसके संबंधसे जब कि स्वर्ण होजाता है फिर उस लोहेको कितनाही कोई मट्टीमें या जलमें गाड दे वह अपने रूप और गुणको कदापि नहीं त्यागता है। इसी प्रकार जिस विद्वान्‌को एकबार आत्माका साक्षात्कार होचुका है उसको फिर माया कदापि भुला नहीं सकती है ॥१४॥

## दृष्टांत ज्ञानीपर १५.

खड्ग पारसके संबध्धसे सोता होजाता परन्तु बाहरका स्वरूप तिसका ज्योंका त्योंही रहता है उसमें कुछभी फरक नहीं पडता है अर्थात् जैसे तिसका लंबा चौड़ा आकार है वैसाही फिरभी रहता है सिर्फ फरक इतनाही पड़ता है जैसे पहले वह जीवोंको काटता था, फिर वह जीवहिंसाके कामको नहीं रहता हैं। इसी प्रकार जिस पुरुषके हृदयमें आत्माका साक्षात्कार हो जाता है उसके भी शरीर इंद्रिया-दिक पहलेकी तरहही ज्योंके त्यों बने रहते हैं, केवल खोटी वासनायें तिसकी सब जाती रहती हैं, इतनाही ज्ञानीका अज्ञानीसे फरक होता है ॥ १५ ॥

## दृष्टान्त ज्ञानीपर १६.

एक ज्ञानी महात्मा वनमें रहकर नित्यही अपने स्वरूपका ध्यान करते थे और एक गोदड़ीको ओढकर सिरपर एक ऊंचा टोप पहनते थे। एक दिन वह अपने ध्यानमें बैठे थे परमेश्वरने उनकी परीक्षा लेनेके लिये उनसे कहा यह अपना लंबा टोप बेचोगे? महात्माने कहा ऐसे मत बोलो बरना हम तुम्हारा पोल निकाल देवेंगे। महात्माने कहा तुम मायावी हो हमभी तुम्हारा पोल निकाल देवेंगे। परमेश्वर हँसकर अंतर्धान होगये ॥ १६ ॥

## दृष्टांत ज्ञानवान्पर १७.

नदीके किनारेके ऊपर जो कि वृक्ष होता है उसको पानीकी तो कोईभी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उसकी जड़ें हमेशा पानीकेही अन्दर रहती हैं, परंतु उसकी शाखा और पत्तोंके ऊपर जो कि आंधीसे गरदा पड़कर-जम जाता है उस गरदाके धोनेके लिये उसको ऊपरकी वर्षाके पानीकी जरूरत है, क्योंकि विना वर्षाके उसका गरदा दूर नहीं होता है। इसी प्रकार जिसने अपने आत्माके स्वरूपको यथार्थ रूपसे जान लिया है उस ज्ञानवान्को अपने कल्याणके लिये तो ईश्वरकी भक्तिकी कोई भी जरूरत नहीं है, परंतु लोकापवादके दूर करनेके लिये ईश्वरकी भक्ति करनी और दूसरोंसे करानेकी उसकोभी जरूरत है ॥ १७ ॥

## दृष्टांत ज्ञानीपर १८.

एक आदमी विदेशको जाता था एक रास्तामें रेतेका जंगल आगया क्योंकि वहांपर कोसोंतक रेताही रेता था और ऊपरसे दिनके बारह बजनेका समय होगया। उस कालमें सूर्यकी किरणें जो कि उस रेतापर पडती थीं तब वह रेता दूरसे जलकी बडीभारी नदी प्रतीत होता था इसीका नाम मृगतृष्णाका जल कहाजाता है। क्योंकि प्यासेमृग उसमें जलबुद्धि करके दौडते हैं जब कि जल उनको नहीं मिलता है तब उसीमें वह दुःखको उठाकर मरजाते हैं। इस मुसाफिरकोभी वह रेता जलकी नदी प्रतीत होनेलगी। तब इसकोभी उसके पास जानेकी चिंता उत्पन्न हुई, उधरसे एक आदमी चला आता था उससे इसने पूछा यह जो सामनेसे नदी दिखाई पड़ती है सो कितनी बड़ी है? उसने कहा जितनी बड़ी नदीको तुम पीछे छोडकर आयेहो उतनीही बडी यह भी नदी है। उसने कहा पीछे तो कोई भी नदी नहीं आई है किंतु सूखा रेताही मिला है। उसने कहा यह भी नदी नहीं है किंतु रेताही है तुमको भ्रमसे नदी प्रतीत होती है। उसके वाक्यसे उसका भ्रम जैसे दूर होगया तैसे ज्ञानवानके वाक्यसे भी संसाररूपी भ्रम दूर होजाता है, क्योंकि उसकी दृष्टिमें संसार नहीं दिखाता है सर्वत्र उसको चेतनही चेतन दिखाता है। इसीवास्ते ज्ञानवान्का किसीसे रागद्वेषभी नहीं होता है। क्योंकि उसकी दृष्टिमें दूसरा हैही नहीं ॥ १८ ॥

## दृष्टांत ज्ञानवान्का १९.

एक पुरुष विदेशसे कुछ धनको कमाकरके लाया, रास्तामें उसको तीन आदमी मिले वह तीनों चोर थे मगर उनमें एक ब्रह्मण, दूसरा क्षत्री, तीसरा नाऊथा। उसने विचार किया कोई सूरतसे इन चोरोंसे धनको बचाना चाहिये सो बिना इनके फूटके धनका बचना कठिन है। उसने ब्राह्मणक्षत्रीसे कहा आपको तो मैं उत्तम अधिकारी जानताहूँ इस लिये आपकोही मैं अपना धन देऊँगा, मगर इत नाऊ शूद्रका कौन हक है ? इसको तुम दोनों मार पीटकर भगादेवो। उन दोनोंनेनाऊको मार करके निकाल दिया। फिर क्षत्रीसे कहा हमभी क्षत्री तुमभी क्षत्री हमारे मालिक आप आपका मालिक मैं इस भिखारी ब्राह्मणका कौन काम है ? इसको धता करो और हमसे धन लेकर तुम अपने घरको जाओ। उसने ब्राह्मणको भी निकाल दिया।क्षत्रीसे कहा—चलो नदी तीर सुस्ता करके तुमको सब धन दूंगा। नदीके किनारे पर जब पहुँचे लोगोंसे कहा—यह आदमी चोर है मेरेको लूटता है वह क्षत्री भी इस बातको सुनकर भाग गया। यह तो दृष्टान्त है। दार्ष्टान्तमें ज्ञानवान् जब कि जान लेताहै जो यह सत्त्व रज तम तीनों गुणचोर हैं तब सत्त्वके रजके साथ मिलकर तमोंको हटाता है फिर सत्त्वके साथ मिलकर रजको हटाता है अपने स्वरूपमें लयहोकर सत्त्व गुणको भी हटाकर निजानंदमें लीन हो जाता है ॥१९॥

## दृष्टान्त ज्ञानवान्पर २०

किसी देशके राजाने अपने गुरुसे एक दिन कहा महाराज ! कामको करते २ हम बड़े दुःखी हो जाते हैं और गुरु का काम है अपने चेलेकोदुःखसे छुडाना सो आपभी मुझको इस दुःखसे छुडाओ। गुरुने कहा राज्यको लडकेके हवाले कर त्यागी बनकर सुखी हो जाइये । राजाने कहा मैं तो राज्यको लडकेके हवाले करना चाहता हूं मगर लडका अभी छोटा है वह काम करनेलायक नहीं है जब कि वह सयाना होजायगा तब मैं राज्यको उसके हवाले करके त्यागी बन जाऊंगा । गुरुने कहा लडका सयाना होने तक क्या जाने तुम्हारा शरीर रहै या न रहै ? इस वास्ते तुम राज्यको हमारे प्रति संकल्प करके दे डालो । राजाने राज्यको संकल्प कर गुरुके प्रति दे जब चलनेकी तैयारी की, तब गुरुने कहा—कहांपर जाओगे और क्या काम करके खाओगे ? राजाने कहा—थोडीसी मेहनत करके दो रोटी खालूंगा । गुरुने कहा—हमारी ही मेहनत करो अब तो यह राज्य हमारा है, हमारी तरफसे तुम इसका इंतजाम करके दो रोटी खा लिया करो जो बनै बिगडे सो हमारा रहा। ऐसे कहकर गुरु तो चले गये और राजा उनका राज्य समझकर इंतिजाम करके आरामसे रहने लगा, तब राजाको बडा सुख मिला. इसी तरह ज्ञानवान्. गृहस्थी भी धन दौलत परमेश्वरकी जानकर घरका काम करके बडे

आनन्दसे रहता है, क्योंकि उसमें उसकी ममता नहीं होती है अज्ञानी अपनी ममता करके दुःखी होता है ॥ २० ॥

अब वैराग्यवानोंके दृष्टान्तोंको लिखेंगे ।

## दृष्टान्त वैराग्यपर

यूनान देशके किसी नगरके बाजारमें खडे होकर एक हकीमने लोगोंसे कहा—भाइयो ! जब मैं मुजरद था अर्थात् जबतक मैंने विवाह नहीं किया था तब तक खान दार लोग गूंगे बनगये थे, क्योंकि उसकालमें किसीने भी मेरेको खानादारीके दुःखोंको न बताया अब जो खानादार हुआ हूँ तब सब मुजरद लोग बहरे बन गये हैं कोई भी मेरी नसीयतको नहीं सुनता है जो खानादारीमें इतने बडे दुःख हैं ॥ १ ॥

## दृष्टान्त वैरागपर २.

चीनदेशके किसी भारी मकानपर तीन आदमियोंकी तसबीरें जुदा २ लिखी थीं और हर एक तसबीरका हाल उसके नीचे लिखा हुआ था, एक तसबीर ऐसी खिंचीथी कि; जो आदमी बडा भारी सोच कर रहा है वह इस सोचमें पडा था विवाहको करूं या न करूं ? क्योंकि दोनों तरहसे दुःख होता है क्योंकि ना करनेसे तो कामादिक सताते हैं और करनेसे नित्यकी संबंधियोंकी चिंता सताती है । और दूसरी तसबीरकी ऐसी शकल बनी थी कि वह एक हाथसे तो अपना सिर पीट रहा है और दूसरे हाथसे दाढीको नोचरहा है। उसका हाल लिखा-

था जो यह आदमी विवाह करके पछता रहा है तीसरी तसवीर बडी खुशदिल बनी थी उसके नीचे हाल लिखा था यह आदमी अपनी औरतको तलाक देकर याने छोडकर कैदसे छूटा है। तात्पर्य यह दिखलाया है कि विवाहके करनेमें दुःख बहुत हैं ॥ २ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर ३.

एक महात्मा बडे वैराग्यवान् थे उनके पास एक दिन बहुतसे लोग बैठेथे। महात्मा एक बारगी रोनेलगे लोगोंने सबब पूँछा तब उन्होंने कहा—हमारा मन तीर्थयात्रा करनेको चाहता है लोगोंने कहा—इसमें क्या बुराई है। महात्माने कहा—आज तो तीर्थयात्रा करनेको चाहता है कलको स्त्रीके साथ भोग करनेको भी चाहेगा, यह कितनी बडी बुराई है? लोगोंने कहा सच है ॥ ३ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर ४.

किसी अमीरके लडका नहीं होता था उसने मिन्नत मानी, यदि मेरे लडका पैदा होगा तब अपना सब धन लडकेके सिर पर वारके गरीबोंको देदूँगा। दैवयोगसे उसके लड़का पैदा हुआ तब उसने बडी खुशीके साथ अपना सब धन उसके सिरपर वारके दान करदिया। जब वह लडका बडा हुआ तब वह बडा कुकर्मी निकला और कहींसे चोरी कर जो माल घरमें लाया उसीमें वह पकडा गया, हाकिमने उस लडकेको और

उसके बापको भी साथही कैद कर दिया। उसके बापका मुलाकाती एक महात्मा जो उस नगरमें आया और लोगोंसे उसका हाल जब उन्होंने पूँछा तब लोगोंने कहा–वह तो लडकेके कैदखानेमें पडा है। महात्माने उसके हालको सुनकर कहा–इस बलाको तो उसने बडी मेहनत और मिन्नतसे मांगकर परमेश्वरसे लिया है। मूर्खलोग अपने दुःखके साधनोंकोही चाहते हैं नित्य सुखके साधनकी इच्छाको नहीं करते हैं इसीसे वह इस लोक और परलोकमें दुःखी रहते हैं ॥ ४ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर ५.

किसी महात्माके पास एक राजा नित्यही जाया करते थे एक दिन राजाने महात्मासे कहा–स्वप्नमें एक आदमी मेरेको अमृत देता था परंतु मैंने उसको न लिया। महात्माने कहा तुम भूलगये, राजाने कहा भूलनेकी कौन बात है स्वप्नकी वार्ता तो झूठी होती ही है। महात्माने कहा जाग्रात्की वार्ता कौनसी सच्ची होती है। जाग्रत् भी तो सब झूठाही है। राजाने कहा सत्य है ॥ ५ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर ६.

किसी नगरका राजा एक दिन वनमें शिकारको गया वहाँपर एक महात्मा तपस्वी रहते थे राजाने उनसे कहा महाराज! मेरेको कुछ उपदेश करिये, महात्माने कहा

यदि जंगलमें तुमको प्यास लगे और पानी कहींसे भी न मिलै और एकही आदमीके पास पानी हो और वह न दे तब तुम उसको क्या देकर पानीका एक कटोरा लोगे ? राजाने कहा आधा राज्य ! अगर आधेपर न दे तब ! समग्र राज्य । महात्माने कहा जिस राज्यका तुम अभिमान करतेहो उसका दाम एक कटोरा पानीका हुआ ॥ ६ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यवान्पर ७.

किसी नगरके राजाको जब कि वैराग्य हुआ तब वह अपने छोटेसे लडकेको वजीरके सुपुर्द कर आप वनको चल दिया अब पीछे वजीर राजकाजका प्रबंध करने लगा। जब कि, लडका सयाना होगया तब वजीरने उसको गद्दीपर बिठलादिया । वह राजकाज जब करने लगा, तब एक दिन उसने वजीरसे कहा–चलो हमारे साथ हम वनमें जाकर पिताको खोजकरके मिलेंगे । वजीरने कहा–अच्छा ! अब वह वनमें जाकर पिताको खोजने लगा, नदीके किनारेपर बैठेहुये उसके पिता अपनी गोदडीको सी रहे थे । लडका और वजीर सब दण्डवत् कर उनके पास बैठ गये लडकेने पितासे कहा–राजको छोडकर फकीर बनकर आपने क्या सिद्ध किया है ? जिस सूईसे राजा गोदडीको सीरहे थे उसको नदीमें फेंककर वजीरसे कहा-इसको निकालकर लाओ। वजीरने कहा यह कैसे हो सकता है। राजाने मछलियोंको हुकुम दिया

सैकडों मछलियां आगई और एक मछली सूईको मुखमें पकडकर राजाके सामने हाजिर होगई, तब राजाने वजीरसे कहा—देखो आगे तो मेरा सिर्फ थोडेसे मनुष्योंपरही हुकुम था अब तमाम जलचर वगैरह भी मेरे हुकुमको मानते हैं, इतना कह कर राजा जंगलमें घुसगये और वजीर वगैरह अपने नगरमें लौट आये ॥ ७ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यवान्पर ८.

दो महात्मा किसी नगरसे थोडी दूरपर जंगलमें रहतेथे और वैराग्य तथा त्यागमें दोनोंपूर्ण थे । जो कोई गरीब अधिकारी कुछ उपदेशके लिये उनके पास जावै तब उससे कुछ बातचीत कर भी लेते थे परंतु प्रमादी औरधनीसे आँखको नहीं मिलातेथे अर्थात् बडे निश्वाहथे । एक दिन वहाँका राजाभी उनके दर्शनको गया, राजाको आते देखकर उन्होंने विचार किया इसका अन्न दुष्ट है इसलिये इसकी श्रद्धाको हटाना चाहिये । ऐसा विचार कर दोनों आपसमें लडने लगे, एक कहै तुमने मेरे रोटी खाली है, दूसरा कहै तुमने मेरे रोटी खाली है । इस बातको सुनकर राजाने कहा—यह तो कंगाल हैं रोटीपर लड रहे हैं ऐसे कहकर राजा पीछेको लौटकर चला आया ॥ ८ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर ९.

किसी बादशाहने अपने वजीरको बेश कीमतीएक दुशाला इनाम दिया, दुशालेको लेकरके वजीर जब दर्बारसे बाहर नि-

कला तब सरदीसे उसकी नाक बहने लगी, वजीरने उसी दुशा-
लासे नाकको पोंछ दिया, इस बातको देखकर वजीरके विरो-
धीने बादशाहसे उसकी चुगली की, बादशाहने इसी कसूर पर
वजीरको निकालदिया, वहांपर एक महात्मा फकीर खडे थे
उन्होंने कहा—मालिकके दिये हुये कपडेका निरादर करनेसे मा-
लिकने ऐसी भारी सजा दी है इसी तरह परमेश्वर का दिया-
हुआ जो यह मनुष्य शरीर है उसका निरादर जो लोग करते
हैं अर्थात् इसको विषयभोगोंमें लगाकर खराब करते हैं उनको
भी परमेश्वर भारी सजाही देगा क्योंकि पुण्यकर्मोंसे यह मनुष्य
शरीर रूपी कपडा मिलता है इसको परमेश्वरके भजन
स्मरणमें लगाना या इससे उपकार करना येही इसका
आदर करना है ॥ ९ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर १०.

किसी महाजनका लडका नित्यही महात्माओंके
पास सत्संग करनेके लिये जाता था, जब उसका
विवाह होगया तब भी वह लडका नित्यही सत्संग
करनेको महात्माके पास जाया करता था उसकी स्त्रीके
मनमें सन्देह उपन्न हुआ ऐसा न हो कहीं यह महात्माका
चेलाही बनकर मेरेको त्याग दे। कोई ऐसा उपाय करना
चाहिये जिसके करनेसे इसका महात्माके पास जाना छूटही
जाय। ऐसा सोचकर वह पतिकी बड़ी सेवा करने लगी,
धीरे२उसने पतिको ऐसा अपने वशमें करलिया जो सत्सं-

गभी उसका धीरे २ छूटही गया। जब कि बहुत दिनोंतक यह गुरुके पास न गया तब महात्माने जाना कहीं विदेशमें गया होगा। दैवयोगसे एक दिन रास्तामें लडकेसे महात्माकी भेंट होगई, महात्माने न आनेका सबब पूँछा लडकेने कहा महाराज! ऐसी नेक स्त्री मिला है जो एक क्षणभी मेरे विना रह नहीं सकती है उसका मेरेमें बडा प्रेम है इससे वह मेरी बडी सेवा करती है और मैं भी उसकी सेवा और प्रेमसे उसके वशमे होरहा हूँ इसीसे मेरा आना आपके पास बंद होगया है। महात्माने कहा सम्बन्धी सब अपने मतलबके यार हैं तू सत्संगको न छोड़ उसने इस वार्ताको न माना। तब महात्माने कहा—हम तुमको एक युक्ति बतादेते हैं उसीसे तेरेको स्त्रीके प्रेमका हाल मालूम होजायगा। महात्माने प्राणोंके रोकनेकी एक युक्ति उसको बताई और कहा—इस प्रकार प्राणोंको रोककर तुम पड जाना वह जानेगी यह तो मरगया है पीछेउसके कर्तव्यसे उसके प्रेमका हाल तुमको मालूम होजायगा। महात्मासे युक्तिको सीखकर लडकेने दूसरे दिन सवेरे स्त्रीसे कहा आज तस्मै वगैरह उत्तम २ भोजनकोबनाओ वह बनानेलगी, जब भोजन तैयार होगया तब लडकेने दो खंभोंके बीचमें पाँवको फँसाकर प्राणोंको रोकदिया स्त्रीके बुलानेपर जब वह न बोला तब उसने हिलाकर देखा तो मालूम हुआ कि यह तो मरगया है। इसने विचारा अगर मैं अभी रोतीहूं तब दिनभर भूखी मरूँगी इसलिये

थोडा खाकर पीछे लोगोंको खबर करूं। ऐसा सोचकर तस्मैको उसने खाकर बाकीका भोजन ऊपर छींकेपर धर-कर रोना शुरू किया। इतनेमें लोगभी पहुँचगये। लोगोंने पूँछा कैसे मरगया है स्त्रीने कहा पेटके दरदसे मरा है, लोगोंने कहा अब देर मत करो जलदी इसको श्मशानमें लेचलो, जब उसके पांवको खंभोंमेंसे निकालनेलगे पर वह निकले नहीं, लोगोंने कहा खंभेको कटवा कर निकाल लें, स्त्रीने कहा खंभा कटजायगा तब फिर कौन मेरेको बनवादेगा, अब तो उसके कोईभी सुखदुःख नहीं इस लिये इसके पाँवकोही कटवाकर निकाल लेवो, ऐसी सलाहको पसंद करके लोक तो सब कूचामें आकर कफनकी तैयारी करनेलगे और भीतर स्त्री उसके पास बैठकर रोनेलगी और इस प्रकारका विलाप करने लगी–

कंता स्वर्ग सिधारिया मैने भी कुछदस।

इतना सुनकर उसका पति उठकरके कहता है–

पहले पायस पाइया पीछे चूरी चख॥

इतना कहकरके वह घरसे निकलकर महात्मा के पास चलागया और सब हालको कह सुनाया माहात्माने कहा जो कुछ कि शास्त्रोंमें लिखा है वह सच सत्य है उसको बडा वैराग्य होगया और साधुभी बनगया॥ १०॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर ११.

किसी राजाने तमाम पृथ्वीको जीतकर अपना नाम सर्व जीत रखा था और सब लोग राजाको सर्वजीत नामसेही पुकारतेथे मगर उसकी माता पुरानेही नामको लेकर पुकारती थी सर्वजीत नामसे नहीं पुकारती थी। राजाने एक दिन अपनी मातासे कहा—सब लोग तो हमको सर्वजीत नामसे पुकारतेहैं आप क्यों नहीं पुकारती हैं ? माताने कहा सर्वशब्दके अन्दर मन और इंद्रियादिकभी आजाते हैं सो जबतक आप शरीर मन और इंद्रियादिकों को नहीं जीतोगे तबतक मैं आपको सर्वजीत नामसे नहीं पुकार सकती हूँ । अनित्य संसार को जीतनेसे तो पुरुषका कल्याण नहीं होता है मन आदिकोंके जीतनेसेही होता है । इस वार्ताको सुनकर राजाको बडा वैराग्य हुआ ॥ ११ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर १२.

एक राजा नगरसे बाहर अपने बगीचामें हवा खानेको जो गया तब उसने बगीचासे थोडी दूरपर एक मकानको देखा और अपने मनमें कहा अगर यह सब जमीन बगीचामें ही मिलाइजाय तब बगीचा बडा सुन्दर बन जायगा ऐसा विचार कर उस मकानकी मालिक जो स्त्रीथी उसको बुलाकर राजा ने कहा—तू मकानका दाम लेकर चली जा । उसने कहा मैं बडोंकी जगाको छोडकर कैसेही चली जाऊँ राजाने क्रोधमें

आकरउसको निकलवा दिया । वह अपने गधेको और बच्चों को साथ लेकर रोती २ वहां से चल पडी । रास्तामें एक महात्माने उससे रोनेका हाल पूँछा तबउसने सब बयान किया, महात्माने कहा—तू हमारे साथ चल । महात्मा उसको साथ ले राजासे कहने लगे यह स्त्री कहती है हुकुम हो तो मैं अपनी जगहकी थोडी मट्टीलेलूँ । जहां जाऊँगी उसकी मढी बनाऊँगी । राजाने कहा लेलो उसने एक बोरा वहां की मट्टीका भरा महात्माने राजासे कहा—जरा इसको उठवा दीजिये राजा ने कहा हमसे यह उठेगा ? महात्माने कहा जब कि जरासी मट्टी आपसे नहीं उठती है तब इतनी बडी जमीन कैसे उठा कर परलोकमें लेजावोगे ? इस बातको सुनकर राजा कोभी वैराग्य हुआ और उसकी सब जमीनको राजाने फेर दिया । महात्माभी चल दिया ॥ १२ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर १३.

किसी ग्राममें एक बनिया रहता था वह किसी कामके लिये स्त्रीको लेकर दूसरे ग्राममें गया और घरमें पीछे अपनी कन्याको अकेली छोड गया। रात्रिमें चार चोर तिसके घरमें घुसे, कन्याने विचारा अगर मैं बोलती हूँ तब यह मुझको मारकर सब धनको लेजायँगे, कोई ऐसी हिकमत करनी चाहिये चोरभी पकडे जायँ और मालभी बचजाय । कन्या सोयेकी तरह बिरडाने लगी, कन्या कहने लगी जब मेरी शादी

होगी और मैं अपनी सुसरालमें जाऊँगी तब मेरे पुत्र पैदा होगा उस पहले पुत्रका नाम मैं मुलखा रक्खूंगी फिर दूसरा जब होगा तब उसका नाम देसा रक्खूंगी इसी तरह जब कि तीसरा पुत्र पैदा होगा तब उसका नाम चोर रक्खूंगी इस प्रकार धीरे २ कहती२फिर थोडे जोरसे कहने लगी, उसकी आवाजको सुनकर पडोसी सब उसके घरमें आगये और उन्होंने देखा तो कन्या सोईहुई बिरडा रही है और चोरभी घरके कोनेमें छिपे हैं, उन्होंने चोरोंको पकडकर सवेरे राजाके पास हाजिर किया। राजाने उसको फांसीका हुकुम दिया तब चोरों ने कहा यह तो स्वप्नके चोरोंको पुकारती थी हम जाग्रत्के चोर क्यों फांसी किये जाते हैं ? राजाने कहा—झूठे स्वप्नका फल सच्चाभी होता है ? झूँठे मोहके मारनेसे अर्थात् झूठे काम क्रोधादिक चोरोंको मारनेसे सच्चे आत्मज्ञानकी प्राप्ति होती है ॥ १३ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर १४.

जब कि साल और गिरहका दिन आता है तब मूर्ख लोग उस दिन बडा उत्साह करके खुशीको मनाते हैं वह यह नहीं जानते हैं कि आयुमेंसे एक साल और कम होगया है उसका रंज मनाना चाहिये यह कितनी बडी मूर्खता है ? इसी तरह दुःखरूप अनित्य पदार्थोंको प्राप्त होकर उनमें आसक्त होकर नित्य पदार्थ जोकि आत्मा है उसकी प्राप्तिक

लिये संसारके भोगोंसे वैराग्यको प्राप्त नहीं होते हैं और बढके मूर्खता है १४ ॥

## दृष्टान्त बद्धज्ञानियोंपर १५.

किसी ग्राममें रात्रिके समयमें चोर आया उस घर-वालेके कुत्तेने उस चोरको देख लिया इस वास्ते वह कुत्ता उस चोरपर भौंकने लगा । उस कुत्तेकी आवाजको सुनकर बाकी ग्रामके भी कुत्ते जिन्होंने चोरको नहीं देखा था वह सब भौंकने लगे । यह दृष्टांत है दार्ष्टांतमें करोडों आदमियोंमें किसी एक साधन चतुष्टय संपन्नको आत्माका साक्षात्कार हुआ है और वह अहं ब्रह्मास्मि कहता है और उसका कहना भी ठीक है क्योंकि उसको आत्मानंदका अनुभव हुआ है उसके आवाजको सुन कर बाकीके जो बद्धज्ञानी हैं जिनको कभी स्वप्नमें आत्मानंद नहीं मिला और बाह्य विषयानंदके लिये जो कि यत्न कर रहे हैं वह मानों कुत्ते भौंक रहे हैं क्योंकि बिना देखेही कहीं जाते हैं इसी वास्ते वह मिथ्यावादी हैं और वह बद्धज्ञानी भी कहे जाते हैं ॥ १५ ॥

## दृष्टान्त बद्धज्ञानीका १६.

किसी ग्राममें एक बनियाँ आटा घी वगैरह की दूकान करता था सो रोजही एक जाट उसके पास घृतको बेचनेके लिये लाता था और वह बनियां आधे दामपर घृतको जाट

से खरीद कर लेता । एक दिन दूसरे जाटने उस बेचनेवाले जाटसे पूँछा तू बनियांको घृत कैसे बेचता है ? उसने कहा चार सेर रुपयेका । जाटने कहा घृतका भाव दो सेरका है वह तुमको ठगलेता है, अब जो बनियां तुम्हारे पास घृतके लिये आवे तब तुम कह देना भैंस बीमार है एक उल्लूको खरीद कर लाओ तो उसकी दवाई बनाकर भैंसको दीजाय । बनियां जब घृतके लिये उसके पास गया तब उसने उसीतरह कह दिया और इधर उल्लूवाले को सिखा दिया—बनियां तुम्हारे पास आवे तब सौ रुपया लेकर उल्लू उसको देना । बनियां उसके पास गया तब उसने सौ रुपया उल्लूका दाम बताया। घृतके लोभसे सौ रुपैया देकर बनियां उल्लू को खरीद कर लिया, उल्लू को लाकर बनियां जब जाटके पास गया तब जाटने कहा अब उल्लूकी हमको कोई भी जरूरत नहीं है और घृतका दाम दूना बताया । बनिया दूकान पर आकर बैठरहा, जो कोई खरीदार आकर आटा वगैरहको पूछे वह बनियां साथही उल्लूकोभी बतादे । यह तो दृष्टांतमें आजकलके बद्धज्ञानी जहांपर कोई व्यवहारकी वार्ताभी होती हो वहांपर भी वह अपना ज्ञानही छांटने लग जाते हैं इसीवास्ते उनका एकभी पूरा नहीं होता है ॥ १६ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर १७.

किसी राजाकी लौंडी राजाके सोने के लिये नित्य ही सेजको बिछाती थी और उस पर तरह २ के फूलोंको

चुनती थी एक दिन उसके मनमें आई आज जरासा इस सेज पर लेट करके तो देखूँ इसपर सोनेसे कैसा मजा मिलता है ? ज्यों ही वह लेटी त्योंहीं वह सोगई । इतनेमें राजाने आकर जो उसको सोयी हुई देखा तब नौकर को हुकुम दिया इसको दस कोडा मारो ज्योंही उसको कोडे पडे त्योंही पहले तो वह रोई और पीछेसे हँसी। राजाने पूँछा तू रोई क्यों है और हँसी क्यों है ? उसने कहा—इस सेजपर एक घडी भर लेटनेसे मैंने इतने कोडे खाये हैं जो हमेशाही लेटते हैं न मालूम उनको कितने कोडे पडेंगे । इस बातको सुनकर राजा को भी वैराग्य होगया ॥ १७ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर १८.

एक फकीर राजाके महलके नीचे एक नानबाईके तंदूर पर रात्रिको पडरहा । सबेरे राजाने उससे पूछा—रात कैसे गुजरी ? उन्होंने कहा कुछ तो तुम्हारे जैसी और कुछ तुमसे अच्छी राजाने कहा—कैसे ? फकीरने कहा राजा नींदमें सो जाना तो हमारा तुम्हारा बराबरही है, परंतु जितना काल तुम रात्रिमें जागतेरहे उतना काल तुम तो विषयभोग करते रहे और हम भजन करते रहे इस अंशमें हमारी तुमसे अच्छी बीती। राजाने कहा ठीक है ॥ १८ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर १९.

किसी नगरके बाहर एक आदमी कूवेंके ऊपर आकर सो रहा उसने स्वप्नमें देखा मेरा विवाह हुआ है और स्त्री घरमें आकर पास सोगई है स्त्रीने उससे कहा जरासा पीछेको हटो। ज्योंही वह पीछेको हटा धमाकसे कूवेंमें जारहा. नगरके लोग धमाकेके शब्दको सुनकर कूवेंपर आये और कूवेंसे उसको निकालकर पूछने लगे तुमको किसने कूवेंमें गिरादिया है उसने कहा—स्वप्नकी स्त्रीने मुझको कूवेंमें गिरा दिया है जाग्रतकी होती तब न मालूम किस अधोगतिको पहुँचाती ॥ १९ ॥

## दृष्टान्त वैराग्यपर २०.

किसी राजाने एक सुनारसे तीन मूर्ति स्वर्णकी बनानेको कहा और सुनारसे कहा—वजनमें तीनों बराबरही हों और सूरतभी तीनोंकी बराबरही हो। जब कि सुनार बना कर लाया तब राजाने तीनों तुलाकर सुनारसे कहा—क्या बनवाई हुई ? सुनारने बनवाई कमोबेश मांगी राजाने कहा—इनमें क्या फरक है ? तोलमें तो तीनों बराबरही हैं। सुनारने कहा—किसी अकलमंदको बुलाकर इनका फरक बूझ लीजिये। राजाने कहा जो इनका फरक बतावेगा उसको मैं इनाम दूंगा। जब उसके फरकको किसीने भी न बताया तब एक बनियाके लडकेने कहा—मैं इसके भेदको बताता हूँ। उस लडकेने एक मूर्तिमें जो पानीको डाला तब

वह पानी सबका सब वह गया । फिर उसने दूसरी मूर्तिमें जो पानी डाला तब उसमें थोडासा बहगया । फिर उसने तीसरी मूर्तिमें जो पानी डाला तब बिलकुल उसीके अंदरही रहगया । दार्ष्टांतमें जो कि वैराग्य विचारसे खाली हैं उनके चित्तमें कथा वार्ताका उपदेश कुछभी नहीं ठहरता है चाहे वह कितनीही कथा वार्ताको सुने । और जिनके चित्तमे यत्किंचित् भी विचार है उनके चित्तमें कुछेक थोडासा शास्त्रका उपदेश रहा जाता है और जो कि वैराग्यादिकों करके पूर्ण हैं उनके चित्तमें शास्त्रका उपदेश पूरा पूरा जम जाता है, मोक्षकी प्राप्तिके लिये मुख्य साधन वैराग्य ही है, इसका यह तात्पर्य है ॥ २० ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामि–हंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्या-धरेण पेशावरनगरनिवासिना विरचितदृष्टान्तमञ्जूषा-नामकग्रन्थे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

---

## द्वितीयोऽध्यायः

### दृष्टान्त ईश्वरकी भक्तिपर १.

किसी वृक्षके ऊपर उल्लू और हंस दोनों रहते थे । एक दिन हंसने उल्लूसे कहा–सूर्यकी धूप बडी तेज है । उल्लूने कहा सूर्य कहांपर है ? हंसने कहा सूर्य आकाशमें स्थित है और उसका प्रकाश और तेज सब जगहमें फैला है । उल्लूने

कहा प्रकाश तीनों कालमें है ही नहीं तब सूर्य कैसे साबित हो सकता है। अब हंसका उल्लु के साथ झगडा होने लगा उल्लुने हंससे कहा चलो मैं तुमको गवाहोंसे पुछवा देता हूं। हंसको उल्लु उल्लुओंकी सभामें लेगया और उल्लुओंसे उल्लु ने कहा—भाई ! कहीं सूर्य तुमको दिखाता है ! उल्लुओंने कहा सूर्य तीनों कालमें नहीं है, हंस शरमिंदा होकर चला आया अपने डेरे पर आकर केहंस अपने मनमें कहने लगा झूठोंकी सभामें कभी भी जाना न चाहिये। दार्ष्टांतमें प्रकाश स्वरूप नित्य आत्मा ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है तब भी सत्य-वादी नास्तिक नहीं मानते हैं उनकी संगत नहीं करनी चाहिये ॥ १ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर २.

किसी राजाने एक पंडितसे पूँछा महाराज ! कोई तो कहता है गणेश ईश्वर है और कोई कहता चतुर्भुज विष्णु ईश्वर है, इस प्रकार कोई महादेवको कोई सूर्यको ईश्वर बताता है सो किसको ईश्वर मानना चाहिये ? पंडितने राजासे कहा नदी पार चलकर मैं आपको इस का उत्तर देऊंगा। राजा और पंडित दोनों नदीके किनारे पर पहुँचे राजाने एक नावको मंगाया पंडितने उसको नापसंद किया फिर दूसरी तीसरी बहुतसी नौकाको मंगाया परंतु पंडितने किसी नौकाको भी जब पसंद न किया तब राजाने पंडितसे कहा जिस नौका पर आप सवार होंगे वही आपको पार ले जायगी। पंडि-

तने कहा राजन् ! विष्णु आदिकोंमें से किसी की आप उपासना करेंगे वही आपको संसारसमुद्रसे पार करदेगा। क्योंकि यह सब एकही ईश्वरके नाम हैं। वस्तुका भेद नहीं है जैसे घट कलशादिक पर्याय शब्द हैं तैसे यह भी सब पर्याय शब्द हैं। जो भेदबुद्धि करके उपासना करते हैं वह पार नहीं होसकते हैं जो अभेदबुद्धि करके विष्णु आदिकोंकी उपासनाको करते हैं वह जरूर ही संसारसमुद्रसे पार होजाते हैं राजाने कहा सत्य है ॥ २ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर ३.

कोई पुरुष असाध्य रोगसे बीमार था और मरनेसे बडा डरता था उसको भयभीत देखकर एक भक्तने उससे कहा—हे मूढ ! तू यमराजसे क्यों भय करता है ? क्या भय करनेसे यमराज तुझको छोड देगा किंतु कदापि नहीं छोडेगा जो जन्म लेता है उसको तो यमराज अवश्यही मारता है परंतु जो जन्मताही नहीं है उसको यमराज कदापि मार नहीं सकता है सो तुम सर्वशक्तिमान् परमेश्वरकी शरणको प्राप्त हो जो तुमको यमराजका भय कदापि न हो ॥ ३ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर ४.

एक जुलाहाके लडकेका विवाह हुआ और वह लडका नपुंसक था और सूधा सादा भी था, जब उसकी स्त्री रात्रिको उसके पास आकर बैठी तब वह लडका उसके दोनों हाथोंको

पकड कर और घुमा २ कर पतंगण भूं २ ऐसे कहने लगा जब कि इस तरह करते उसको घंटा दो घंटे व्यतीत होगये तब फिर सोरहा। इसी तरह रोजही वह लडका करे वह जुलाही भी बिचारी भोलीभाली थी उसने जाना स्त्री पुरुषका ऐसाही व्यवहार होता होगा। एक दिन रात्रिके समयमें उसके चाचाके कानमें भी पतंगणभूंका आवाज पडा, वह जानगया कि भतीजा नपुंसक है। रात्रि बडी अंधेरी थी उसका नाम अबदुल्ला था उसने क्या किया भतीजेके बैलको खोलकर कहीं दूर ग्रामके बाहर हांक आया और आकर भतीजेको पुकार कर उसने कहा तेरा बैल कहींको चला गया है तू जाकर उसको ढूँढकरके ला। जब भतीजा अपने बैलके खोजनेको गया तब अबदुल्ला उसकी स्त्रीके पास आकर सोया और स्त्रीपुरुषका व्यवहार करके फिर अपने डेरेपर चलागया। थोडी देरके पीछे बैलको लेकर वह भतीजा भी अपने घरमें आगया और बैलको बांधकर फिर स्त्रीके पास आकर पतंगण भूं करनेलगा तब स्त्रीने उससे कहा—

आधी राती बैल गवाता ढूँढण चड्यो तूं।
चाचे अबदुले राह बताया गई पतंगण भूं॥ १॥

यह तो दृष्टांत है दार्ष्टांतमें आजकलके जितने गुरु हैं वे यथार्थ रूपसे ईश्वरकोनहीं जानते हैं इसी वास्ते वे लोगों को परिच्छिन्न ईश्वर बताते हैं अर्थात् कोई चतुर्भुजी देवीको, कोई और २ देवताओंको बताते हैं यही उन लोगोंकी पतं-

गणभूँ है। जब कि पूरा गुरु यथार्थ वक्ता मिल जाता है और वह सर्व व्यापक सर्व शक्तिमान् सत्‌चित् आनंद स्वरूप ईश्वरके स्वरूपको बताता है, तब मूर्ख गुरुओंकी बताई हुई पतंगणभूँ जाती रहती है ॥ ४ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर ९.

किसी ग्राममें एक पंडित भागवत की नित्यही कथा करता था उसकी कथामें एक लडका भी नित्यही आता था भागवतके दशम स्कन्धको सुनकर लडकेने पंडितजीसे पूँछा महाराज ! जिस कृष्णकी महिमाको आपने हमको सुनाया है वह कृष्ण कहांपर रहते हैं ? पंडितजीने कहा—वह कृष्ण वृन्दावनमें रहते हैं वहांसे वह लडका वृन्दावनमें चलागया और वहां जाकर लोगोंसे पूछने लगा कृष्ण कहां रहते हैं ? लोगोंने मंदिरोंको बतादिया। मंदिरोंमें जाकर कृष्णकी मूर्तियोंको देखकर लडकेने कहा यह तो वह कृष्ण नहीं है जिसकी कि मैंने भागवतमें कथा सुनी है, क्योंकि यह तो न बोलता है न चालता है न बंसी को बजाता है और न जाता है न नाचता है और मैंने जिस कृष्णको भागवतमें सुना है वह तो बोलता है चालता है बातचीत करता है, मैं तो उसी बोलने चालनेवाले कृष्णको खोजता हूँ। वह बालक तमाम मंदिरोंमें फिरा जब कि, किसी मंदिरमें भी उसको बोलने वाला कृष्ण न मिला; तब बाहर वनमें जाकर एकांत देशमें मनमें कहने लगा जबतक वह कृष्ण बोलने चालनेवाला नहीं

मिलेगा तबतक अन्न जलका भी ग्रहण नहीं करूंगा। इस प्रकारका मनमें दृढ संकल्प धारण करके वह कृष्णका स्मरण करने लगा और अपने हृदयमें उसी चतुर्भुज श्याम मूर्तिका ध्यान करने लगा जब कि, तीन दिन विना अन्न जलकेपडा रहा तब चौथे दिन उसके विश्वास को देखकर उसके शुद्ध संकल्पसे से श्याम मूर्ति भगवान्‌की प्रगट होकर उसके सामने खडी होगई और उस बालकसे कहने लगी लेलो पेडा मिठाईको खाओ। बालकने कहा—तुम कौन हो? भगवान्‌ने कहा मैं कृष्ण हूँ जिसको तू खोज रहा है। बालकने कहा तुम हमारे साथ हमारे गुरुके पास चलो हमारा गुरु तुमको प्रथम पहचान कर ले तब पीछे मैं तुमसे पेडा और मिठाई लेकर खाऊँगा। जबकि भगवान् उसके साथ चलनेको तैयार हुए तब बालकने कहा लाओ मैं तुम्हारे हाथोंको बांध लेऊँ, ऐसा न हो जो तुम फिर भागजाओ। भगवान्‌ने अपने दोनों हाथ उसके आगे करदिये उसने अपने रूमालसे बांध लिये और रूमालको अपने हाथमें पकड कर भगवान्‌को ले चला। जब गुरुके पास गया तब बालकने गुरुसे कहा महाराज! बडी मुश्किलसे मैं कृष्णको बांधकर लाया हूँ अब आप पहँचान करिये यह वही हैं या दूसरे? गुरुने कहा मेरेको तो नहीं दिखाते हैं। बालकने कहा—अब मेरे गुरुसे क्यों छिपाते हो? जल्दी उसको दिखाई देदो जो वह तुम्हारी पहचान करे। भक्तवत्सल भगवान्‌ने उसके गुरुको भी दर्शन देकर कृतार्थ किया। ऐसी भक्तिकी महिमा है ॥ ५ ॥

## दृष्टांत भक्तिपर ६.

बंगालके किसी नगरमें एक विधवा स्त्रीका आठ वरसका लडका मदरसामें नित्यही पढता था और माता उसको नित्य ही दूध पिलाती थी एक दिन घरमें मीठा नहीं था, माताने उसको फीकाही दूध पिलाया, लडकेने कहा माता दूधमें आज मीठा नहीं है ? माताने कहा बेटा ! मीठा तो वैकुंठ निवासी भगवान्‌के पास है उसको तुम लिख भेजो तो वह भेजदे। लडकेने दूधको छोड दिया और एकांतमें बैठकर खत लिखने लगा। हे दीनबन्धो ! हे दीनानाथ ! हे संपूर्ण प्राणियोंके पालन करनेहारे ! हे सर्वके माता पिता ! हे सर्वकी पालना करनेहारे ? वैकुण्ठ निवासी भगवन् हमारी माताने आज हमको फीका दूध पिलाया है और हमसे कहा है मीठा घरमें नहीं है तुम भगवान्‌को खत लिख भेजो जो हमारे घरमें मीठा भेज देवे। सो आप पांच सेर सुफेद शक्क-रका पार्सल हमको अमुक ठिकानेमें भेजदीजिये। क्योंकि फीका दूध हमसे पिया नहीं जाता है। इस तरहका खत लिखकर लिफाफामें बन्द करके उसपर ऐसा पता लडकेने लिखा—यह खत वैकुण्ठनिवासी भगवान्‌के पास पहुँचे जब कि डाकखानेमें उसको डालनेको गया आगे वह लेटरबक्स ऊंचा था लडकेंका हाथ उस तक न पहुँचा। तब दो इटोंको धरकर डालनेका लडकेने इरादा किया तब भी तिसका हाथ नहीं पहुँचा। इतनेमें एक अमीर बंगाली वहांपर आगया

उसने लडकेके हाथसे खत डालनेके लिये ले लिया और जब कि उसका सरनाम उसने बाँचा तब उसपर लिखा था वैकुण्ठनिवासीके पास पहुचे, उस लिफाफेसे खतको निकाल कर जब वाचा तब बालककी भक्तिको देखकर उस अमीरका मन बडा प्रसन्न हुआ उसने उस लडकेकी मातासे कहा हमको तुम अपना लडका दे देवो। हम इसको दूध मिठाई खिलाया करेंगे और पढावैंगे। उसकी माताने दे दिया उसने उस लडकेको खूब पढाया, बडे होनेपर वह लडका बडे भारी दर्जेपर पहुँचा मगर कृष्णका भक्त पूराही हुआ। यह भक्तिका फल है ॥६॥

## दृष्टान्त भक्तिपर ७.

एक साहूकार के सात लडके थे सो छै लडके तो अपने पिताकी आज्ञामें चलते थे, मगर सातवां लडका पिताकी आज्ञामें नहीं चलता था। बापने उसका हिस्सा दौलत का उसको देकर अगल कर दिया। वह अपने हिस्सेकी दौलत को लेकर किसी दूसरे नगरमें गया और थोडेही कालमें उस दौलतको उसने रंडीबाजी वगैरहमें खोडाला, जब कि उसकेपास कुछ भी खानेको न रहा तब उसने एक गँडरियाके पास भेडी चरानेपर जाकर नौकरीको कर लिया। उस नौकरीमें उसको बडा दुःख प्राप्त हुआ क्योंकि सूखा खुश्क अन्न उसके खानेंको मिलै। थोडेही दिनोंमें उसका शरीर सूख गया जब कि वह उस भेंडियाकी नौकरीमें अत्यंत दुःखी हुआ तब वह एक दिन उसकें मनमें विचार हुआ मैंने बडी मूर्खता की

जो अपने बापके कहे पर मैं नहीं चला । पिताकी आज्ञा को उल्लंघन करनेसेही मैं अत्यंत दुःखी हुआ अगर अब भी मैं अपने पिताके पास चलाजाऊँ तो अवश्यही वह मुझे प्यार करेगा । ऐसा विचार कर वह अपने घरकी तरफ चला । पिताने अपनी तरफ आते अपने पुत्रको देखकर बडे प्रेमसे पिता उसको मिला और फिरसे पितानें उसको आरामके लिये सब समान कर दिये । यह तो दृष्टांत है । दार्ष्टांतमें अनेक जन्मोंसे यह जीवअपने पिता परमेश्वरकी आज्ञाको उल्लंघन कर दुःखको उठारहा है जिस कालमें इसके मनमें विचार फुरता है और अपनेपिता परमेश्वरकी तरफ दीन होकर चलता है और परमेश्वरभी देखता है जो अब यह मेरी तरफ आता है और परमेश्वरभी बड़े प्रेमसे अपने पुत्रको मिलइ है और फिर इस जीवके लिये संपूर्ण सुखके साधनोंको जमा करदेता है ॥ ७ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर ८.

मध्य देशके किसी ग्राममें एक परमेश्वरका भक्त रहता था, वह आतेजाते साधु संतकी बडी सेवा करता था । एक दिन एक ब्रह्मचारी उसके घरमें आरहा, भक्तने उसकी बडी सेवा की जब कि चार पांच दिन बीतगये तब वह ब्रह्मचारी जानेको तैयार हुआ भक्तने कहा-महाराज ! अभी मत जाओ क्योंकि सबेरे हमारे घरमें ब्रह्मभोज है । ब्रह्मचारी नहीं माना सबेरेही

उठकर चलदिया भक्तका सात बरसका एक लडका था वह भी खेलता २ ब्रह्मचारीके पीछे चला गया जब कि, ग्रामसे कुछ दूर ब्रह्मचारी निकल गया और पीछे फिरके जो ब्रह्मचारीने देखा तब लडका आरहा है । लडका करीब पचास रुपैयाका भूषण-पहरे था, ब्रह्मचारीका चित्त उन भूषणोंको देख करके लोभमें आगया उस लडकेको झाडीमें लेजा कर उसका गला दबाके उसको ब्रह्मचारीने मार डाला और उसका भूषण उतार-कर कपडेमें बांध कर चल दिया । इधर लडकेकी माताने पतिसे पूँछा लडका कहां है ? उसने कहा कहीं खेलता होगा, उसने कहा नहीं तुम जाकरके उसको जल्दी खोजकर लाओ । लडकेका पिता लडकेको खोजता हुआ ग्रामके बाहर थोडी दूर जब गया तब उधरसे ब्रह्मचारी उसको झाडीसे निकलता दिखाई पडा, ब्रह्मचारीको बुलाकर भक्तनें कहा आपने लडकेको कहीं देखा है ? ब्रह्मचारीके सिरपर खून चढ गयाथा वह रो पडा और लडकेका जेवर उसके पिताके सामने रखकर ब्रह्म-चारीने साफ कह दिया— लडकेको मैंनें मार दिया है । भक्तने कहा उसकी लाशको बतादे । उसने लाशको बतादिया, भक्त बडा धैर्यवाला था उसने ब्रह्मचारीसे कहा इसका काल तो इसी तरहसे होना था अब तुम इन भूषणोंको ले करके यहांसे भाग जाओ । ब्रह्मचारी भूषणोंको फेंककर चल दिया, भक्तने उसी तरह सब भूषण लडकेको पहरादिये और चादरमें लपेटकर चुपचापसे अपनी कोठडीमें खाटपर उसको लिटाकर बाहरसे

ताला लगाकर स्त्रीसे जाकर कहा लडका कोठडीमें सोता है तुम अपना काम करो । स्त्री भंडारेका काम करने लगी जब दिनके बाहर बजे और इधर उधरसे साधु ब्राह्मण आनेलगे और सब बैठगये और पत्तल उठी इतनेमें वह भक्त क्या देखता है एक वृद्ध संन्यासी हाथमें तूँबा लिये हुए चले आते हैं । भक्तने आगे जाकर उनका सत्कार किया, तब महात्माने कहा हम तुम्हारे घरमें एकांत देशमे अलग बैठेंगे । घरमें भक्त लेगया, जिस कोठडीमें लडका था उसके आगे वह बैठगये । जब भक्तने उनके आगे एक पतलको रक्खा तब उन्होंने कहा दो पत्तलोंको रखो, दो रखदीं, जब अन्न परोसा गया तब महात्माने कहा—भक्त ! तुम्हारा बालक कहाँ है ? भक्तने कहा महाराज ! वह सोता है । कहा उसको पुकारो वह जाग पडेगा, भक्तने कहा महाराज! आपही पुकारिये शायद आपके पुकारने पर जागपडे । महात्माने लडकेका नाम लेकरके पुकारा । तुरंग लडका उठकर उनके पास आकर बैठगया और महात्माके साथ भोजन करने लगा । भक्त मनमें जान गया कि यह साक्षात् परमेश्वर है और जब लोग सब चलेजाँयगे तब मैं इनसे बातचीत करूंगा । जब भोजन कर पंक्ति उठी तब महात्मा भी अंतर्धान हो गये ॥ ८ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर ९.

हजरत मूसा कोयतूर पहाडपर नित्यही जाते थे और वहाँ-पर एक बिजलीसा चमत्कार होता था उसीको खुदाका नूर जानकर प्रणाम करके चले आते थे। एक दिन वह सवेरे कोयतूरपर जब जानेलगे तब रास्तामें एक आजडी ध्यान लगाय बैठा था। मूसाने उसको बुलाया वह नहीं बोला फिर बुलाया तबभी नहीं बोला जब तीसरी दफा बुलाया तब बोला, मूसाने उससे कहा तुम किस फिकरमें बैठें हो ? उसने कहा खुदाकामा बाप तो हैं नहीं बस उसका सिर कौन धोता होगा उसको स्नान कराकर कपडे कौन पहनाता होगा और सब उसके खिलानें वगैरहकी खिदमत उसकी कौन करता होगा सो मैं इसका इन्तिजाम कर रहाहूं। खुदा जो मेरे पास आवेगा तब मैं भेडियोंका दूध दोहकर उससे उसका सिर धोऊँगा, स्नान कराकर कपडे पहनाकर फिर उसको भोजन कराकर सुलाऊंगा, मैं इन्ही बातोंका ध्यान कर रहाहूं। मूसाने कहा तोबा २ ऐसे मत कहो ऐसा कहना कुफ्र होता है, मूसाकी बातको सुनकर वह चुपकर बैठरहा जब मूसा पहाडपर गया उस दिन वह चमत्कार न हुआ तब मूसाने प्रार्थना की आज मेरा क्या कसूर है जो मुझे दीदार नहीं हुआ है ? आकाशवाणी हुई रास्तामें मेरे भक्तको तुमने मेरे ध्यानसे हटाया है मैं सबमें पूर्ण हूँ और सर्वरूप हूं जिस तरहसे जो मेरा ध्यान करता है मैं उसको उसी तरहसे दर्शन

देताहूं, तुम जाकर उस आजडीको उसी तरहके ध्यानमें लगाओ और उससे अपनी भूलको बख्शाओ तब तुमको मेरा दीदार होगा । मूसाने आकर वैसाही किया और उससे अपनी भूलको बख्शाया । तब फिर मूसाको उस पहाडपर खुदा दीदार हुआ ॥ ९ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १०.

एक आजडी जंगलमें भेडियोंको चराता था और उसी जगह मकान बनाकर नित्यही रहता था और रात्रिके समय आकशमें तारोंको देखकर बडा प्रसन्न होता और परमेश्वरकी स्तुतिको करता और परमेश्वरको धन्यवाद देता जिसने इनको निराधार खडा किया है और जब उसकी किसी भेडिको बच्चा पैदा होता तब उसके सिरपर हाथ फेरकर कहता धन्य वह परमेश्वर जो कि एक बूंद पानीसे ऐसे २ सुन्दर जीवोंको पैदा करता है बस येही उसका ध्यान था ऐसे २ उसका मन निरोध होगया और उसमें सिद्धि पैदा होगई एक दिन वहांके बादशाहको स्वप्न आया कि प्रजाको लूटकर दौलतको जमा करूँ । सबेरे बादशाहने वजीरसे कहा—मेरेको रात्रिमें क्या स्वप्न आया ? वजीरने कहा कल बताऊंगा । दूसरे दिन वजीर जंगलमें भाग गया वहांपर उसको प्यास लगी तब पानीकोखोजते २ उसी आजडीका झोपडा उसको दिखाई पडा, झोपडेके समीप जब वह

गया तब आजडीने उसको पानी पिलाकर एक थप्पड उसके मुखपर लगाकर कहा जाओ बादशाहसे कहो प्रजाके लूटनेसे दौलत जमा नहीं होती है । प्रजाके पालने और बसानेसे दौलत जमा होती है । तुम्हारा स्वप्न ठीक नहीं है । बादशाहने वजीरसे पूछा तुमको किसने बताया है उसने कहा मेरेको आजडीने बताया है आजडीके पास जाकर पूंछा तब उसने अपने ध्यानको बता कर कहा—मेरेको इस ध्यानसे सिद्धि प्राप्त हुई । तात्पर्य यह है मनके निरोधका नामही भक्ति है वह निरोध जिस रीतिसे हो उसी रीतिसे करना चाहिये । उसीसे फल प्राप्ति होजाती है ॥ १० ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर ११.

एक समय दुर्वासाजी यमुना स्नान कर रहे थे और ऊपरकी तरफ द्रौपदी स्नान कररही थी । स्नान करते २ दुर्वासाजीकी लंगोटी बहगई, दुर्वासाने विचारा द्रौपदी जलसे निकलकर चली जाय तब मैं निकलूं इधर द्रौपदीने विचारा-प्रथम दुर्वासाजी निकले तब मैं निकलूं थोडी देर पीछे द्रौपदीने जो देखा तब उसको मालूम हुआ जो दुर्वासाजीकी लंगोटी बह गई है वह अपने ऊपरवाले वस्त्रके टुकडे फाड २ कर उनकी तरफ जलमें बहाने लगी । बहुतसे टुकडे तो बह गये मगर एक टुकडा उनमेंसे उनके हाथ लगा उसीको बांधकर वह जलसे बाहर निकले और द्रौपदीको उन्होंने वर

दिया । तेरे इतने वस्त्र हो जायँगे जो तू कदापि नग्न नहीं होवेगी यह तो दृष्टांत है दार्ष्टांतमें आत्मज्ञानकी प्राप्तिके लिये बहुतसे कठिन २ साधन शास्त्रकारोंने विधान किये हैं उन सबको जीवने बहा दिया है परन्तु जो एक भक्तिरूपी साधन भी इसके हाथमें आजाय तब उसीको पकडकर यह संसाररूपी सागरसे तरकर पार होसकता है । इस लिये सर्व पुरुषोंको भक्तिरूपी साधनको नहीं छोडना चाहिये ॥ ११ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १२.

एक कालमें देवताओंका दैत्योंके साथ बडा भारी घोर युद्ध हुआ । देवता सब भागकर एक वनमें जाकर आपसमें कहने लगे परमेश्वरको कहांपर जाके हम लोग खोजें ? जो वह हमारी आपदाको दूर करे। तब कैलासमें जाकर महादेवजीसे देवताओंने कहा-हम परमेश्वरसे मिलना चाहते हैं। सो आप बताइये वह कहां है जहांपर वह होवैं हम उनको जाकर खोजें, महादेवने कहा परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है सर्व स्थानोंमें विद्यमान हैं जहांपर बैठकर तुम उनका ध्यान करोगे उसी जगहमें वे प्रगट होजायंगे । देवतालोग उसी वनमें बैठकर परमेश्वरका स्मरण करने-लगे, परमेश्वरने प्रगट होकर देवताओंको आपदासे छुडाया यह तो दृष्टांत है । दार्ष्टांतमें जो कि मूर्ख अज्ञानी हैं वह पर्वतोंमें और जंगलोंमें परमेश्वरके दर्शनके लिये दौडे जाते हैं और वहांपर जल पाषाणको परमेश्वर जानकर कहते हैं हमको परमेश्वरका दर्शन हुआ । वास्तवमें उनको परमेश्व-

रका दर्शन नहीं होताहै । क्योंकि परमेश्वर जल पाषाणरूप नहीं है जल पाषाणादि अतिस्थूल और नाशी पदार्थ हैं परमेश्वर इनसे लाखों गुण सूक्ष्म और नित्य चैतन्य स्वरूप है और जोकी ज्ञानवान् है वह जहां तहां बैठकर चित्तका निरोध करके अपने अन्तः करणमेंही उसके प्रकाश स्वरूपको देखते हैं ॥ १२ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १३.

जिस कालमें महाभारत होनेलगा तब दुर्योधन और अर्जुन श्रीकृष्णजीके लेनेको द्वारकामें गये । उसकाल श्रीकृष्णजी सोयेथे अर्जुन तो जाकर पाँवकी तरफ बैठ गये और दुर्योधन सिरकी तरफ बैठा रहा । जब भगवान् उठे तब प्रथम अर्जुनहीको देखा, पश्चात् दुर्योधनको देखा । तब प्रथम दोनोंसे आनेका सबब पूंछा ? दोनोंने कहा हम आपको अपनी २ तरफदारीके लिये लेने आये हैं । भगवान्ने कहा—हम इस युद्धमें शस्त्रको तो नहीं उठायेंगे परंतु तुम्हारा हम इतना सत्कार करते हैं एक तरफ एक लाख फौज और एक तरफ हम अकेले विनाशस्त्रके । तुम दोनोंमेंसे एक आदमी फौजको ले लो और एक विना शस्त्रके हमको ले लो। दुर्योधनने कहा—मैं एक लाख फौजको लूंगा । अर्जुनने कहा—मैं केवल आपकोही लूँगा । भगवान्ने अर्जुनसे कहा-विना शस्त्रके मुझ अकेलेको लेकर तू क्या करेगा ? अर्जुनने कहा—आपको रथवाई बनाऊँगा । भगवान्ने भक्तिके

वश होकर रथवाईपना भी मंजूर कर लिया। जब भीष्मजीने युद्धमें अर्जुनको बडा तंग किया तब अपनी प्रतिज्ञाको छोडकर भगवान् रथका पहिया उठाकर भीष्मजीके मारनेको दौडे तब भीष्मजीने हाथ जोडकर कहा हे स्वामिन्! आप धन्य हैं अपने भक्तोंकी प्रतिज्ञाका पालन किया और अपनी प्रतिज्ञाको छोडदिया। जो पुरुष दृढविश्वास कर परमेश्वरकी भक्ति करता है परमेश्वर उसीपे नजर रखता है इसमें कोई भी संदेह नहीं है ॥ १३ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १४.

चतुरभुज नाम एक भगवान्के बडे भक्त थे, वह एक दिन दोनों हाथमें षाडताल लेकर भगवान्के आगे नृत्य करने लगे। नृत्य करते २ वह प्रेममें ऐसे मग्न हुए कि; उनकी धोती नीचेसे खुलगई और वह नग्न होगये और उनको अपने शरीरकी भी कोई सुध न रही। तब भगवान्ने अपने हाथसे उसकी धोतीको बांध दिया। सारांश भगवान् भक्तोंके अधीन रहते हैं ॥ १४ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १५.

किसी महात्माका चेला तीर्थयात्राको गया। कुछ कालके पीछे वह वापस आया। जब उसके गुरुकी कुटी कुछ दूर रहगई, तब उसको एक आदमी मिला उसको पूँछा तुम कहां जाते हो? साधुने कहा—हम गुरुके दर्शन को जाते हैं

उसने कहा—तुम्हारा गुरु तो कालवश होगया हैं। चेलेने कहा—चलकर मैं उनका संस्कार तो करूँगा। उसने कहा—उनका संस्कारभी होगया है चेलेने कहा—चलकर उनके फूल गंगामें डालूँगा। तब कहा उनके फूलभी गंगा पहुँच गये हैं। चेलेने कहा—भंडारातो करूंगा, फिर कहा—भंडाराभी उनका होगया है। चेलेने कहा हम जायँगे जरूर, उनके स्थानकोही जाकर प्रणाम करेंगे। ऐसा कहकर वह गुरुकी कुटीपर चला आया, आगे आकर क्या देखता है गुरुजी जागते बैठे हैं। गुरुको प्रणाम कर उनके समीप बैठकर उसने रस्तेवाले मनुष्यका सब हाल कहा और यह भी कहा उसने व्यर्थ झूँठ कहा, गुरुने कहा उसने झूँठ नहीं कहा है उसने सत्य कहा, क्योंकि एक साहुकार हमारे पास आया था उसने हमको परमेश्वरकी तरफसे हटाकर चार घडी व्यवहारकी बातोंमें लगा रक्खा था सो प्रथम घडीमें तो हम परमेश्वरकी तरफसे मरेथे और दूसरी घडीमें मानो हमारा संस्कार होगया और तीसरीमें गंगा फूल पहुँचगये। और चौथीमें भंडारा होगया जब कि वह सेठ चला गया तब फिर हमारा मन परमेश्वरकी तरफ लगा है। इसलिये यह हमारा अब दूसरा जन्म है। तात्पर्य यह है संसारमें जिन लोगोंके मन ईश्वरकी तरफसे हटकर व्यवहारमें ही लगे हैं वह मानो जीते ही हैं॥ १५॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १६.

एक राजाने किसी देशपर चढाई की और उस देशको राजाने फतेह कर लिया और वहां पर अपना कब्जाकर कुछ दिन वहांपर रहकर जब अपने देशको आने लगा तब उसने अपनी रानियोंको लिखा जिस चीजकी जिसको जरूरत हो सो लिख भेजें। मैं उसके लिये लेता आऊँगा। इस खतको बाचकर हर एक रानीने अपने मनकी चीजको राजाको लिख भेजा परंतु जो सबसे छोटी रानी थी उसने एक सादे कागज पर एकका अंक लिखकर उसको लिफाफामें बंद कर राजाके पास भेज दिया। जब उस लिफाफाको खोलकर देखा तब उस-में एकके अंकवाला सादा कागज निकला, राजाने वजीरसे कहा यह रानी कैसी मूर्ख है? खाली कागज भेजदिया और चीजकाभी इसमें नाम नहीं लिखा है। वजीरने कहा येही रानी सबमें अकलमंद है इसने जो खाली कागजपर एकका अंक लिखकर भेजा है उसका यह तात्पर्य है मुझको एक आपकी ही जरूरत है और किसी पदार्थकी जरूरत नहीं है। राजाने कहा ठीक है। जब राजा अपने देशमें आये तब जो २ चीज जिस २ रानीने लिखी थी उसी के घरमें भेजकर आप राजा उसी रानीके घरमें चलेगये। राजाके जानेसे संपूर्ण विभूति भी राजाके साथ ही चली गई। यह तो दृष्टान्त है। दार्ष्टान्तमें जो पुरुष कामनाके सहित ईश्वरकी भक्तिको करते हैं उनको तो उतनाही ईश्व-

देता है परंतु जो निष्काम होकर ईश्वरकी भक्ति करता है और केवल एक ईश्वरकी प्राप्तिकीही इच्छा करता है उसके पास जब कि ईश्वर पधारते हैं साथही ईश्वरकी विभूति भी उसको प्राप्त होजाती है ॥ १६ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १७.

जब कि प्रह्लादजी पांच वर्षके थे तब एक दिन सैर करनेको जातेथे रास्तामें एक कुम्हार बर्तनोंके आवाको आग देकर पश्चाताप कर रहा था और परमेश्वरसे प्रार्थना कररहा था । प्रह्लादने पूंछा– पश्चात्ताप और प्रार्थनाका सबब क्या है ? उसने कहा इस आवामें सब बर्तनोंके नीचे जो ऊंधा बर्तन रखा है उसके अंदर दो बिलारके बच्चे बैठेथे सो हम निकालनेको भूलगये हैं । और मैंने धोखेसे इसमें आगभी लगादी है और वह आग इस आवाके अंदर घुसभी गई है अब उनका निकालना कठिन है । मैं अपनी भूलपर पश्चा-ताप करताहूं और ईश्वर सर्वशक्तिमान है वह चाहे तो उनको बचाभी सक्ता है । इस लिये मैं ईश्वरसे प्रार्थना करताहूं जिसमें वे दोनों बच्चे बचजायँ । थोडे दिनोंके पीछे जब वह आवा ठंडा हुआ. तब फिर प्रह्लाद उधरको निकले तब वह कुम्हार वर्तनोंको आवामेंसे एक२हटाता था सोदोनों बच्चे प्रह्लादके साम-नेही नीचेवाले वर्तनसे जीते निकले । ईश्वरकी इस शक्तिको देखकर उसी दिनसे प्रह्लादका ईश्वरमें पूरा प्रेम होगया, उस प्रेमके होनेसे पिताने प्रह्लादको अनेक प्रकारके कष्ट दिये

तब भी प्रह्लादका एक राम बाँका नहीं हुआ, अंतमें नरसिंह अवतारको धारण कर भगवान्ने प्रह्लादकी रक्षा की । इसी तरह जो पुरुष पूरा विश्वास कर परमेश्वरसे प्रेम करता है उसका एक रोमभी बाँका नहीं होताहै और अंतमें वह मुक्तिको प्राप्त होता है, क्योंकि परमेश्वर सदैवकाल अपने भक्तोंपर कृपादृष्टिकोही रखता है ॥ १७ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १८.

जिस कालमें द्रौपदीके स्वयंवरमें सब राजा इकट्ठे हुए और द्रुपदराजाने एक संकेत कर रखाथा अर्थात् एक मछली ऊपर टांगी थी और नीचे जलमें उसका प्रतिबिंब पडताथा, नीचे प्रतिबिंबको देखकर जो ऊपरके लक्षको वेधेगा मैं उसीके साथ द्रौपदीका विवाह करूँगा । ऐसी द्रुपदराजाकी प्रतिज्ञा थी सो द्रोणाचार्यजीने प्रथम दुर्योधनसे कहा—तुम शिस्तको लगावो जब दुर्योधनने शिस्त लगाई तब दुर्योधनसे द्रोणाचार्यजीने पूछा आप क्या देखते हैं? दुर्योधनने कहा मैं आपको और लक्षको और अपनेको देखताहूं कहा हटजावो, दुर्योधन हटगया, फिर कर्णसे कहा तुम शिस्त लगावो, कर्णने शिस्त लगाई, तब उससे द्रोणाचार्यजीने पूछा आपको क्या दीखता है ? कर्णने कहा मैं अपनेको और लक्षको देखताहूं । कहा तू भी हट जा । फिर अर्जुनसे कहा तुम शिस्तको लगावो जब कि अर्जुनने शिस्त लगाई तब द्रोणाचार्यने पूछा तुम क्या देखते हो ? अर्जुनने कहा मैं लक्षकोही देखता हूं न मेरेको

आप दीखते हैं और न कोई दूसराही पदार्थ दीखता है केवल लक्षमात्रही मेरेको दीखता है तब द्रोणाचार्यने कहा तुम बाणको छोडो तुम लक्षको वेधन करलोगे। अर्जुनने बाणको छोड़ा लक्ष वेधन होगया अर्जुनको द्रौपदी मिलगई। यह तो दृष्टांत है। दार्ष्टांतमें जिस भक्तकी ऐसी वृत्ति परमात्मामें लग जातीहै जो सिवाय परमात्माके उसको और कोई भी पदार्थ नहीं दीखता है वही उत्तम भक्त कहा जाता है, दूसरा नहीं॥ १८॥

## दृष्टान्त भक्तिपर १९.

किसी नदीके किनारेपर एक पंडित नित्यही पूजा करता था, एक दिन एक जाटने उससे कहा पंडितजी ! मेरेको भी कोई मंत्र बता दीजिये जो मैं नित्य उसको जपा करूं। पंडितजीने गुपाल इस मन्त्रको उसके प्रति बता दिया, गुपाल तो वह भूलगया परंतु उपाल २ करने लगा। भगवान्‌ने लक्ष्मीसे कहा मेरा एक नया भक्त बना है उसने मेरा नाम भी नया धरा है चलो तुमको दिखलावैं। लक्ष्मीको लेकर भगवान् उसी जंगलमें गये जहाँपर वह बैठकर उपाल २ करता था, लक्ष्मीने जाकर उससे पूछा तुम किसको जपते हो ? एक दोबार पूछनेसे तो वह नहीं बोला जबकि तीसरी बार लक्ष्मीने पूछा तुम किसका जप करतेहो ? तब बडे क्रोधसे उस जाटने लक्ष्मीसे कहा तुम्हारे खसमका मैं जप करताहूं भगवान्‌ने कहा—देखा लक्ष्मी ! हम जो तुमसे कहतेथे वही हुआ। भगवान्‌ने उस

भक्तको दर्शन देकर कृतार्थ किया क्योंकि वह परमदयालु और कृपालु है। तात्पर्य यह है कि, जिस नामसे उसका स्मरण करे उसी नामसे वह प्रसन्न होजाता है ॥ १९ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर २०.

एक मौलवी साहिब किसी ग्राममें संध्याके समयमें जा निकले वह ग्राम सब मुसलमानोंका था मौलवीने उन लोगोंसे पूछा तुम लोग रोजे रखतेहो और निमाज पढतेहो? उन्होंने कहा हमतो रोजोंको और निमाजको जानतेही नहीं हैं वह रोजे कितने हैं और कब आते हैं। मौलवीने कहा निमाज तो दिनमें पांच दफा होती है और रोजे तीस हैं वह चांद निकलेपर आते हैं। उन्होंने कहा अब जो चांद निकलेगा तब उनको हम जरूर रखेंगे। मौलवी साहिब तो रात्रिभर उस ग्राममें रहकर सबेरे चलेगये और वह लोग चांदकी इन्तजारी करने लगे जब चांद निकला तब उन्होंने आपसमें मिलकर सलाह की, चलो रोजाको कहींसे खोज-करके लावें। क्योंकि मौलवी साहिब कहगये हैं वह चांद निकलेपर आते हैं सो चांद तो अब निकल आया वह रोजे भी आते होंगे। ऐसी सलाहकरके पांचसौ आदमी लट्ठोंको लेकर जंगलमें रोजोंको खोजनेके लिये निकले। दैवयोगसे एक काफला चला आता था उसमें पूरे तीसही ऊंटथे उनको देखकर उन्होंने जान लिया येही रोजे आते हैं। इनको रखलेना चाहिये वह सब काफलापर टूटपडे और

उंटोंको छीनने लगे। काफलेवाले देवें नहीं आखिरमें बडी लढ चली दस पांच आदमी दोनों तरफके मारे गये बहुतसे घायल हुए मगर उन ऊटोंको काफलेवालोंसे ग्रामवालोंने छीन लिया क्योंकि काफलावाले थोडे थे उन्हें लाकर ग्राममें एक बडे कोठेके अन्दर उनको बन्द करदिया। दूसरे दिन दैवयोगसे वह मौलवीभी उसी ग्राममें आ निकले तब मौलवीने पूछा क्यों भाई। रोजे रखते हो निमाज पढते हो? उन्होंने कहा हजूर! रोजे तो हमको बडी मुश्किलसे मिले हैं बडी सख्त लडाई हुई जिसमें हमारे दसपांच आदमी मर भी गये और बहुतसे जखमी भी होगये हैं, तबभी रोजोंको तो हमने रखलिया है मगर निमाजको हम नहीं रख सकेंगे। उनकी इस वातको सुनकर मौलवी अपने मनमें कहता है यह तो बडे मूर्ख हैं न मालूम कौन चीजको इन्होंने रोजे समझ करके रख लिया है! मौलवीने कहा वह हमको दिखलावो मौलवीको लेकर उसी कोठेमें गये जिसमें तीस ऊटोंको उन्होंने बन्द करके रखा था जाकर मौलवीसे कहा देखिये। येही तीस रोजे हैं, इन्हींके लानेमें हमारा बडा नुकसान हुआ। ऊटोंको देखकर मौलवी साहिब तो लाहौल विल्ला करके भागे तब वह कहते हैं मौलवी साहिब! भागिये मत इनके दो बच्चेभी लाहोल और बिल्ला हैं उनको हमने हिफाजतसे रखा है। उनकी इस बातको सुनकर मौलवी तो ऐसे भागे जो चार कोसपर आकर उन्होंने दम लिया। यह तो दृष्टांत है।

दार्ष्टान्तमें महात्मा लोग जो कहीं २ ईश्वरकी भक्ति करनेका लोगोंको उपदेश करते हैं तब मूर्ख लोग ऐसे जानलेते हैं वह ईश्वर कहीं पहाडमें या समुद्रके किनारेपर बैठा होगा चलो उसको खोजैं। वह ऐसे जानकर पर्वतोंमें और समुद्रके किनारेपर जानकर परमेश्वरको खोजते हैं और वहांपर जाकर जलको या पाषाणको ईश्वर मानकर पूजते हैं, क्योंकि उनकी बुद्धि सूक्ष्म पदार्थके ग्रहण करनेमें समर्थ नहीं है। इसीपर श्रुतिभी कहती हैः– "दूरात्सुदूरे तदिहांतिके च" अज्ञानी मूर्खोंको वह परमात्मा दूरसेभी दूर प्रतीत होता है और ज्ञानवानोंको अतिसमीप प्रतीत होता है, क्योंकि उनका अपना आप है ॥ २० ॥

## दृष्टान्त नकली भक्तपर २१.

किसी रिसालेमें एक सिक्ख नौकर था, सबलोग उसको भक्तजी २ कहते थे, क्योंकि वह सबेरे उठकर बाणीका पाठ नित्यही करता था मगर पडोसवाले सवारके घोडेका दाना और घास उठाकर नित्यही अपने घोडेके आगे डालदेता था। इसीसे उस दूसरे सवारका घोडा दिनबदिन दुर्बल होता जाता था। घोडेको दुर्बल देखकर एक दिन रात्रिको वह सवार ऊपरसे सोयेकी तरह और भीतरसे जागता रहा। जब सिक्ख अपने वक्तपर उठकर बाणीका पाठ करने लगा और दूसरेके घोडेका घास दाना उठाकर जिस कालमें वह अपने घोडेके आगे डालने लगा उस कालमें उसने यह तुक पढी "हे मन

मेरिया इस जगमें आकरके तुछ कर्म कमाया " तब वह दूसरा सिक्ख बोल उठा " मेरा उठाकर अपने कि आगे पाया यह तुम कर्म कमाया "। ऐसे ठग भक्तोंकी भक्ति निष्फल है ॥ २१ ॥

## दृष्टान्त नकलीभक्तपर २२.

किसी नगरमें एक बनियां नित्यही एक मंदिरमें कथा सुननेके लिये जाता था। एक दिन वह कथा सुननेके लिये गया था और उसका लडका पीछे दूकानपर बैठा था कि इतनेमें एक आदमीने आकरके कहा तुम्हारे पिता कहां हैं ? हमें कुछ आटा दाल वगैरह खरीदना है। उसने कहा हमारे पिता कथा सुननेको गये हैं ग्राहकने कहा तुम जल्दी अपने पिताको बुलालाओ वह लडका मंदिरमें गया और कथामें जाकर बापके कानमें उसने कहा एक ग्राहक आपको बुलाता है। बापने कहा तू दूकानपर चल हम अभी आते हैं। लडकेने ग्राहकसे कहा वह अभी आते हैं। थोडी देरके पीछे ग्राहकने फिर लडकेको भेजा, फिर उसने इसी तरह बापके कानमें कहा। बापने कहा पंडित रोज तो थोडीसी कथा करता था। आज इसने लंबा राम घाणा छोडा है तू चल मैं आता हूँ, लडकेने आकर फिर उससे कहा अभी आते हैं थोडी देरके पीछे उसने फिर लडकेको भेजा और कहा उनसे कहो जल्दी आवें वरना मैं दूसरी जगहसे सौदा लेलूंगा। फिर लडकेने जाकर बापके

कानमें सन्देसा कहा, बापने दस पांच गाली पंडितजीको दीं और लडकेसे कहा तू चल मैं अभी आता हूँ। उस कालमें यह कथा हो रहीथी। ऊधोके प्रति श्रीकृष्ण भगवान् उपदेश कर रहेथे, उद्धव! संसारमें मैंही व्यापक हूं और सर्वमें तू मुझकोही देख। मैं एकही सर्वमें व्यापक रूप होकर विद्यमान हूं मेरेसे भिन्न दूसरा कोई नहीं है, एकही आत्मा सर्वमें पूर्णरूपसे विद्यमान हैं। इतनी कथा लडकेके कानमें पडी; लडका उसका विचार करता हुआ दूकानपर चला आया। इतनेमें एक गैयाने आकर उसकी टोकरीमें खानेको मुख डाला और अनाजको खाने लगी तब लडकेने मनमें विचार किया, हटायें किसको? हटाना तो बनता नहीं। क्योंकि हमारा और इसका आत्मा एक है। ऐसा विचार करते २ उसकी वृत्ति आत्माकार होगई। इतनेमें उसका बापभी कथा सुनकर पहुँचा और दूरसे उसने देखा, गैया खारही है और लडका देखरहा है। दूरसे गाली देनेलगा और समीप आकर उसने एक लाठी जोरसे गैयाकी पीठ पर मारी, गैया तो रंभाकर भागगई और लडका चिल्लाकर कहने लगा, हा लाला तुमने हमको मारदिया तब बापने कहा— हमने तो गैयाको मारा है तू क्यों चिल्लाता है। लडकेने कुडता उतारकर जो अपनी पीठको बापके प्रति दिखाया तब लडकेकी पीठपर लाठीकी चोटका दाग पडगया था। बापने कहा हमने तो गैयाको मारा है तुम्हारी पीठपर कैसे दाग पड-

गया है ? लडकेने कहा आजही कथामें मैंने सुना था जो संपूर्ण जीवोंमें आत्मा एकही सो मैं इसी विचारमें था और मेरे आत्माके साथ गैयाके आत्माकी एकता होरही थी। इसीसे मेरी भी पीठपर चोटलगां। बापने कहा अरे बेवकूफ! वहांकी कथाको वहांपरही छोड आते हैं कोई साथ थोडे बांधकर लेआते हैं ? तू तो अपने साथही बांधकर ले आया। बस इतना सुनकर लडका तो चलदिया। तात्पर्य यह है बहुतसे लोग तो वहांकी कथाको वहां परही छोडकर घरको चलेआते हैं उनको कुछ भी फल नहीं होता है, वह भक्ताभास है उनकी दिखलानेकी भक्ति है ॥ २२ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर २३.

एक बनिया बडा धनी था और संसारी सब कामोंमें निपुणभी था परन्तु परमेश्वरकी भक्तिसे वह विमुख था और उसकी स्त्री भजन बहुत करती थी और अपने पतिको भी भजन करनेका नित्यप्रति उपदेश करती थी और जब २ वह पतिको भजनका उपदेश करे तब उसका पति यह कहदे कि, कुछ जल्दी नहीं है करलेवेंगे। दैवयोगसे एक दिन वह बनियां बीमार होगया तब उसने स्त्रीसे कहा वैद्यको बुलावो। उसकी स्त्रीने वैद्यको बुलाया, वैद्यने बनियांका हाथ देखकर दवाई लिखदी। स्त्रीने दवाईको मँगाकर भीतर धर दिया। जब दो तीन घंटे व्यतीत होगये तब बनियांने पूँछा दवाई आई है ? स्त्रीने कहा आई है। कहा कहां है ?

स्त्रीने कहारूमालमें बँधी भीतर रखी है । उसने कहा फिर मुझको दवाई क्यों नहीं पिलाती है ? स्त्रीने कहा कोई जल्दी है ? आज न कल परसों चौथको दीजावेगी बनियांने कहा अगर कल परसों तक मैं मर गया तब फिरदवाई किस कामअवेगी ? स्त्रीने कहा आप कहते हैं भजन करनेकी कोई जल्दी नहीं है यदि आप मरगये तब भजन कैसे करोगे? दवाईके लिये जैसे आप जल्दी करते हैं भजनके लिये भी आप जल्दी करें। तब मैं अभी आपको दवाई पिलादूं । बनियांके मनमें भी बात बैठ गई । स्त्रीने दवाईको पिलादिया वह अच्छा होकर परमेश्वरपरायण होगया और नित्यही भजन करने लगा ॥ २३ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर २४.

सरकार बहादुरने एक देशसे दूसरे देशमें और एक नगरसे दूसरे नगरतक लोगोंको पहुँचानेके लिये रेल बनादी है और उसमें चार दरजे भी रखदिये हैं जैसा२कोई रुपैया खर्च करता है सरकार उसको वैसे २ ही आरामदारीके दरजामें बैठा कर वहांको भेजदेती है । इसी प्रकार परलोकमें जानेके लिये परमेश्वरने भक्तिरूपी रेलगाडीको बनादिया है और उसमें उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ, अति कनिष्ठ चार दरजे बना दिये हैं जैसा जो प्रेम करता है वैसा उसको सुख भी मिलजाता है ॥ २४ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर २५.

किसी नगरका राजा एक दिन जंगलमें सैर करनेके लिये गया, तब वहांपर एक महात्माके पास एक कूकरको बैठा हुआ देखा। राजाने उनसे पूछा महाराज। कुत्ता अच्छा है कि, मनुष्य अच्छा है? महात्माने कहा—राजा और फकीर जो परमेश्वरके हुकुमको नहीं मानते हैं उन दोनोंसे कुत्ता अच्छा है। क्योंकि यह अपने मालिकका हुकुम तो मानता है। राजा चुप हो गये ॥ २५ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर २६.

दो ब्राह्मणोंके लडके प्रयागराजके मेलापर गये, दोनों बडे सुन्दर और जवान थे। जब वे नगरमें पहुँचे तब एक पर मोहित होकर वेश्याने उसको रास्तामेंही पकड लिया और अपने घरमें लेगई और रात्रिभर उसके साथ भोग विलासको करती रही। परंन्तु उसके मनमें ऐसी चिंता बनी रही, मैं अभागा हूँ, जो तीर्थमें आकर ऐसे कुकर्ममें फँस गया हूँ और उसका संगी त्रिवेणी जाकर रात्रिभर बेनीमाधोका पूजन करता रहा, परन्तु उसके मनमें ऐसी चिंता बनी रही, मेरा मित्र तो वेश्याके साथ आनंदको करता होगा। दोनोंका जब कि शरीर छूटा तब वेश्यावालेको विष्णुके दूत लेगये और दूसरेको यमके दूत लेगये। तात्पर्य यह है जिसका मन

जिसमें लगा रहता है वह मरकर उसीके पास जाता है, इसलिये परमेश्वरमेंही मनको लगाना चाहिये ॥ २६ ॥

## दृष्टान्त भक्तिपर २७.

महाभारतका जब युद्ध समाप्त हुआ और राजा युधिष्ठिरको श्रीकृष्णभगवान् राजसिंहासनपर बैठाने लगे तब युधिष्ठिरने कहा, मैं राज नहीं करूंगा, किंतु तप करूंगा क्योंकि, राज अनेक अनार्थोंका कारण है। भगवान्ने कहा पहले आप राजको करिये पीछे तपको करना क्योंकि अब कलियुगका प्रवेश होजायगा और फिर तुमसे राज करते नहीं बनेगा। अगर आप इस वार्ताको न मानो तो इसकी परीक्षाके लिये तुम पांचों दिशाकी तरफ को जाओ और जो २ देखा सो आकर हमारेसे कहो और हम उसके फलको तुम्हारे प्रति कहेंगे। कृष्णजीकी आज्ञा मानकर पाँचों भाई पाँचों दिशाओंमें गये, युधिष्ठिर एक वनमें जाकर क्या देखते हैं सामनेसे एक हाथी दो सूडोंवाला आरहा है और अर्जुनने एक वनमें पक्षीको देखा जिसके परोंपर सब वेद और शास्त्र लिखे हैं और वह पक्षी एक मुरदेको खारहा है और भीमसेनने एक जंगलमें जाकर देखा, एक गैया ब्याई है मगर अपनी बछियाको चुग रहीहै। नकुलने किसी वनमें जाकर तीन कूपोंको देखा, बीचका कूप सूखा है और आसपासवालोंके पानी एक दूसरेमें जा रहे हैं। सहदेव किसी पर्वतके समीपमें जाकर क्या देखते हैं कि पर्वतके शिखरपरसे एक बडा भारी पत्थर गिरा

और वह रास्ते के वृक्षोंको तोडता हुवा एक घासके तृणके सहारेपर आकर ठहर गया। पांचोंने अपना २ समाचार भगवान्से आकर कहा। कृष्णजी उनकी देखी हुई बातोंके फलोंको बताते हैं। भगवान् कहते हैं जो कि दो सुंडोंवाला हाथी था सो कलियुगके हाकिम दो मुखवाले होवैंगे, मुद्दई और मुद्दालेह दोनोंसे रिश्वतको खाया करेंगे। और जो पक्षी था उससे यह मालूम होता है जो कलिके पंडित वेदशास्त्रको पढकर मरोंका और नीचोंका दान लेकर खाया करेंगे। और गैयासे यह मतलब है कि कलिमें लोग लडकियोंका ाल खावैंगे और जो कूप था उसका यह तात्पर्य है कि कलिके धनी लोग अपने गरीब भाइयोंको छोडकर दूसरोंसे मैत्री करेंगे और जो पत्थर पहाडका तृणके सहारेपर अटका था वही मानो धर्म था, क्योंकि संसाररूपी पर्वतसे गिरकर केवल परमेश्वरके नामरूपी तृणको आश्रयण कर स्थित रहेगा परमेश्वर का नामही कलिमें लोगोंको संसारसमुद्रसे तारेगा। हे युधिष्ठिर ! ऐसे कलिके आनेसे पहले तुम राजको करो पश्चात् नामको आश्रयण करके तप करना ॥ २७ ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामि–हंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्या-धरेण पेशावरनगरनिवासिना विरचितदृष्टान्तमञ्जूषा-नामकग्रन्थे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

---

## तृतीयोऽध्यायः

संसारमें इस वार्ताको सब कोई जानता है कि जो संसारका संपूर्ण व्यवहार काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार इनकेही आश्रयसे चलता है। अगर इनको ईश्वर न बनाता तब संसारभी न होता किंतु इनके होनेसेही संसार है और इनके न रहनेसे पुरुष मुक्त हो जाता है अर्थात् बन्धनका मूल कारण येही पांच हैं इसलिये इन्हीं के दृष्टांतोंको प्रथम दिखाते हैंः—

### दृष्टांत कामपर १.

किसी जंगलमें बनका राजा एक सिंह रहता था और स्यार उसका मंत्री था। जब वह सिंह अतिबूढा हो गया। और उसमें चलने फिरनेकी सामर्थ्य न रही, तब एक दिन सिंहने अपने मंत्री स्यारसे कहा मैं बडा भूखा हूं मेरी भूखकी निवृत्तिका तू कोई उपाय कर। स्यारने कहा—राजन्। मैं अभी किसी मोटे ताजे शिकारको आपके वास्ते लाता हूं। ऐसा कह स्यार शिकारकी खोजमें निकला और जाते २ ग्रामके समीप उसने एक गधेको चरते देखा, तब स्यारने गधेसे कहा-तुम क्यों यहां पर अपनी आयुको व्यर्थ व्यतीत करते हो! चलो हमारे साथ जंगलमें एक वरप्राप्ति गधी है उसके साथ मैं तुम्हारी शादीको करा दूं। गधा प्रसन्न होकर उसके साथ

चलपडा। जब कि, सिंहके सामने गया और सिंह उसके खानेको उठा, त्योंही गधा भागा, स्यारने सिंहसे कहा-आप जल्दी न करिये, जब वह आपके काबूमें आजाय तब उठकर उसको मार खा जाइये। फिर स्यार गधेके पास गया और गधेसे कहने लगा तुम क्यों भागे, वह गधी तो तुम्हारी खातिरदारी करनेके लिये उठी थी, वह जंगलकी विलक्षण मूर्तिवाली युवा अवस्थापन तुमको बुलाती है चलो देर मत करो। स्यारके पेचमें आकर फिर गधा चलपडा, ज्योंही सिंहके पास जाकर आरूढ होने लगा त्योंही सिंहने उसका शिकार कर लिया। सारांश-कामातुर पुरुष इसी प्रकार कामके वशमें प्राप्त होकर मर जाते हैं॥ १॥

## दृष्टांत कामातुरपर २.

एक सेठ कामातुर जो कुछ कमाता सब स्त्रीकीही सेवामें खर्च करता, और किसी महात्मा वगैरहकी सेवामें कुछभी खर्च न करता, बल्कि अपने गुरुकोभी कभी कुछ न देता। गुरुभी आकर उसके द्वारसे खालीही लौट जाता। एक दिन गुरुने सेठकी स्त्रीसे अपने खाली लौट जानेका हाल कहा, तब उसने अपनी स्वर्णकी दस तोलाकी नथ उतारकर उस गुरुको देदी और विना रसोईके चिंतातुर होकर बैठरही। सेठ जब, घर आये और स्त्रीको चिंतातुर देख करके पूँछा, उसने कहा मेरी नथ आज नदीमें गिरगई है। उसीका हमको शोक है। सेठने कहा-अभी मैं आगेसे भी बडी नथ बनाकर तुम्हारे

वास्ते लाता हूं, तुम शोक मत करो, उठो जल्दी रसोई बनाओ। सेठ तुरंत बारह तोलाकी नथ बनाकर लाया। कामातुर पुरुष स्त्रीकोही गुरु देवता ईश्वररूपकर मानते हैं वेही बार २ जन्ममरण रूपी संसारको प्राप्त होते हैं॥ २॥

## दृष्टांत क्रोधपर ३.

कामसे क्रोध बली है, क्योंकि कैसाभी कामातुर पुरुष हो किसीके सन्मुख स्त्रीके साथ संभोगको नहीं करता है। परंतु क्रोध बली है, सैकडों पुरुषोंके बीचमेंही माता पिता और गुरु आदिकोंका तिरस्कार कर देता है, बल्कि क्रोधमें आकर माता पिता आदिकोंको मारभी बैठता है। रावणने क्रोधमें आकर विभीषणकी छातीमें लात मारी थी, बाली अपने भ्राता सुग्रीवको मारने दौडा था; परशुरामने क्रोधके वशमें होकर लाखों क्षत्रियोंका वध किया था और अनेक पुरुषोंने क्रोधके वशमें होकर अनेक तरहके अनर्थोंको किया है, इसीसे सिद्ध होता है कि कामसे क्रोध बली है॥ ३॥

## दृष्टांत लोभपर ४.

क्रोधसे भी लोभ बली है, कैसा भी क्रोधी पुरुष हो जब कि किसीके साथ उसका प्रयोजन होगा तब अपने प्रयोजन सिद्धिके लिये क्रोधका त्याग कर देगा और लोभके वशमें होकर पुरुष अपनी जाति और अपने धर्मकाभी त्याग कर-देते हैं। अब लोभी पुरुषके दृष्टांतको दिखाते हैं:—

किसी वनमें एक बरगदके पेडपर बहुतसे (कबूतर) रहते थे उसमें एक लघुपतनक नामका बडा बुद्धिमान कपोत भी रहता था। एक दिन एक फंदकको जाल और चावल लिये हुए आते देखकर उस लघुपतनकने दूसरे कपोतोंसे कहा—देखो सामनेसे यमरूपको धारण किये हुए वह फंदक तुम्हारे पकडनेके लिये चला आता है जालको फैलाकर चावलोंको छीटेगा तुम चावलोंका लोभ नहीं करना वरना तुम सबके सब फँसजाओगे। कपोतोंने लघुपतनकके कथनको न माना और सबके सब कपोत उस जालेमें जाकर गिरे, लघुपतनकभी उसके साथही जाकर जालमे गिर पडा, बस सबके सब फन्दकने फँसाकर बांधलिया और लेकरके चलदिया। लोभके वशमें होकर सबके सब कपोत मारे गये। लोभ ऐसी खराब वस्तु है जिसके वशमें होकर अदालतोंमें लोग झूठी गवाहियोंको देते हैं, लोभसे मालिकके मालको भृत्य चुराते हैं, लोभसे राजा लोग अपने कुटुम्बका नाश करदेते हैं, लोभसे तीर्थोंके पंडे और साधु ब्राह्मण और बनियां बकाल हजारों झूठी कसमोंको खाते हैं इस लिये इसका त्यागही करना सर्वथा उचित है ॥ ४ ॥

## दृष्टान्त लोभपर ५.

एक कुत्ता कहींसे रोटीका टुकडा लेकर नदीके किनारेपर खानेके लिये गया आगे जलमें उसको अपनी परछांई दिखाई पडी कि कोई कुत्ता रोटी लिये जाता है। वह उस

परछांई पर कूदा जिससे उसका टुकडा भी नदीमें बह गया। खाली हाथ वह रह गया। यही हाल कभी २ लोभियोंका भी देखनेमें आता है, लोभसेही लाखों रुपया लोग जूआमें हार देते हैं ॥ ५ ॥

## दृष्टान्त मोहपर ६.

संसारमें मोह ऐसा फैला है जो तमाम जीव इससे मरे पडे हैं अर्थात् इसीके वशमें होकर अपने परलोकको बिगाड रहे हैं। इसीमें एक दृष्टान्त कहते हैंः—

एक पुरुष महात्माओंकी सेवाको करता था और एक महात्मा सालमें एकवार जरूरही उसके यहां आते थे। एक दिन महात्माने उससे कहा—अब तुम्हारी आयु बडी हो गई और पुत्र पौत्र परिवार भी तुम्हारा बहुतसा होगया है और विषयजन्य सुखको भी तुमने भोग लिया है अब हमारे साथ चलकर कुछ काल तपस्याको करो जो तुम्हारा जन्म सुफल होजाय। उसने कहा अभी लडके सयाने नहीं हैं, जब यह सयाने होजायँगे तब मैं चलूंगा। क्यों कि बिना मेरे इनका काम नहीं चलेगा, महात्मा चले गये। कुछ कालके पीछे फिर आये, तब वह मरगया था। महात्माने समाधीके बलसे जो देखा तब मालूम हुआ कि वह बछराके जन्ममें होकर घरके द्वारपर बँधा है। महात्माने कहा—अब तो चल! उसने कहा—मेरे बिना इनका काम

नहीं चलेगा। क्योंकि दूसरा बैल इनका बूढा होगया है। माहात्मा चले गये और कुछ कालके पीछे आकर जो देखा तब वह कूकरके जन्ममें होकर उनके द्वारके सामने बैठा था, महात्माने कहा अब तो चल! उसने कहा अगर मैं चला जाऊँगा तब सब धन इनका चोर लूटकर ले जायँगे, मैं इनका पाहरा देता हूँ। मोह ऐसा बंधनका हेतु है जो अनेक जन्मोंमें भी नहीं छूटता है ॥ ६ ॥

## दृष्टान्त अहंकारपर ७.

किसी ग्रामसे बहुतसे जमींदार प्रयागराजके मेलापर जब जाने लगे, तब उनके ग्रामके चमारने कहा मैं भी आप लोगोंके साथ प्रयागपर स्नान करनेको चलूंगा, उन्होंने कहा अच्छा तू भी चल। वहभी उनके साथ प्रयागराजमें गया। जब त्रिवेणीका सब कोई स्नान कर चुके तब पंडा उनको अक्षयवटके नीचे लेगया और सबसे पंडेने कहा एक २ वस्तुको छोड देना चाहिये। सो सबने एक २ वस्तुका त्याग कर दिया। चमारने कहा—मैं भी आजसे बोझा ढोनेका त्याग कर देता हूँ ऐसा कहकर उसने बोझाका ढोना छोड दिया और सब लोग अपने ग्राममें चले आये, थोडेही दिनों पीछे बोझा ढोनेवालों पर बेगार पडी, तब सिपाहीने आकर उस चमारको भी पकडा, चमारने कहा—भाई मैं तो तीर्थपर बोझाका ढोना छोड आया हूँ, सिपाही इस बातको, कब माने तब चमारने कहा—चलो तुमको जमींदारोंसे मैं पुछवा दूं ? चमार

सिपाही को साथ लेकर जमींदारोंके पास जाकर कहने लगा- मैं प्रयागमें आपलोगोंके सामने अक्षयवटके नीचे बोझाका ढोना छोड आया हूं फिर यह मेरेको क्यों बेगारी पकडता है? जिमींदारोंने कहा बोझाका ढोना तो तुमने छोड दिया है परंतु चमारपनेको तो तुमने नहीं छोडा है ? जबतक तुम्हारेमें चमारपनेका अभिमान बना रहेगा, तबतक तुम बीगारी पकडे ही जाओगे । यह तो दृष्टांत है, दार्ष्टांतमें जबतक पुरुषोंमें इस चर्मरूपी शरीरका अहंकार बना है मैं ब्राह्मण हूँ, मैं क्षत्रिय हूँ मैं वैश्य हूँ, तबतक वह चमारपना उसका नहीं छूटता है अर्थात् वह जन्ममरणरूपी बंधनसे कदापि छूट नहीं सकता है । हमारे इस देशमें आजकल कर्म तो निज २ वर्णके नहीं रहे हैं परन्तु चमाररूपी अहंकार सबके अंदर बराबर धँसा है इसीसे दिन बदिन देशकी अधोगति होती चली जाती है ॥ ७ ॥

संपूर्ण वेद और शास्त्रोंका यही सिद्धांत है कि मनुष्यको सदैवकाल अपने धर्म परही आरूढ होना चाहिये क्योंकि धर्मही पुरुषका दोनों लोकोंमें सहायक होता है और धर्म नाम सत्यपर आरूढ होनेका है और सत्य भाषणादिक गुणोंके धारण करनेका है, इसी वास्ते धर्मादिकोंके दृष्टांतोंको अब दिखाते हैं ।

## दृष्टान्त धर्मपर ८.

किसी ग्राममें तीन भाई ब्राह्मण रहते थे दो बडे थे और तीसरा उनसे छोटा था परंतु अपने धर्मपर वही छोटा आरूढ

रहता था और अभी नई अवस्थावाला और बडा सुन्दर भी था । एक दिन उसके दोनों बडे भाई किसी कामके लिये दूसरे ग्राममें गये थे पीछे घरमें दोनोंकी स्त्रियें और वह छोटा भाईही था उसकी दोनों भौंजाइयोंका चित्त उसके ऊपर चलायमान हो गया तब कामके वशमें होकर उन दोनोंने उसी अपने देवरसे व्यभिचार कर्म करनेको कहा उसने इस वार्ताको स्वीकार न किया, तब उन दोनोंने कहा हम तुम्हें समझैंगी जब तीसरे दिन उनके पति अपने घरमें आये तब उन्होंने अपने पतियोंसे कहा–तुम्हारे पीछे हमको घरमें अकेला जानकर तुम्हारा छोटा भाई हम दोनोंको ख-राब करना चाहता था, मगर हमने इस वार्ताको स्वीकार नहीं किया और बडी कठिनतासे अपनेको अधर्मसे बचाया, स्त्रियोंकी इस वार्ताको सुनकर भाइयोंको बहुत ही बुरा मालू-म हुआ, उन्होंने उसके मारनेका उपाय सोचा । उनके खेतमें एक बडा भारी बिल था और उसमें एक भयानक सांप रहता था, सो भाइयोंने उससे कहा खेतमें एक बिल है उसको कुदालसे खोदकर बराबर कर आओ भाइयोंकी इस वार्ताको सुनकर वह कुदालीको लेकर खेतकी तरफ चला । रास्तामें उसका एक मित्र मिला उसने पूँछा–कहाँको जावे-हो? ब्राह्मणने खेतपर जाकर बिलके जूंद करनेके हालको कहा–तब उसके मित्रने उससे कहा–उस बिलमें तो एक भयंकर काला साँप रहता है । उस बिलको मत खोदना ।

ब्राह्मणने कहा—बडे भाइयोंकी आज्ञाको मैं नहीं फिरा सकता हूं। ऐसे कहकर वह खेतपर जाकर उसी बिलको खोदने लगा थोडासा खोदने पर उसी बिलसे उसको अशरफियोंकी भरी हुई एक हांडी मिलगई और साँपका नाम मात्रभी उसको उसमें नहीं दीखा। उस बिलको बंद कर और उस हांडीको लेकर वह अपने घरमें चला आया और अपने मनमें उसने विचार किया, आज तो धर्मने हमारी रक्षाभी की और हमको द्रव्य भी मिलगया है। अब अपना विवाह कर अलग रहना चाहिये, उसने थोडेही दिनोंमें अपना विवाह करलिया और भाइयोंसे अलग मकानमें जारहा। इसी तरह जो पुरुष अपने धर्मपर आरूढ होता है धर्म उसकी इसी जन्ममें सहायता करता है ॥ ८ ॥

## दृष्टान्त दानपर ९.

मनुष्योंके कल्याणके अनेक साधन शास्त्रोंमें लिखे हैं तब भी सब साधनोंमेंसे बडा साधन दानही है। जिस वस्तुकी जिसको जरूरत हो उसके प्रति उस वस्तुको देकर उसकी जरूरतको पूरा करदेना इसीका नाम दान है। जैसे कि, भूखोंको अन्न, प्यासेको जल, बीमारको औषधी, बालकको विद्या, नंगेको वस्त्रादिकोंके देनेसे हो फिर पुरुषको वह हजारों गुणा होकर मिलता है। परन्तु इसमें अधिकारीका विचार जरूर करलेना चाहिये, जैसे कि उत्तम भूमिमें बीज बोया हुआ अनेक गुणा होकर अधिक उत्पन्न होता है इसी तरह शमदमादिक साधनों-

करके युक्त अधिकारीके प्रति दिया हुआ दान भी अनेक गुणा हो जाता है । और ऊसर भूमिमें बोया हुआ बीज भी सडजाता है । इसी प्रकार अनधिकारीके प्रति दिया हुआ दान भी सड जाता है । इसीवास्ते अधिकारीका विचार अवश्य करना चाहिये ॥ ९ ॥

## दृष्टांत दानके अधिकारीपर १०.

किसी नगरके बाहर वनमें एक विद्वान महात्मा रहते थे, एक दिन उस नगरका राजा वनमें गया तब महात्माके पास बैठकर राजाने थोडी देर तक बात चीत कर कुछ लाभ उठाया, तब राजाकी उनके ऊपर बडी श्रद्धा होगई, मन्त्रीसे राजाने कहा इनको नगरमें लेचलो । वजीरने पालकीपर उनको सवार कर नगरमें लाकर राजाके बागमें बँगलेमें ठहरादिया और उनका खानपानका सब सामान ठीक २ करदिया । अब उनके पास लोग आने लगे और कथा वगैरहका सत्संग होने लगा । दो तीन दिनके पीछे राजा और मंत्री दोनों उनके दर्शनको गये तब क्या देखते हैं आगे बहुतसे लोगोंकी भीड़ लगी है और सत्संग होरहा है और जो कुछ पूजा भेंट चढती है उसको गरीबोंके प्रति महात्मा लुटा रहे हैं । इस वार्ताको देखकर राजा बड़े प्रसन्न हुए तब मंत्रीने राजासे कहा राजन् ! उदारचित्तवाले विद्वान महात्माओंके प्रति दानको दीजिये ताकि वह विद्याको फैलावें और लोगोंको धर्मका उपदेश करें और गरीबों पर द्रव्यको

लुटावैं उनको ऐसे करते औरोंकोभी विद्या आदिक गुणोंकी उन्नतिके करनेका उत्साह होगा और जो विरक्त निरक्षर या साक्षर महात्मा हैं उनके प्रति द्रव्यको मत दीजिये ताकि वह तपस्याको करें क्योंकि अधिकारियोंके प्रतिही दानका देना उत्तम होता है और जो कृपण विद्वान् हैं या जो दाम्भिक हैं उनके प्रति भी दानको मत दीजिये और जो कुकर्मी या वाममार्गादिक भ्रष्टमार्गोंमें प्रवृत्त हैं वे सब दानके अधिकारी नहीं हैं, उनके प्रतिभी दानको मत दीजिये क्योंकि वे दानके अधिकारी नहीं हैं । राजाने कहा ठीक है ॥ १० ॥

अधिकारीके प्रति दान देनेसे तुरन्तही उसका फलभी मिलजाता है । अब इसी बातपर दृष्टान्तको कहते हैं:—

## दृष्टान्त दानपर ११.

पंजाब देशके किसी ग्राममें एक गरीब स्त्री रहती थी । उसके पास कुछभी नहीं था और न वह किसीसे मांगनेकोही जाती थी । एक दिन उसको एक आदमी चार रोटी बडी मोटी २ देगया और उसी समयमें एक अतिथिभी उसके द्वारपर आ निकला । उसने उन चारों रोटियोंको उसी अतिथिके प्रति देदिया और आप वह उस दिन भूखीही रहगई । दूसरे दिन उसी ग्रामके जमीदारके घरमें कुछ उत्सव था उसने एक स्त्रीके हाथसे चालीस रोटी उसको भेजी, आगे उस स्त्रीने उनमेंसे बीस रोटी चुराकर अपने घरमें रखलीं

और बीस उसको जाकर देनेलगी, तब उसने उससे कहा बीस और कहां हैं ! चालीस तुमको महाजनने दी हैं । उसने कहा—यह वार्ता ठीक है महाजनने चालीस दी हैं मगर तुमने इस बातको कैसे जान लिया? उस वक्त स्त्रीने कहा—यह तो सहज बात है। एक देनेसे दसगुण मिलता है। मैंने कल चार रोटी दान की थीं उसका बदला हमको चालीस मिलनी चाहिये, क्योंकि दादर दुनियां सत्तर दर आखिर। यह कहावत भी मशहूर है । मैंने इसीसे जानलिया है उस स्त्रीने बाकीकी भी उसको लाकर देदी उसने उसीको वह दान करदी । दान ऐसी चीज है जो कि इसी लोकमें सद्यः फलकोभी देता है ॥ ११ ॥

## दृष्टांत दानपर १२.

किसी गरीब सतसंगके घरमें चार महात्मा आ निकले । उसके पास एकही रुपया था, उसको लेकर वह बाजारसे अन्न लेनेको चला, वह रुपया रास्तामें गिर पडा वह खोजने लगा इतनेमें एकने उससे पूँछा—क्या खोजता है ? तब उसने अपना हाल कहा और कहा अब और तो मेरे पास कुछभी नहीं है, मैं महात्माओंको क्या खिलाऊंगा ? उसने एक अशरफी निकाल उसको देदी वह अन्न वगैरहको खरीदकर घरमें आकर उनको खिलाया और बहुतसा बच भी रहा। दानका शीघ्रही फल भी मिलजाता है ॥ १२ ॥

सब शास्त्रकारोंने अतिथिके सत्कारको परम धर्म माना है जो अतिथिके सत्कारको नहीं करता है उसको दोषी कहा है। और करनेवालेको पुण्यात्मा कहा है:-

## दृष्टांत अतिथिसत्कारपर १३.

कोई फंदक नित्यही वनमें जाकर जीवोंको मारकर खाता था। एक दिन उसको वनमें कोई भी शिकार न मिला और वनमेंही उसको रात्रि भी पडगई। तब एक वृक्षके नीचे क्षुधासे पीडित हुआ वह बैठ गया। जाडेका मौसिम था और कपडाभी उसके पास नहीं था, इसलिये वह सरदीसे कांपने लगा, जिस वृक्षके नीचे वह जाकर बैठा था, उसी वृक्षके ऊपर एक कपोत और कपोतनी रहते थे, उस फंदकको दुःखी देखकर कपोतने कपोतनीसे कहा यह हमारे घरमें अतिथि आया है इसकी खातिर करनी चाहिये। कपोतनीने कहा गृहस्थका धर्म है अतिथिसत्कार करना और हम गृहस्थ हैं इसलिये अवश्यही इसका सत्कार करना हमारा धर्म है। कपोतने उडकर कहींसे अग्निकी छोटीसी चुआतीको चोंचमें पकडकर लाकर उसके आगे फेंक दिया, फंदकने वनसे घासपात बटोर कर आगको जला दिया और तापने लगा और बहुत लकडी भी सूखी लाकर उसने जलादी। कपोतने कहा-अब इसकी क्षुधा भी निवृत्त करनी चाहिये ऐसा विचारकर कपोत उसी आगमें गिर पडा, कपोतके गिरने से कपोतनी भी तुरंतही उसी आगमें गिर पडी। फंदकने दोनोंको भूनकरके खालिया,

जब फंदकका चित्त स्थिर हुआ तब उसने विचार किया देखो। यह पक्षी थे और इन्होंने अतिथि सत्कार किया बल्कि अपने शरीरोंकाभी त्यागही कर दिया, मैं मनुष्य होकर जन्मभर इसी पाप कर्मको करता हूं धिक्कार है मेरे जीनेको। ऐसे कहकर वह भी चिता बनाकर जल गया। तीनोंको स्वर्गकी प्राप्ति हुई ॥ १३ ॥

अतिथि सत्कार सार्वभौम धर्म है, क्योंकि म्लेछ वगैरह भी इसको बडा भारी धर्म मानते हैं, इसीमें औरोंके भी दृष्टांतोंको कहते हैः-

## दृष्टांत अतिथिसत्कारपर १४.

अमेरिकामें एक इंडिया जातिवाले मनुष्य हैं वह प्रायः करके जंगलोंमें ही रहते हैं। एक दिन एक इंडिया भूखा प्यासा संध्याके समय एक ग्राममें आ निकला। उसने एक अंग्रेजके द्वारपर जाकर कहा-मैं भूखाहूं मुझको कुछ खानेको दे। अंग्रेजने उसका तिरस्कार कर दिया, तब उसने कहा और नहीं तो थोडासा पानीहो मुझको पिलादे, अंग्रेजने कहा चल इंडियन कुत्ते! वह निराश होकर वहांसे चला गया। वही अंग्रेज एक दिन शिकारको गया उसको जंगलमें संध्या पडगई, ग्राम दूर रह गया, भूला भटका दैव-योगसे उसी इंडियनके झोपडीमें जा निकला, उसने उसकी खाने पीनेसे बडी सेवा की, रात्रिभर रक्खा। सबेरे साथ

जाकर उसको रास्ता बताकर कहा-फिर किसी अतिथिको ऐसे मत कहना चल इंडियन कुत्ते ! अंग्रेज शरमिंदा हो गया और चला गया ॥ १४ ॥

काबलतीरा वगैरह पहाडोंके पठानोंमें इतर मजहबवालों-पर दयाका नाम भी नहीं है। मूरी व गाजरकी तरह मनु-ष्यको काट डालते हैं तबभी जो अतिथि किसी जाति व मजहबका भी उनके द्वारपर चला जाय तो उसके खाने पीनेका सत्कार वहभी करते हैं ! हिंदूको हिंदूके घरसे बनवा कर खिला देते हैं। जिस ग्राममें हिंदूका घर नहीं होता वह सूखा सीधा देते हैं। इसीपर उनके दृष्टांतको दिखाते हैं:-

## दृष्टांत अतिथिसत्कारपर १५.

पैंतीस वर्षोंकी यह वार्ता है। पेशावरके ग्रामीण धनी हिंदूको रात्रिके समयमें रास्तामेंसे पकडकर पठान याकीस्ता-नमें लेगये, क्यों ? ऐसी उनकी चाल ही है कि पकडकर ले जाते हैं। उसका धर्म नहीं बिगाडते हैं फिर हैसियत मुताबिक रुपया लेकर उसको आकर छोड जाते हैं। अब उस हिंदू धनीको दसबीस हजार रुपयाकी लालचसे वह पक-डकर रात्रिके समयमें ले गये और रातो रातही उसको सर-कारकी हदसे उन्होंने निकालकर याकीस्तानमें पहुँचा दिया और वहांसे चौथे या तीसरे रोज तीराके किसी ग्राममें ले जाकर अपने घरमें उसको उन्होंने कैद कर दिया। वहांपर

पहाडोंके ऊपर उनके ग्राम हैं और हर एक ग्रामके गिरदे किला बनी है । उसी किलाके अन्दर उन लोगोंके घर हैं उन्ही घरोंमें वह रहते हैं और हर एक आदमीके पास सब हथियार रहते हैं । अब इधर उसके संबंधियोंकोभी खबर मिली जो वह पकडा गया है और बहुतसा रुपया मांगते हैं । उधर वह हिंदू कैदी भी बडी चिंतामें डूबा हुआ रात्रि-दिन अपने छूटनेके उपायके फिकरमें लगा और पठानोंके बसलोंको भी वह जानता था क्योंकि वह भी पठानोंमें रहनेवाला था । जिस घरमें वह कैद था उस घरके पठान भी दिनभर बाहर चले जायँ । रात्रिको घरमें आवें और वह हिंदू उनकी स्त्रियोंमें कोठेके अन्दर बैठा रहे अगरचे पठानोंमें सत्तर याने परदा है; परंतु हिंदूसे सत्तर नहीं करते हैं क्योंकि हिंदूको तो वह मरद जानतेही नहीं हैं । एक दिन संध्याके समयमें जब थोडासा अँधेरा हो गया और पठानोंकी स्त्रियें सब अपने रोटी पानीके काममें लग गईं, तब वह हिंदू धीरेसे मकानके बाहर निकलकर किलासे बाहर होकर पहाडके नीचे उतरकर सामने दूसरे पहाडके ऊपर एक ग्राम था, उसमें दौडकर एक पठानके दरवाजेको उसने हिलाया । भीतरकी स्त्रियोंने पूँछा तू कौन है ? उसने कहा मैं तुम्हारा आतिथि हिंदू हूँ, जल्दी दरवाजा खोलकर मेरेको बचाओ । हिन्दू पशतो बोलीको खूब जानता था । स्त्रियोंने झटपट दरवाजा खोलकर उसे अन्दर लेलिया और

बिठलाया, वह हिंदू कांपता था, डरके मारे पठानियोंने कहा—डरो मत ! अब हमारे घरसे कोई भी तुमको पकडकर नहीं लेजासकता है, अभी उनकाभी मरद कोई घरमें नहीं आया था, थोडी देर पीछे उनके मरद जो घरमें आये और हिन्दूको बैठा हुआ उन्होंने देखा—तब स्त्रियोंसे पूछा यह कौन है ? उन्होंने कहा यह आतिथि हैं । फलाने किलासे भागकर तुम्हारी शरणमें आया है । इस बातको सुनकर उनके मरदोंने हिंदूसे सब हाल पूछकर उसको बहुतसा दिलासा दिया और कहा जहां तुम कहोगे वहां पर तुमको पहुँचा देवेंगे, जहांसे वह भागकर आया था, वह लोग जब घरमें आये और सुना कि हिन्दू भाग गया है । बस वह लोग बन्दूकें लेकर पहाडमें उसको तलाश करने लगे और रात्रिभर पहाडमें घूमते रहें और बन्दूकोंको चलाते रहे, सबेरे मालूम होगया कि हिन्दू फलाने किलेमें फलानेके घरमें है, अब इधर हिन्दूसे सबेरे पठानोंने कहा काबुलवालेका राज यहांसे एक दिनका रास्ता है और पेशावर चार दिनका रास्ता है, जहां तुम कहो वहां तुमको हम पहुँचादें, हिंदूने कहा आजका दिन ठहरो कल हमको काबुलवालेके राजमें पहुँचा देना । उस वक्त शेरलीखान काबुलकी गद्दीपर था । दूसरे दिन हिंदूने कहा—रात्रिको हमको ले चलना जो कोई देखे नहीं । पठानोंने कहा—क्या हम नामर्द चोर हैं जो तुमको रात्रिमें लेजायँ ! हम तुमको दिनमें उनके सामनेसे ले

जाँयगे, तब कोई तुमको हमसे ले जायगा जब हमारे तमाम ग्रामको कतल कर लेगा ! इतना कहकर उन पठानोंने सब हथियार याने बंदूक तलवार बगैरे लगाकर हिंदूको उठाकर बीचमें करलिया । वह सात भाई थे, चार तो आगे होगये और तीन पीछे होगये । एक उसका सोलह बरसका जवान लडका भी बंदूक तलवारको लेकर उनके साथ चलपडा, जिस पहाडके नीचे रास्ता था उसके ऊपर वह लोग भी बैठे थे और देखकर रहे थे और नीचेसे यह हिंदूको लेकर चलपडे, अगर वह बोलते तब आपसमें सब पठान कटकर मरजाते । उनकी आपसमें भी हमेशा तलवार चलती रहती है, हिंदूको साथ लेकर दिनके चार बजे तक उन्होंने काबुल राजके जिलालाबाद शहरमें पहुँचा दिया । वहांका महाजन एक इस हिन्दूका दोस्त था उसकी दूकानपर गये । उसने बडी खातिर की । इसने सब हाल अपना कहा और उससे पूँछा कुछ रुपया तुम्हारे पास तैयार हैं ? उसने कहा नवसौ रुपया मेरे पास तैयार हैं । कहा–निकालो । उसने निकाला। उस हिंदूने पठानोंके आगे रखकर कहा–यह आप लोगोंकी नजर है । पठानोंने कहा–यह रुपया हमारे लिये सूअरका मांस है । अगर हम तुमसे रुपया लेलेवैंगे तब ग्रामोंमें पठानी स्त्रियें हमारे गीत बना करके गायन किया करेंगी । एक पैसाभी उस हिन्दूसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उस हिंदूने उनसे चोरीसे उस लडकेसे कहा–तीनसौ रुपया तुम लेलो

लडकेने कहा—मैं एक पैसा नहीं लूंगा । अगर यह मेरे बापको मालूम होजायगा तब वह विना मेरे सिर काटे मुझे नहीं छोडेगा । आखिर दूसरे दिन वह पठान सब रुखसत होकर अपने घरको चले गये और वह हिन्दू चार पांच दिनके पीछे काफलाके साथ पेशावरको चलदिया । यह सब हाल मैंने उसकी जबानी सुना था, यहां पर इसलिये लिखा है जो अतिथिसत्कार और शरणागतकी रक्षा महानक्रूर स्वभाव-वाले पठान जंगलीभी करते हैं १५ अब शुद्धिके ऊपर एक दृष्टांतको दिखाते हैंः—

## दृष्टान्तशुद्धिपर १६.

एक पुरुष चलते फिरते उठते बैठते रामनामको जपता था और कुछभी विशेष क्रियाको वह नहीं जानता था । एक दिन वह नदीमें स्नान करनेको गया, वहांपर एक पंडित स्नान करके पूजा करता था, उसके मुखसे राम २ को सुनकर पंडितने उससे कहा—शुद्ध होकर तू नामको जपाकर । बिना शरीरकी शुद्धिके जपना ठीक नहीं है । उसने कहा—पंडितजी ! शरीर किस तरहसे शुद्ध होता है। पंडितने कहा जहाँपर सूकरने अपनी सूँडसे मट्टी खोदी हो उस मट्टीको लाकर उससे हाथ पाँवको धोकर फिर भस्म लगाकर स्नान करनेसे शरीर शुद्ध होजाता है । उसने उसी तरहसे सब करके फिर स्नान करके पंडितसे कहा—अब मैं शुद्ध होगया हूं पंडितने कहा—अब तू शुद्ध होगया है । तब उसने नदीपर जाकर

अपने मुखमें पानी भरकर उसीकी कुल्ली पंडितजीके ऊपर छोड दी । पंडितने कहा अरे दुष्ट ! तूने मेरेको अशुद्ध कर दिया है। उसने कहा मैंने तो आपसे पहलेही पूँछ लिया था और आपने भी कह दिया था जो तू शुद्ध होगया है । जब कि मेरा शरीर शुद्ध होगया था तब मेरी कुल्ली कैसे अशुद्ध हो सकती है ? अगर कुल्ली अशुद्ध है तब तो मैं स्नानके करनेसे शुद्ध न हुआ। पंडितने कहा—स्नानसे बाहरकी शुद्धि होती है भीतरकी नहीं होती है। तब उस भक्तने कहा—राम २ तो भीतरसे निकलता है बाहरका शरीर तो हाड चामका जड है, यह तो राम २ नहीं कह सकता है और भीतर भी शरीरमें मल मूत्र भरा है वह तो किसी प्रकारसे भी शुद्ध नहीं होसकता है । जिस घटमें विष्ठा भरा है उसको ऊपरसे धोनेसे क्या ? वह शुद्ध हो सकता है ? हरगिज नहीं । मृत्तिका जल करके शरीरकी सफाई होती है मनकी शुद्धि नामके जपनेसे होती है और लिखा भी है—

चक्रायुधस्यनामानिसदा सर्वत्रकीर्तयेत् ॥
नाशौचंकीर्तनेतस्यसपवित्रीकरोयतः ॥१॥

विष्णुके नामोंका सदैवकाल सर्वत्रही कीर्तन करना चाहिये नामके लेनेमें शौचकी कुछभी जरूरत नहीं है, क्योंकि वह नामही पवित्र करनेवाला है ॥ १ ॥ मूर्खलोग ऊपरके पाखण्डमेंही जन्मको खराब कर देते हैं सार असार वस्तुके स्वरूपको नहीं जान सकते हैं ॥ १६ ॥

## दृष्टान्त स्तुतिनिंदापर १७.

लाहोर नगरमें एक छजू भक्त बडे महात्मा हुए हैं। उनके पास एक महाजनका लडका पढनेके लिये आता था, एक दिन उनकी माताने उसको स्वर्णके भूषण पहरा कर पढनेको भेजा। उसके भूषणोंको देखकर छजू भक्तने मनमें विचारा इस लडकेके भूषणोंको उतारकर रख लेना चाहिये, जब इसका बाप आवेगा तब उसको दे देवेंगे। वरन रास्तामें कोई उतार लेगा तब हमारी बदनामी होगी। या हमारे परही संशय होगा। ऐसा विचार कर उन्होंने लडकेके भूषण उतार कर रख लिये। जब लडका अपने घरमें गया, तब माताने पूछा भूषण तुम्हारे कहां गये ? उसने कहा छजू भक्तने उतार लिये हैं। उसकी माताने दूसरी स्त्रीसे कहा देखो ! भक्त बने हैं हमारे लडकेके भूषण उन्होंने उतार लिये। अब स्त्रियें छजू भक्तकी निंदा करने लगीं, जब कि लडकेका बाप घरमें आया तब स्त्रीने भूषणोंको उतारनेका हाल कहा। वह तुरं-तही छजू भक्तके पास जाकर पूछने लगा तब उन्होंने सब हाल कहकर और भूषण निकालकर उसको देदिये, वह लेकर घरमें आकर छजू भक्तकी स्तुति करने लगा। अब फिर छजू भक्तकी स्तुति होने लगी यह सब स्तुति निंदाका हाल छजू भक्तको भी मालूम हुआ तब छजू भक्तने दो मुट्ठी राखकी लेकर कहा-एक मुट्ठी लोगोंकी स्तुतिके शिरपर और दूसरी उनकी निंदाके शिरपर। तात्पर्य यह है संसारके

लोग बडे मूर्ख होते हैं क्षणमात्रमें स्तुति और क्षणमात्रमें निंदाको करने लग जाते हैं। बुद्धिमान् पुरुषको उचित है उनकी स्तुति और निंदापर ख्याल न करके अपने धर्मपर आरूढ होवे ॥ १७ ॥

## दृष्टांत सच्चाईपर १८.

किसी नगरके बाहर वनमें एक तपस्वी रहता था। एक दिन चोर किसीके घरमेंसे मालको चुराकर भागा, पीछे तिसके राजाके सिपाही भागे; वनमें जाकर तपस्वीके आगे मालको धरकर चोरभी आँख मूँदकर पास बैठगया सिपाहियोंने आकर दोनोंको पकड लिया। राजाने हुकुम दिया, परशु तपाकर इनके हाथोंपर रक्खो जिसने माल चुराया है उसीके हाथ जलेंगे, परशुको तपा कर जब रखा गया तब चोरके हाथ जल गये, तपस्वीके न जले, चोरकोही सजा हुई। तात्पर्य यह है सच्चा कभी भी मारा नहीं जाता है, इसलिये हमेशा सत्यपर ही आरूढ रहना चाहिये ॥ १८ ॥

## दृष्टांत स्वांगकी लज्जापर १९.

किसी नगरके बाहर दो महात्मा रहते थे राजा वहांका उनके पास जाया करता था। एक दिन नगरका एक चोर भी महात्माका स्वांग बनाकर उनके समीप जा बैठा। राजाने उसके आगे कुछ द्रव्यको धरा। चोरने कहा राजन् ! मैं चोर हूं। राजाने न माना तब फिर उसने कहा मैं चोर

हूं महात्मा नहीं हूं। राजाने कहा—जब थोडे २ मालके लिये आप चोरी करते हैं तब इस बहुतसे मालको क्यों नहीं लेते हैं? चोरने कहा—स्वांगको लाज नहीं लगाउँगा। राजा चुप होकर अपने घरको चले आये। तात्पर्य इसका यह है कि; जितने संन्यासी, वैरागी वगैरह भेष हैं वह सब तपस्वियोंके भेष हैं इन भषोंमें आकर इनकी जो लज्जा रखनी है वही मानो स्वांगकी लज्जा रखनी है। क्योंकि यह सब परमेश्वरकी प्राप्तिके स्वांग हैं जो पुरुष कि स्वांगकी लज्जाको नहीं रखते हैं किन्तु अपना स्वार्थ भोगके लिये सिद्ध करते हैं या वंचना करनेके लिये स्वागको धारण करते हैं वही दाम्भिक कहे जाते हैं॥ १९॥

यह वार्ता शास्त्रसे और परीक्षासे साबित होचुकी है। जब एक पुरुषके मनमें दूसरेके साथ बुराई करनेकी फुरना उठती है तब तुरंतही दूसरेके चित्तमें भी बुराई करनेकी फुरना उठती है और एक आदमीके सिवाय दूसरेके साथ भलाई करनेकी फुरना उठती है तब तुरंत ही दूसरेके चित्तमें भी भलाई ही करनेकी फुरना उठती है। इसी पर दृष्टांतोंको दिखाते हैं:—

## दृष्टांत फुरनेपर २०.

किसी ग्रामसे एक बुढ़िया अपनी जवान लड़कीको साथ लेकर दूसरे ग्रामको जाती थी रास्तामें चलते२उसकी लड़की

थक गई तब वह बुढिया सडकके किनारेपर बैठके सुस्ताने लगी । उधरसे एक सांडनी सवार पीछेसे आनिकला । बुढियाने उससे कहा बेटा ! मेरी लडकीको तू थोडी दूर तक अपने पीछे सवार करा ले क्यों कि यह थकगई है । आगे जाकर तू इसको उतार देना मैं भी पीछे धीरे २ आती हूँ । सवारने कहा माई ! मैं दूसरेकी लडकीको अपने पीछे सवार नहीं कर सकता हूँ । ऐसे कहकर सवार आगेको बढ गया एक मीलतक जब वह गया तब उसके मनमें फुरा । ऐसी सुन्दर जवान स्त्री मिलती थी उसको अपने पीछे सवार करालेते, बुढिया आगे रोती गाती अपने घर चली जाती । हम अपने घर चले आते अपना आनंद करते उधर तो सवारके मनमें यह वार्ता फुरी और इधर बुढियाके मनमें फुरा, मैं बडी मूर्खता करती थी जो एक नये आदमीके साथ अपनी जवान लडकीको सवार कराती थी, अगर वह लेकर कहींको चला जाता तब मैं क्या करती ? ऐसा विचार कर बुढिया धीरे २ चलने लगी और वह सवार भी आगे रास्तामें खडा हो रहा। जब बुढिया उसके समीप पहुँची तब सवारने कहा- ला माई ! तुम्हारी खातिरसे मैं तेरी लडकीको अपने पीछे चढा लेता हूँ । बुढ़ियाने कहा—ना बेटा ! ना जो तेरे कानमें कह गया है, वह मेरे कानमें भी कह गया है। तात्पर्य यह है जबतक सवारके मनमें बुराई नहीं फुरी थी, तब तक

बुढियाके मनमें भी नहीं फुरी थी, जब कि सवारके मनमें बुराई फुरी, तब तुरंतही बुढियाके मनमें भी फुरी ॥ २० ॥

## दृष्टान्त फुरनेपर २१.

दो महात्मा रटन करते हुए किसी ग्राममें एक महाजनके घरमें जा ठहरे। आसनको लगाकर एक तो नदीपर स्नान करनेको गया और दूसरा आसनपर रहा। महाजनने उससे पूंछा यह महात्मा कैसे हैं? जो कि स्नान करनेको गये हैं? उसने कहा केवल गधे हैं जब कि वह आगये और वह स्नानको गये तब उसने पूंछा यह महात्मा कैसे हैं? उसने कहा निरे बैल हैं ! जब कि भोजनका समय हुआ तब उसने एकके आगे भूसा और दूसरेके आगे घास धरदिया। उन दोनोंने पूंछा यह क्या? महाजनने कहा। आपने इनको गधा बताया था। सो गधेका खाना घास है इसलिये इनके आगे मैंने घास रक्खा और इस दूसरेने आपको बैल बताया था इसलिये इनके आगे मैंने भूसा रक्खा है। दोनों शरमिंदे होगये। इस दृष्टांतका भी येही तात्पर्य है जब एकके मनमें बुराई फुरती है तब दूसरेके मनमें भी बुराई फुरती है ॥ २१ ॥

## दृष्टांत फुरनेपर २२.

किसी नगरका राजा शिकारको जंगलमें निकला लौटती दफा उसको प्यास लगी, एक किसानसे उसने कहा-मुझको पानी पिला। उसने एक बडे तरबूजेको काटा, उसमें इतना

रस निकला जो राजा पीकरके तृप्त हो गया और उसका घोडा भी तृप्त हो गया। राजाने किसानसे पूंछा-कितना कर देते हो? उसने कहा-टका बीघा राजाके मनमें गुजरा, पैदावारी तो बहुत है कर टका बीघाही देते हैं। इनपर कुछ कर बढाना चाहिये फिर किसी रोज राजा शिकारसे लौटती दफा उसी किसानके खेतमें जा निकला और उसीसे पानी पीनेको कहा। तब उसने आगेसे भी भारी तरबूजेको काटा उसमें रस थोडासा निकला। फिर दूसरा काटा। इसी तरह चार पांच तरबूजोंके काटनेसे राजाका, और घोडेका पेट मुश्किलसे भरा, तब राजाने पूंछा क्या वजह है? जो उस दिन एकही तरबूजेके काटनेसे हमारा और घोडेका पेट भर गया था और आज चार पांच तरबूजोंको काटनेसे भरा है? उसने कहा इस देशके राजाके मनमें बेईमानी फुरी है इसीसे रस सूख गया है। तात्पर्य यह है कि राजाके मनमें जुलम फुरता है तब पृथिवी रसको छिपा लेती है और जो शाहके चित्तमें बेईमानी फुरती है तब गुमाश्तेको घाटा पड जाता है। इसी तरह सर्वत्र जानलेना। इसलिये सदैवकाल ईमानदारीके साथ रहना चाहिये ॥ २२ ॥

जो काम करना विचार कर धीरे २ करना। हर एक काममें अति जल्दी नहीं करना चाहिये। क्योंकि अति जल्दी करनेसे काम बिगड जाता है और चित्तमें पश्चात्तापभी करना

पडता है और चित्त क्लेशित भी होता है। अब इसीपर दृष्टांतोंको दिखलाते हैं:—

## दृष्टान्त जल्दीपर २३.

एक स्त्रीके लडका पैदा हुआ उसी दिन उसके घरमें एक नकुलीको भी बच्चा पैदा हुआ। वह दोनोंको बडे प्यारसे पालने लगी। नकुलीका बच्चा तो छै महीनामेंही बडा होगया एक दिन वह किसी कामके लिये बाजारको जाने लगी, तब अपने लडकेको झूलनामें सुलाकर और नकुलीके बच्चेको वहांपर अंगणमें उसके पास छोडकर वह बाहरको चली गई। पीछेसे एक सर्प वहांपर निकला और उस बच्चेको काटनेके लिये चला तब नकुलीके बच्चेने दौडकर तिस सांपकी गर्दनको काट डाला सांप मर गया वह उसी जगहपर खेलता रहा, थोडी देरमें वह स्त्री जो बाहरसे आई तब नकुलीका बच्चा दौडकर उसके पांवमें लेटने लगा, उसके मुखमें रुधिर लगा देखकर स्त्रीने जाना इसने मेरे बच्चेको मार दिया है। तुरत उसने लाठीसे नकुलीके बच्चेको मार दिया, जब कि भीतर आकर उसने देखा तब अपने बच्चेको झूलनामें जीता और सोता पाया फिर तो वह रुदन करने लगी और उसने बडा पश्चात्ताप किया ॥ २३ ॥

## दृष्टांत अतिजल्दीपर २४.

एक कुत्तेको एक आदमीने पालाथा। एक दिन उसको कुछ द्रव्यका काम पडा। तब वह उसी कुत्तेको साथ लेकर एक महाजनके पास जाकर कहने लगा। इतना रुपया हमको करजा दीजिये और उसके एवजमें इस कुत्तेको रहन रख लीजिये। छै महीनोंके पीछे मैं रुपयाको देकर इस कुत्तेको छुडाकर ले जाऊँगा। उसने उसको रुपया देकर कुत्तेको रख लिया। अब कुत्ता महाजनके घरमें रहनेलगा। एक दिन रात्रिको उसके घरमें चोर आया और मालको चुराकर जब वह चला, कुत्ता भी उसके पीछे २ चला। चोर ग्रामके बाहर एक दरख्तके नीचे माल गाडकर अपने घरकोचल दिया। कुत्ता उस जगहको देखकर चला आया, सबेरे महाजनने जाकरके देखा तब माल नदारद है अब लोग भी वहांपर जमा होगये और विचार करने लगे इतनेमें उस कुत्तेने महाजनका कपडा अपने मुखमें पकडकर बाहरको खैंचकर ले जाना चाहा। महाजनने उसको बार २ हटाया तब एक अकलमन्दने कहा इस कुत्तेके साथ जाकर देखना चाहिये यह कहां ले जाता है। महाजन उसके साथ चलपडा तब उसी दरख्तके नीचे कुत्ता जाकर अपने पंजोंसे खोदनें लगा। महाजनको उसमें अपना माल दिखाई पडा। तुरंत अपने मालको उसने निकाल लिया और घरमें आकर एक चिट्ठी कुत्तेके मालिककी तरफ लिखी उसमें, लिखा जो

रुपया तुमनेइस कुत्तेपर लिया था वह सब इसी कुत्तेने वसूल करदिया । इसलिये मैंने इसको आजाद कर दिया है । इस कुत्तेके गलेमें उस चिठ्ठीको बांधकर भेज दिया । आगे उसने कुत्तेको आते देखकर जाना जो भाग आया है। ज्योंही कुत्ता समीप गया उसने मार डाला । पीछे उसके गलेमेंसे चिट्ठीको खोलकर जब हालको जाना तब बहुतसा रोया । अति जल्दी करनेवाले पीछे रोते हैं ॥ २४ ॥

## दृष्टांत जल्दी न करनेपर २५.

एक राजा अतिदानी था । जो कोई उससे कुछ मांगता वही उसको दे देता था एक दिन एक साधुने चार पहरके लिये उससे राजको मांगा और कहा—चार षहरतक हम राज करेंगे । फिर तुमको दे देवैंगे । क्योंकि हमारे मनमें ऐसा संकल्प उत्पन्न भया है । राजाने चार पहरके लिये अपना राज उसको दे दिया । जब चार पहर बीतगये, तब राजाने उस साधुसे अपना राज माँगा । उसने कहा मन नहीं चाहता । तब राजा अपनी रानी और दोनों लडकोंको लेकर चल दिया । एक दिन राजा अपनी रानी और लडकोंके सहित एक मुसाफिरखानेमें जाकर ठहर गया। एक सौदागर भी वहांपर ठहरा था । रानीके सौंदर्यको देख वह सौदागर मस्त होगया, उसने राजासे कहा—मेरी स्त्रीके लडका पैदा होनेवाला है अगर आप जरासा अपनी स्त्रीको

मेरी स्त्रीके पास भेजो तब यह उसका हाल जाने और उसकी मददभी करे। राजाने अपनी रानीको उसके तंबूमें भेज-दिया। वहां स्त्री कोईभी नहीं थी। यह फरेब था। राजाकी रानीको सन्दूकमें बंद कर वह रातकोही वहांसे चल दिया, सबेरे राजाने देखा तो वह सौदागर नहीं है। राजा भी अपने लडकोंको साथ लेकर वहांसे चलदिया। रास्तामें एक नदी आई, वहांपर कोई भी नौका नहीं थी। राजाने मनमें कहा—पहले एक लडकेको पार पहुँचादूं तब पीछे दूसरेको लेजाऊंगा। एक लडकेको लेकर ज्योंही बीचमें गया कि हाथ छूटगया और लडका बहगया। इधर बाघ आकर दूसरे लडकेको भी उठाकर लेगया। अब राजा बडा दुःखी हुआ और रोता पीटता आगेको चलपडा। आगे एक नगरका राजा मरगया था और वजीरोंने यह सलाह की थी जो आदमी सबेरे आकर नगरके दरवाजेको हिलावे उसीको राजा बनादेना चाहिये इधरसे यह राजा सबेरे वहांपर पहुँचा और फाटकको हिलाने लगा,वजीरने इसीको स्नान कराके राज-गद्दीपर बिठला दिया। और उधर एक लडकेको एक मल्ला-हने पकडा और दूसरेको एक आजडीने बाघसे छुडाया, मल्ला-हने उस लडकेको राजाके पास बेंच दिया। और आजडी भी उस लडकेको उसी राजाके पास बेंचदिया। राजाने सेवाके लिये दोनोंको खरीदकर लिया। मगर पहचान नहीं सका, कि यह दोनों लडके हमारे हैं क्योंकि लडकोंकी हालत बहु-

तही बुरी बनी थी । और इधरसे वह सौदागर उसी राजाके नगरमें पहुँचा और राजाको अपने पासका माल दिखाया। मालको बेचते संध्या होगई । राजाने कहा—बाकीका माल कल देखेंगे और उन्हीं दोनों लडकों सौदागरकी सेवामें भेजा। जब रात्रि बहुतसी व्यतीत होगई, तब दोनों लडके सौदागरके तंबूके बाहर बैठकर आपसमें बातचीत करनेलगे ।छोटे लडकेने बडेसे कहा—कुछ बातचीत सुना ? उसने कहा—हम राजाके लडके हैं, आपदा पडगई है । ऐसे कहकर सब सिर बीताहाल उसने सुनाया । तंबूके भीतर उनकी माता सुनती थी, जिसको सौदागर भगाकर ले आया था । वह जानगई यह दोनों लडके तो हमारेही हैं । सौदागर सोगया था । वह तुरंत बाहर निकल आई और अपने दोनों लडकोंको छाती से लगाकर पूँछा ? अब तुम किसके पास हो ? उन्होंने कहा-राजाकें । उसनेकहा चलो राजाके पास; वह लडकोंको लेकर चली आई और राजासे कहा यह दोनों लडके मेरे हैं मुझको मिलने चाहिये और सौदागरने ऐसा हमारे साथ दगा किया है उसको दण्ड मिलना चाहिये । राजा सब हालको सुनकर जानगया कि यह दोनों लडकें मेरे हैं और यह स्त्रीभी मेरी है । राजाने अपना हाल स्त्रीको सुनाकर लडकोंके समेत भीतर रनवासमें भेजदिया और सौदागरको जन्मभरके लिये कारागारमें भेजदिया और थोडे दिनोंके पीछे फौज भेजकर उस साधुसे अपना राज छीन लिया और उसको भी दण्ड

देकर राजाने निकालदिया। फिर दोनों पुत्रोंको दोनों जगहका राज बांट कर देदिया। कर्मोंका फल तो सबको बराबरही मिलता है मगर अतिकरनेमें दुःख होता है। अतिदानी बनना भी ठीक नहीं है ॥ २५ ॥

अतिरूपेणवैसीताअतिगर्वेणरावणः ॥
अतिदानाद्बलिर्बद्धोह्यतिसर्वत्रवर्जयेत् ॥ १ ॥

अतिरूपवाली होनेसे सीता हरी गई और अति अहंकारवाले होनेसे रावण भी मारा गया, अति दानी होनेसे बली भी बंधायमान होगया, इस लिये अतिका सर्वत्रही त्याग कर देना चाहिये ॥ १ ॥

## दृष्टान्त अति न करनेपर २६.

किसी ग्रामसे एक क्षत्री विदेशमें नौकरीके लिये गया उसकी स्त्रीको तब एक महीनाका गर्भ था, वह बारह बरस विदेशमें रहा, पीछे लडका पैदा होकर बारह वरसका होगया; जब वह लौटकर घरके समीप पहुँचा और उस लडकेको अपने द्वारपर खड़ा हुआ उसने देखा तब उसके मनमें क्रोध हुआ। कि स्त्रीने व्यभिचारसे लडका पैदा किया। इसलिये लडकेको और स्त्रीको मार देना चाहिये। जब तलवार निकाली तब मनमें फुरा, जल्दी न करनी चाहिये। तलवारको म्यानमें करके स्त्रीसे जब पूँछा, तब उसने सब बताया उसको याद आगया दोनों बचगये जल्दी न करनेका इतना बडा फल हुआ ॥ २६॥

## दृष्टान्त इत्तिफाकपर २७.

किसी बादशाहके सौ लडके थे, जब वह मरने लगा तब सब लडकोंको बुलाकर उसने कहा, तुम सब कोई दो २ छडीको लाओ। वह सब ले आये, तब बादशाहने कहा—एक २ छडीको सब कोई तोड डालो। और एक २ इकठ्ठी कर एक गट्ठा बांध दो। सब लडकोंने एक२छडीको तोड डाला और एक २ को इकठ्ठा करके गठ्ठा बांधदिया। तब बादशाहने उस गट्ठेको एक लडकेको देकर कहा—इसको तोड डालो। उसने बहुतसा जोर लगाया। मगर गट्ठा न टूटा। तब दूसरेको देकर कहा—तुम इसको तोडो। उससेभी न टूटा। इसी तरह सब लडकोंने अपना २ जोर लगाया, किसीसे भी वह गट्ठा न टूटा। तब बादशाहने अपने लड-कोंसे कहा—इसी तरह जब तुम सब मिलकरके रहोगे तब कोई भी शत्रु तुमको नहीं तोड सकेगा और जो तुम एक२ होकर परस्पर फूट कर रहोगे, तब तुम सबको एक२करके दुश्मन मारकर तुम्हारा राज ले लेवेंगे। इसलिये तुम सब मेरे मरनेके पीछे परस्पर मिल कर रहना ॥ २७ ॥

## दृष्टान्त इत्तिफाकपर २८.

जितना सांसारिक सुख है वह परस्परके इत्तिफाकसे यानी मेलसेही सब किसीको मिलता है और जितना सांसारिक दुःख है वह सब परस्परकी फूटसेही होता है। यह वार्ता

युक्ति और प्रमाणोंसे तथा अनुभवसे सिद्ध है । देखो परस्पर विरोधी भूतोंके मेलसे इतना बडा ब्रह्मांड निराधार खडा है, जिसमें एक २ तारा लाखों कोसोंका लंबा चौडा है । फिर इसी तरह जो वाक्य मनुष्य तथा वेद शास्त्र और युक्तिसे मिला होता है उसीको सब लोग अंगीकार करते हैं और जो वाक्य वेदशास्त्र विरुद्ध युक्तिविरुद्ध अपना मनमाना किसीका कहा होता है उसको कोई भी नहीं मानता है और अपनेही सजातियोंके साथ मिलकर रहनेसे सुख मिलता है । महात्माको महात्माके साथ, दांभिकको दांभिकके साथ, बालकको बालकके साथ, विद्वान्को विद्वान्के साथ, मूर्खको मूर्खके साथ । बस मेलही परस्परके सुखका साधन है और फूट दुःखका साधन है ॥ २८ ॥

## दृष्टान्त इत्तिफाकपर २९.

किसी ग्राममें एक आदमी बहुतही गरीब होगया था, एक दिन वह अपने लडके बालोंको साथ लेकर जंगलमें चल पडा। जंगलमें जाकर एक वृक्षके नीचे उन्होंने डेरा लगा दिया । तब बापने एक लडकेसे कहा जाओ तुम पानी लाओ, दूसरेसे कहा—तुम जाकर सूखी२लकडियोंको चुनकरके लावो, तीसरेसे कहा तुम जाकर आग लाओ, स्त्रीसें कहा—तुम चूल्हा बनाओ। उसकी आज्ञाको सुनकर वह सब अपने२कामको करने लगे। उसी वृक्षके ऊपर एक पक्षी बैठा था उसने देखा इनके पास खाने पकानेका तो कोई सामान नहीं है । यह आग और

पानीको क्या करेंगे ? उस पक्षीने उनसे पूछा ! क्या पकाओगे ? तुम्हारे पास तो कोई भी पकानेवाली वस्तु नहीं है । उन्होंने कहा—तुमहीको मारकर पकावेंगे । पक्षीने विचारा, यह जरूर मुझे मारलेंगे । इनको कुछ देकर जान बचाना चाहिये । क्योंकि इनका परस्पर इत्तिफाक है । पक्षीने कहा तुम हमको मत मारो । मैं तुमको दौलत बताता हूँ । उन्होंने कहा अच्छा बता । पक्षीने कहा इसी वृक्षके नीचे बहुतसी दौलत गडी है, उसको तुम निकाल ली । उन्होंने जब उस जगहको खोदा तब उनको दौलत मिलगई । वह लेकर घरको चले आये और चैनसे अपनी गुजरको करने लगे । उनके पडोसी की स्त्रीने उसकी स्त्रीसे पूंछा । तुमको दौलत कहांसे मिली है ? उसने सब हाल कह सुनाया । उसने अपने पतिसे कहा—कल हमभी उसी जंगलमें चलकर वैसेही करें, हमको भी दौलत मिलेगी । वह भी अपने कुनबेको लेकर उसी जंगलमें उसी वृक्षके नीचे जाकर ठहरे । बापने एक बेटेसे कहा—पानी लाओ उसने कहा—तुम्हारे सिरसें लाऊं । दूसरेसे कहा—सूखी लकड़ी लाओ उसने कहा लकडियोंमें तुम जलोगे । तीसरेसे कहा—आग लाओ । उसने कहा आप क्यों नहीं लाते हो ? जो बैठे हुकुम करते हो ! उनके व्यवहारको देखकर ऊपरसे पक्षीने कहा—जिनका इत्तिफाक था उनको दौलत मिल गई तुमको कुछ नहीं मिलेगा । तुम्हारा इत्तिफाक नहीं है तुम अपने घरको चले जाओ । वह खाली हाथ घरको चले आये ॥ २९ ॥

एक बूढा आदमी एक दिन बाजारमें हवा खानेके लिये निकला। तब एक लुहारकी दूकानपर बहुतसी कुल्हाडियोंको बनते हुए उसने देखा। उसने लुहारसे पूँछा यह बहुतसी कुल्हाडियें क्यों बनाई जाती हैं? उसने कहा—बनको काटनेका हुकुम हुआ है सो बनके काटनेके लिये यह सब बनाई जाती हैं। दैवयोगसे एक दिन वह बूढा बनमें जा निकला और बनसे कहने लगा अब तो आप काटेजाओगे। बनने कहा—आपको यह कैसे मालूम हुआ है? जो मैं काटाजाऊंगा। बूढा बोला तुम्हारे काटनेके लिये कुल्हाडियें बनरही हैं। बनने कहा कुल्हाडियोंकी मजाल क्या है जो हमको काटें। बनकी वार्ताको सुनकर बूढा चुप होगया, थोडेसे दिनोंके पीछे फिर बूढा उसी बनमें जा निकला। तब आधेसे ज्यादा बन कटगया था। बूढेने कहा भाई! तू तो कहता था कुल्हाडियोंकी क्या मजाल है जो मुझको काटे! अब किसने तुझको काटा है? बनने कहा मैं तो अबभी वही बातको कहता हूं मगर क्या करें हमारी कौमने कुल्हाडियोंको मदद दी। तब तो उसने काटा अगर हमारी कौम लकडी फूटकर कुल्हाडीके साथ जाकर न मिलती तब किसीतरहसे भी कुल्हाडी हमको न काटसकती। यह तो दृष्टांत है दार्ष्टांतमें जब कि अपनेही भाई फूटकर दूसरोंसे मिल जाते हैं तभी अपनी कौमकी हानि होती है ॥ ३० ॥

## दृष्टान्त फूटपर ३१.

एक बनमें चार सांड इकठे रहते थे और ऐसा उनका मेल और प्रेम था जो कभी भी परस्पर एक दूसरेसे जुदा नहीं होते थे, इसीसे उनके ऊपर सिंह और व्याघ्र हमला नहीं कर सकते थे। परंतु सिंह उनके खानेका नित्यही विचार करता रहताथा। एक दिन सिंहके मनमें विचार उठा, जबतक इनमें फूट नहीं होगी तबतक मैं इनको कदापि मार नहीं सकूंगा। ऐसा विचार कर सिंहनें एक दूसरेके आगे एक दूसरेकी निन्दा करनी प्रारंभ की और कुछ दिनोंतक निंदा करके उनके दिलोंको फाड दिया और परस्परका इकठा-होना उन्होंने छोड़दिया और हरएक पृथक् २ होकर बनमें विचरने लगे तब सिंहका भी प्रयोजन सिद्ध होगया अर्थात् एक२सांडको जुदा २ मारकर सिंह भक्षण कर गया। दार्ष्टां तमें येही दशा भारतकी भी हुई। आपसकी फूटसेही भारतमें म्लेच्छोंका प्रवेश हुआ और लाखों हिन्दुओंके धर्म धन वगैरहका नाश हुआ। सब फूटकाही फल है॥ ३१॥

## दृष्टान्त मेलके फलपर ३२.

अग्नि जलका विरोधी है और जल अग्निका विरोधी है। वायु दोनोंका विरोधी हैं। इसी तरह पांचों भूत परस्पर एक दूसरेके विरोधी हैं। तब उनकी संमतिसे अर्थात् उनके पर-स्परके मेलसे संपूर्ण घटपटादि पदार्थ बने हैं और व्यवहार

सिद्ध कर रहे हैं। इसी तरह संपूर्ण मनुष्य पशुपक्षी आदि-कोंके शरीर भी परस्पर विरोधी पांचों भूतोंके मेलसे ही बने हैं। जब शरीरमें एक भी भूत फूट जाता है अर्थात् गरमी या सरदी या वायु जब कि अधिक होजाती है तब तुरंतही शरीर भी नाशको प्राप्त होजाता है। इसी तरह जिस देशके लोग आपसमें मिले रहते हैं उस देशको दूसरा कोई भी दबा नहीं सकता है। जब कि उनमेंसे एक भी लोभसे या द्वेषसे फूटकर दूसरे शत्रुसे जामिलता है तब तुरंतही वह देश दूसरोंका पशु बनजाता है और पशु बनकर महान् क्लेशको ही प्राप्त होता है, इस लिये मेलही रखनेसे सुख मिलता है ॥ ३२ ॥

## दृष्टान्त मेलपर ३३.

जब वर्षा होती है तब बादलोंसे एक २ बूँद पानीकी पर्वतादिकोंमें गिरती है और वह परस्पर मिलती जाती हैं जब अनंत बूँदें आपसमें मिलजाती हैं तब बडी २ भारी नदियें होकर बहचलती हैं और बडे २ पत्थरों और वृक्षोंको वह तोड डालतीहैं और लाखों मनके बोझको वह तैरा लेती हैं, कोसों भरकी भूमिको बहादेती हैं। मगर एक या दो बूँदें किसी कार्यको भी सिद्ध नहीं कर सकती हैं। इसी प्रकार बहुतसे मनुष्योंका मेल भी भारी २ कार्योंको सिद्ध कर लेता है एक मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता है ॥ ३३ ॥

## दृष्टान्त मेलपर ३४.

सूर्यकी एक किरण जला नहीं सकती है और न वह रसोई वगैरहका कामही देसकती है, परंतु शीशोंद्वारा इकठ्ठी करी हुई बहुतसी किरणें प्रचंड अग्निका काम देती हैं। अर्थात् मनो मिठाई उनपर तैयार हो जाती है। इसी प्रकार बहुत आदमियोंका मेलभी भारी २ कार्योंको सिद्ध करलेता है ॥ ३४ ॥

## दृष्टान्त मेलपर ३५.

एक घासके तृणसे मूसा भी बांधा नहीं जाता है इसी तरह तंतुसे भी वह नहीं बांधाजाता है परंतु जब बहुतसे घासके तृणोंका या बहुतसे तंतुओंका रस्सा बनाया जाता है तब बडे २ मत्त हाथीभी उससे बांधे जाते हैं और नदियोंमें बडी २ पूलेभी, नौकाभी उनहींसे बाँधीजाती हैं। इसी तरह बहुतसे आदमी भी परस्पर मिलकर बडे भारी कार्यको सिद्ध कर लेते हैं ॥ ३५ ॥

## दृष्टान्त मेलपर ३६.

राजाकी फौज जबतक एक अफसरके हुकुममें रह कर युद्धको करतीहै तबतक वह विजयकोही प्राप्त होती है और शत्रुको भी जीत लेती है। जब वह परस्पर मिलकर अफसरके हुकुमकी तामील नहीं करती है किंतु फूटजाती है तब सबकी सब नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। इसी तरह जबतक

आदमी अपने सच्चे वेदकी आज्ञामें मिलकरके चलते हैं तब तक जयको प्राप्त होते हैं जब वेदकी आज्ञाको उलंघन करदेते हैं तब पराजयको प्राप्त होते हैं। जिस घरमें पतिपत्नीका परस्पर प्रेम है वही घर सुखी है, जिस घरमें फूट है वह दुःखी है। विभीषणके फूटनेसे रावण मारा गया और फूटसेही शुंभनिशुम्भ भी मारेगये और कौरव पांडव भी सब फूटसेही नष्ट होगये। परस्परकी फूटसेही सब यादवभी मारेगये और भी बडे २ खानदान और राजे सब फूटसे ही नष्ट हो गये। पृथ्वीराजके ससुरके फूटनेसे इस देशमें म्लेच्छों का प्रवेश होगया और सिक्खोंकी फूटसे सरकार रणजीत-सिंहका राज नष्ट होगया और परस्परकी फूटके कारणही इस देशमें लाखों मत नये २ खडे होगये हैं। फूटके कारण एक तो अनेक मत और इष्ट तथा उपासना हैं। दूसरा एक घरमें अनेक गुरुओंका होना, तीसरा एकही देशमें अनेक प्रकारके धर्म और भाषा वगैरह हैं। इन सबके हटनेसे सबका मेल हो सकता है, अन्यथा नहीं ॥ ३६ ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामि–हंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्या-
धरेण पेशावरनगरनिवासिना विरचितदृष्टान्तमञ्जूषा-
नामकग्रन्थे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

---

# अथ चतुर्थोऽध्यायः
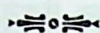
## दृष्टान्त कर्मोंके फलपर १.

मध्य देशमें गंगाजीके किनारे पर एक ब्राह्मण और एक चंडाल दोनों अनशन व्रतको धारण करके तप करने लगे। एक दिन ब्राह्मणको क्षुधाने बडा पीडित किया, उसने निषादोंको देखा जो गंगाजीमें मछलियोंको मार २ करके खाते हैं। ब्राह्मणके मनमें यह फुरा कि निषादही हमसे अच्छे हैं जो गंगाजीमें मनमाना मछलियोंका मांस भून २ करके खाते हैं। और चांडालकी निगाह जो निषादोंपर पडी तब तिसके मनमें यह फुरा कि निषाद बडे दुष्ट हैं जो निर्दोष जीवोंको मार मार कर खाते हैं। इनका दर्शन करना भी ठीक नहीं है। ऐसा विचार कर चांडालने नेत्रोंको मूंद लिया। दूसरे दिन उन दोनोंका शरीरपात होगया। ब्राह्मणका जन्म तो निषादके घरमें हुआ और चांडालका जन्म राजाके घरमें हुआ, परंतु दोनोंको अपना पूर्वजन्मका स्मरण रहा। ब्राह्मण तो अपने मंद संकल्पका पश्चात्ताप करे और राजा प्रसन्न होवे। तात्पर्य इसका यह है जो शुद्ध मनसे शुभकर्म करता है उसको अच्छा फल होता है जो अशुद्ध मनसे शुभ कर्म करता है उसको अशुभ फल होता है॥१॥

## दृष्टान्त कर्मके फलपर २.

एक बनियाके घरमें बडी सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई। जब वह युवा अवस्थाको प्राप्त हुई, तब उस बनियांके मनमें संकल्प हुआ हुआ कि इसका विवाह किसी राजासे होना चाहिये। ऐसा विचार करके बनियां उसी नगरके बाहर एक मौनी बाबा रहते थे, उनके पास गया और उनसे जिकर किया। उन्होंने कहा हम तुम्हारे घरमें चलकरके उस कन्याको देखकर पीछे उसके भाग्यकी वार्ताको कहेंगे। दूसरे दिन वह मौनी बाबा उस बनियाके घरमें गये। उस कन्याके रूपको देखकर मौनी बाबाका मन उसपर चलायमान होगया और मौनी बाबा एकदमसे रोने लगा। बनियाने कहा—आप तो कभी बोलते भी नहीं थे रोनेका कारण क्या है? बनियाको एकान्तमें लेजाकर मौनी बाबाने कहा—तुम्हारी कन्याके माथेकी रेखाको देखकर हम रोये हैं, क्योंकि इस रेखाका यह फल है कि तुम्हारे कुलको यह नाश करदेगी। बनियाने कहा—कोई ऐसा भी उपाय है जिसकरके हमारा कुल बचजाय। मौनी बाबाने कहा कन्याको संदूकमें बंद कर उसपर एक दिया जला कर उस संदूकको नदीमें संध्यासे पीछे लेकर बहा दे। तब तो तुम बचोगे नहीं तो थोडेही दिनोंमें सब तुम्हारा घर चंपत हो जायगा। ऐसे कहकर मौनी तो अपने स्थानपर चले गये। इधर बनियाने उसी तरह संदूकमें कन्याको बन्द करके बहादिया। उसी दिन

राजकुमारको शिकारमें देर होगई थी, वह नदीकिनारे खडे थे, संदूकको बहते देखकर नौकरोंको हुकुम दिया कि इसको बाहर निकालो, नौकरोंने झटपट उसको बाहर निकाला। राजकुमारने सन्दूकको खोलकर देखा तो उसमें अप्सरा बैठी है उसको निकालकर रानी बना लिया और उसी सन्दूकमें एक रीछको बन्द कर सन्दूकपर दिया जला कर फिर उसको नदीमें बहा दिया। इधर डेरेपर आकर मौनी बाबाने अपने चेलोंसे कह दिया, आज रात्रिको संदूक बहती आवेगी उसको पकडकर मेरे पास लाना। वह चेले उस संदूकको पकड करके बाबाजीके पास लेगये। बाबाजीने अपनी कोठडीमें रखवाकर चेलोंसे कहा–तुम हमारी कोठडीके दरवाजेको बाहरसे बंद कर देना, मैं कितनाही कहें पर कभी भी नहीं खोलना। मौनी आप कोठडीके भीतर रहगये और ज्योंही संदूकको खोला त्योंही रीछने उनको काटना शुरू किया। अब बाबाजी चिल्लाने लगे इधर शिष्य लोगोंको खोलनेका हुकुमकी नहीं था, जब बहुतही पुकारने लगे तब शिष्योंने रीछको मार पीटकर भगादिया और मौनीकी बुरी दशाको देखकर शिष्य हँसे। यह खबर बनियाको और राजकुमारको भी पहुँची वे भी हँसे और कहा कर्मका फल अवश्यही मिलता है ॥ २ ॥

## दृष्टान्त कर्मके फलपर ३.

एक महात्माने किसी महाजनके द्वारपर जाकर हरि नारायण की । महाजन भारी कृपण था, इसलिये उसने थोडासा घास उठाकर उसके आगे फेंक दिया । वह महात्मा उस घासको उठाकर अपने साथही लेते आये और अपनी कुटीके पास उसको फेंक दिया । वह घास धीरे २ बढने लगा । थोडे ही दिनोंमें वह बडा भारी अ बार होगया। एक दिन महाजन वहांपर जा निकला उसने पूंछा यह घास कैसा है ? तब महात्माने कहा यह तुम्हाराही दान बढ रहा है । तुम्हारे खानेके लिये तुमको जन्मांतरमें यह सब खाना पडेगा । महाजनने कहा कोई इसके घटनेका भी उपाय है ? महात्माने कहा कोई ऐसा काम तू कर जिसमें लोग तेरी निंदाको करें । उसने ऐसाही काम करना शुरू किया, लोग उसकी निन्दाको करने लगे; जब थोडासा घास रह गया तब महाजनने कहा,क्यों नहीं घटना ? महात्माने कहा इस नगरमें सत्यवादी है वह तुम्हारी निन्दाको नहीं करता है । उससे पूँछा गया तब उसने कहा दूसरेकी निंदा करनेसे उसका पाप बांटना पडता है सो मैं घास खाना नहीं चाहता हूँ । महात्माने महाजनसे कहा यह थोडासा तो तुमको अवश्यही खाना पडेगा । तात्पर्य यह है कर्मोंका फल किसी तरहसे दूर नहीं होता है अवश्यही भोगना पडता है ॥ ३ ॥

## दृष्टान्त कर्मके फलपर ४.

किसी राजाके पास एक सौदागर बडी उमदा तलवार बेचनेके वास्ते लाया। राजा उस तलवारको हाथमें लेकर उसपर हाथ फेरने लगे। हाथ फेरते २ राजाकी एक उँगली कटगई। राजाका मन्त्री कुछ ज्योतिष पढा था, उसने कहा—अच्छा हुआ। राजाने अपने मनमें कहा— देखो मेरी तो अंगुली कटगई है और यह कहता है अच्छा हुआ। राजाने उस वजीरको तत्काल निकाल दिया। वजीर अपने घरमें चला आया। कुछ दिनोंके पीछे एक दिन राजा जंगलमें शिकारको गये सो घोडेसे गिरपडे। घोडा भाग गया। राजा अकेला रहगया और रास्ता भूलगया। उस जंगलमें एक देवीका मंदिर था उसमें पंडित लोग होम कर रहे थे और उनको बली देनेके लिये एक आदमीकी जरूरत थी सो जंगलमें खोजने लगे। राजाको पकडकर बली देनेके लिये लेगये, जब बली देने लगे तब पंडितने कहा—देखो इसका कोई अंग तो भग नहीं है ? देखने लगे तो उसकी एक अंगुली कटी थी। तब पंडितोंने कहा यह बली लायक नहीं है इसको छोड दे। राजाको उन्होंने छोड दिया। राजाने अपने घरमें आकर अपने मनमें विचार किया, वजीरका कथन ठीक हुआ, अगर उँगली कटी न होती तब तो मैं आज माराही जाता। वजीरको बुलाकर फिर अपना वजीर बनाया। राजाने वजीरसे कहा—जब मेरी अंगुली कटगई

थी तब आपने दो बार अच्छा हुआ ऐसा कहा था। सो इसका क्या फल हुआ ? वजीरने कहा जब आपकी अंगुली कटी थी तब मैंने कहा अच्छा ? उसका यह फल हुआ जो आपकी जान बची। फिर जब आपने मेरेको निकाल दिया तब मैंने कहा अच्छा हुआ, अगर आप मेरेको न निकालते तब मैं भी आपके साथ शिकारको जाता और पकडा जाता। और आपको तो वह अंगुलीको कटा देखकर छोड देते मगर मेरेको मारडालते। दूसरी बार अच्छा कहनेका यह फल हुआ। तात्पर्य यह है कर्मोंके अनुसारही जीवको फल मिलता है ॥ ४ ॥

## दृष्टान्त कर्मोंके फलपर ५.

किसी नगरके बाहर एक स्यार और दूसरा गृद्ध रहता था। एक दिन गृद्धने स्यारसे पूँछा तुम्हारा स्यारका जन्म किस पाप करके हुआ है स्यारने कहा मैं पूर्व जन्ममें साहूकार था, जिस ब्राह्मण साधुको जो वस्तु देनेको कहता था, फिर उसको नहीं देता था, इसी पापसे मेरा जन्म स्यारका हुआ है अब तुम बताओ तुम्हारा जन्म गृद्धका कौनसा पाप करनेसे हुआ है ? गृद्धने कहा मैं साधु ब्राह्मणोंका माल चुरा २ करके खाता था, इसी पापसे मेरा जन्म गृद्धका हुआ है। कर्मोंका फल अवश्यही भोगना पडता है ॥ ५ ॥

## दृष्टांत कर्मोंके फलपर ६.

एक राजा नदीके किनारेपर हवा खाता था, नदीमें दो

आदमियोंको बहते देखकर राजाने अपने आदमियोंमेंसे एक
को कहा, इनको निकालो। उसने एकको निकाल लिया
मगर दूसरेको नहीं निकाला। राजाने कहा तुमने दूसरेको
क्यों नहीं निकाला है! उसने कहा मैं एक दिन थका
माँदा रास्तामें पडा था, उधरसे एक सवार आ निकला
उससे मैंने कहा थोडी दूरतक हमको तू अपने पीछे सवार
करके ले चल। वह मेरेको एक कमची मारके चल दिया।
इतनेमें एक हाथीवाला आ निकला, उसको मैंने कहा
थोडी दूरतक हमको हाथीपर सवार करके ले चल। उसने
हाथीपर मुझको सवार करके मेरे घरमें पहुँचा दिया। यह
वही पीलवान है जिसको हमने निकाला है। और जिसको
नहीं निकाला है वह वही सवार था ॥ ६ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर ७.

एक आदमी नित्यही कथा सुननेको जाता था। एक
दिनउसने कथामें सुना कि द्रव्यके लिये जो पुरुषका प्रयत्न
है सो निष्फल है, क्योंकि जितना उसके भाग्यमें होता
है, उतनाही उसको मिलता है; चाहे वह घरमें बैठा रहे
या चाहे जंगलमें चला जाय, भाग्यसे अधिक उसको
कदापि नहीं मिल सकता है। इस वार्तापर पुरुषको
विश्वास होना चाहिये। जो इसपर विश्वास करलेता
है उसको सुख होता है और जो नहीं करता है उसको
दुःख होता है। इस कथाको सुनकर और अपने भाग्य

पर विश्वास करके वह अपने घरमें बैठा रहा और उसने ऐसा निश्चय करलिया यदि घरके अंदरही द्रव्य मिलेगा तब लेवेंगे किन्तु बाहर प्रयत्न नहीं करेंगे। दो रोजतक वह भूखा मकानके अन्दर पडा रहा। तीसरे दिन उसको जंगलकी हाजत हुई, जब वह बाहर जंगल फिरनेको गया तब उसको खुशकीके सबबसे जंगल नहीं उतरा। एक झाडीको पकड करके जो उनने जोर किया वह झाडी जडसे उखड पडी। उसके नीचे मोहरोंका देगचा उसको दिखाई पडा। उसने अपने मनमें कहा मैंने तो प्रतिज्ञा करली है जो घरके अंदरही देवेगा तब लेवेंगे अब मैं अपनी प्रतिज्ञाको नहीं छोडूँगा। ऐसा विचार कर उस देगचेपर झाडीके वृक्षको डालकर अपने घरमें चला आया। रात्रिको चोरने आकर उसके घरमें सेंध लगाई। तब उसने चोरसे कहा-यहांपर क्या रक्खा है ? मैं तो आपही दो रोजका भूखा पडा हूँ, तुम जंगलमें जाकर अमुक झाडीके नीचे माल रक्खा है उसको ले जाओ। चोरने जंगलमें जाकर उस झाडीको हटाकर जो देखा तो उसके नीचे एक देगचा धरा है, मगर उसमें सांप बिच्छू सब भरे हैं चोर उसको उठा लाया और उसके घरकी छतको फाडकर उस देगचेको उसके ऊपर ऊंधा गिरा दिया जिसमें बिच्छू सांप सब उसको काट खाँय। वह तो बिच्छू सांप नहीं थे द्रव्य था सब मोहरें उसके खाटपर आकर गिरीं उसने वह सब उठाली क्योंकि उसकी प्रतिज्ञा

पूरी होगई । इसीपर कहा है जब वह देता है तब छतको
फाडकर ही देता है । भाग्यमें जो जिसके होता है उसको
हर तरहसे मिल जाता है । विश्वास होना चाहिये ॥ ७ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर ८.

किसी नगरमें एक आदमी बडा गरीब रहता था । एक
उसकी स्त्री थी और एकही उसका लडका था। उसने किसीसे
सुना कि इस नगरके बाहर महादेवजीका जंगलमें एक मंदिर
है जो आदमी वहां पर कुछ कालतक जाकर रह जाता है
उसको एक दिन महादेवजी आकर वर देजाते हैं। वह
अपनी स्त्री और लडकेको लेकर वहांपर जारहा । कुछ
कालके पीछे एक दिन महादेव और पार्वती वहांपर आये
और पार्वतीने उसकी स्त्रीसे पूँछा तुम यहांपर क्यों आये हो ?
उसने अपना सब दुःख पार्वतीसे सुनाया। पार्वतीने महादेवसे
कहा महाराज ! इनको वर दीजिये । महादेवने कहा यह
कर्महीन हैं इनको वरभी कुछ फल नहीं करेगा पार्वतीने कहा,
आप वर तो दीजिये फिर देखा जायगा । महादेवने उसकी
स्त्रीसे कहा-वरको माँगो । उसने कहा-मेरी उमर षोडश
वर्षकी होजाय।महादेवने कहा तथास्तु । उसकी उमर षोड-
शवर्षकी होगई और सुन्दर वस्त्रों और भूषणों करके भूषित
अप्सराके तुल्य होकर वह वहांपर बैठी रही । इतनेमें उस
वनमें एक राजा शिकार खेलता हुआ आ निकला राजाने
उस स्त्रीसे कहा तू इस जंगलमें क्यों बैठी है ? हमारे साथ

चल मैं तुझको रानी बनाऊंगा। राजाकी वार्ताको सुनकर वह राजाके साथ चल पडी। स्त्रीके इस हालको देखकर उसके पति को बुरा मालूम हुआ, फिर महादेवने उसके पतिसे आकर कहा तू भी वर मांग। उसने कहा मेरी स्त्री सूकरनी होजाय। महादेवने कहा तथास्तु। वह तुरंतही सूकरनी होगई। राजा उस सूकरनीको देखकर डरा और उसको जंगलमें हांक दिया। फिर महादेवने उसके पुत्रसे कहा तूभी वर माँग। उसने कहा मेरी माता जैसे पहले थी वैसी फिर होजाय। महादेवने कहा तथास्तु। फिर तिसको मनुष्यका शरीर होगया। फिर वह तीनों इकट्ठे होकर खाली हाथ घरको चले आये। तात्पर्य यह है जिनके भाग्यमें सुख नहीं उनको देवताभी सुख नहीं देसकता है। क्योंकि प्रारब्ध-कर्म किसीके हटानेसे भी नहीं हट सकता है ॥ ८ ॥

## दृष्टांत प्रारब्धपर ९.

किसी नगरमें एक महात्मा रहते थे। उनके पास बहुतसा द्रव्य आता था, उस द्रव्यको वह हमेशा खाते खिलाते रहते थे। एक दिन एक विरक्त महात्मा वहांपर आ निकले। उन महात्माकी प्रवृत्तिको देखकर उन्होंने उनसे कहा—यहां पर इस प्रवृत्तिरूपी कीचमें आप क्यों फँसे हैं? हमारे साथ चलिये समुद्रके किनारेपर जंगलमें रहकर निवृत्तिके सुखकोभी अनुभव करिये। उसकी इस वार्ताको सुनकर वह

महात्मा उसके साथ चलपडे और समुद्रके किनारेपर जङ्गलमें रहने लगे। एक जहाज कहींको जाता था वह उस किनारेके समीप पहुँचकर डूबने लगा, तब जहाज वाले सौदागरने मिन्नत मानीकी अगर मेरा जहाज डूबनेसे बच जायगा तब मैं दशवां हिस्सा द्रव्यका उस महात्माको दूंगा जो इस जंगलमें रहते हैं। दैवयोगसे उसका जहाज बचगया उसने दशवां हिस्सा द्रव्य लाकर उन्हीं प्रवृत्तिवाले महात्माके आगे धर दिया। तब उस द्रव्यको लेकर वह उसी जंगलमें मकान बनवाकर खाने खिलाने लगे। कुछ दिनोंके पीछे फिर वह विरक्त वहांपर जा निकले। उनके व्यवहारको देखकर कहने लगे तुम्हारे प्रारब्धका भोग बडा विचित्र है भाग्य बली है ॥ ९ ॥

## दृष्टांत प्रारब्धपर १०.

किसी राजाके घरमें एक लडका पैदा हुआ। राजाने ज्योतिषीको बुलाकर पूछा-इसकी आयु कितनी है। ज्योतिषीने कहा जब यह बारह बरसका होगा, तब फलाने टापूमें फलाने राजाके हाथसे इसकी मृत्यु होगी। राजाको इस बातके सुननेसे शोक हुआ। जब बारह बरसमें तीन महीना बाकी रहे तब राजाने उस लडकेको एक जहाज में बिठलाकर और खाने पीनेकी सब सामग्री उसमें जमाकर नौकरोंसे कहा इसको ऐसे जङ्गलमें मकान बनाकर छोड़ आओ जिसके गिरदे चारों तरफ पानीही हो। और जहांप

कोई भी न जासके। जहाज जब चला तब दैवयोगसे उसी टापूमें जा निकला। वहांपर पृथ्वीमें छोटासा मकान बनाकर सब बस्तुयें खाने पीनेकी उसमें जमाकर उसमें लडकेको छोडकर वह चले आये। जिसके हाथसे उसका मरण था दैवयोगसे उस राजाकोभी कहीं जानेका काम पडा वहभी जहाजमें बैठकर अपने कामको चला। रास्तामें ऐसा तूफान आया जो वह जहाज फट गया और लोग सब डूब गये, मगर वह राजा एक तख्ते पर बहता हुआ उसी टापूमें जा निकला जिसमें कि, वह लडका था। राजा किनारे लगकर उस जङ्गलमें घूमने लगा। तब वही मकान राजाको दिखाई पडा जिसमें वह लडका था। दरवाजा खोलकर जब राजा भीतर गये, तब उस लडकेके रूपको देखकर राजा मोहित होगये और उस लडकेसे अपनी आपदाका हाल कहकर राजाने कहा तुम किसी तरहका भी भय मत करो मैं आपकी सेवाको करूँगा। तब राजा वहांपर रहकर उस लडकेकी सेवा करने लगा और लडका भी राजासे बडा प्रसन्न रहने लगा। जब लडकेकी मृत्युका दिन आया तब लडकेने उससे कहा, ऊपर ताकपर चक्कू रखा है उसको उतारकर इस तरबूजेको काटिये। ज्योंही वह खडा होकर चक्कूको उतारने लगा तब चक्कू उसके हाथसे छूटा। और जहां नीचे वह लडका लेटा था उसीके पेटमें गिरा। वह लडका तुरन्तही मर गया। राजाको उसके मरनेका बडा रंज हुआ। आखिर एक

जहाज कहींसे उस रास्तासे आ निकला उसपर बैठकर राज
अपने देशमें चला आया। भावी जो है सो किसी उपाय सेभ
टलती नहीं है चाहे कितने उपाय करो ॥ १० ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर ११.

किसी नगरमें एकके घरमें विना ही हाथ पाँवके
लडका पैदा हुआ । जब वह लडका बडा हुआ, तब
घरवालोंने सोचा यह तो बेकाम है उलटी इसकी सेवा
करनी पडती है । उसको एक जङ्गलमें छोड आये । उसके
खानेकेलिये परमेश्वर नित्यही उसको उसी जगहमें पहुँचा
देता था । उसी नगरके बाहिर एक महात्मा रहते थे। एक
दिन किसी साहुकारने उन महात्मासे प्रार्थना की कि
मेरेको कुछ उपदेश करिये । महात्माने कहा–परमेश्वरपर
भरोसा रखकर हरवक्त तुम उसका भजन किया करो
उसने कहा परमेश्वर पर भरोसा रखकर जो हम हरवक्त
उसीका स्मरण करेंगे तब हमारे शरीरका निर्वाह कैसे होगा
महात्माने कहा, यहांसे कुछ दूर जङ्गलमें एक महात्मा रहते
हैं तुम्हारे इस प्रश्नका उत्तर वह देंगे तुम उनके पास जाओ।
वह साहूकार अपने घरसे रास्तामें खानेके लिये गठडीमें
कुछ बांधकर सबेरे उनकी तरफ चल पडा । रास्तामें नदी
पर वह स्नान करने लगा । इतनेमें एक चील उसकी भोज
नकी गठडीको उठाकर आकाशमें उडी, जब उस डंडेके
पास पहुंची तब वह गठडी उसके मुखसे भूमिपर गिर पड़ी

और इधर वह सेठ भोजनसे निराश होकर चलपडा। जब उनके समीप पहुंचा तब क्या देखता है उसी भोजनकी गठडीको वह महात्मा अपने डंडोंसे खोल रहे हैं। इसने जाकरके वही पूर्वोक्त प्रश्न किया, तब महात्माने कहा तू बडा मूर्ख है देख हमारे हाथ पांव भी नहीं और कोई आदमी हमारी सेवा करनेवाला भी नहीं है तब भी परमेश्वर नित्यही हमको इसी जगहमें पहुँचा देता है। क्योंकि हमारा उसीपर भरोसा है और तुमको तो परमेश्वरने हाथ पांव दिये हैं फिर जो तू भरोसा नहीं करता है तब इससे बढकर तेरी क्या मूर्खता होगी ? उस डण्डे ने कहाः—

> यो मे गर्भगतस्यापि पूर्वं संचितवान् पयः ॥
> शेषवृत्तिविधानाय स किं सुप्तोऽथवा मृतः ॥

जिस परमात्माने गर्भमें प्राप्त होनेपर उत्पत्तिसे पहले ही माताके स्तनोंमें दुग्धको उत्पन्न कर दिया था वही विश्वकी पालना करनेवाला देवता बाकी आयुके निर्वाह करनेमें न तो सोगया है और न मरा है, फिर भोजनकी चिन्ता करना मूर्खता नहीं तो क्या है ? इस वार्ताको साहूकार धारण करके घरमें चला आया ॥ ११ ॥

## दृष्टांत प्रारब्धपर १२.

तीन आदमी एक जगहमें बैठे थे और द्रव्यकी प्राप्तिके विषयमें विचार होरहा था। एकने कहा हमको तो पुरुषार्थ

करनेसे कभी भी कुछ नहीं मिलता है। जब परमेश्वर दयालु होजाता है तब कोई न कोई हमको घरमें बैठे बुलाकर कुछ न कुछ द्रव्यको देही देता है। इसीपर कहा भी है " जब होगा दयालु तब देगा बुलाके। " दूसरेने कहा जब होगा दयालु तब देगा कमची मारके।" उसने कहा भाइयो ! मैंने द्रव्यकी प्राप्तिके लिये बहुतसी कोशिश की, मगर कुछभी न मिला। तब घरके द्वारपर खाट बिछाकर मैं पडा रहा। एक सिपाही किसी ग्रामसे एक तेलकी कुपी लूटकर लाया था, उसने हमसे कहा दो आना पैसा हमको देकर तुम इस तेलको लेओ। मैंने उजर किया, उसने दो तीन कमची मेरी पीठपर लगाई। झट मैंने दो आना देकर तेलको लेलिया। वह चला गया, जब कि घरमें लेजाकर हमने उस तेलको जब उलटा तब उसमें एकसो अशरफी निकली। हमने उसी दिनसे जान लिया कि जब देता है तब मारपीट करकेभी देता है। तीसरेने कहा-सिपाही लोग बहुतसे खच्चरो पर खजाना लादकर लिये जाते थे। आगे रास्तामें कीच और रेता था। एक खच्चर उसी रेतामें धस गया सिर्फ उसके कानही बाहर नंगे रह गये थे और खच्चरोंको लेकर वे चले गये वह उसी जगहमें रहगया, क्योंकि उसको उन्होंने देखाही नहीं था, हम दोपहरको उधर जंगलमें गये, तब उस खच्चरने कान फटकारे। उसकी आवाज सुनकर मैंने जाकर रेतेको हटाकर

उस खच्चरको जब निकाला तब उसपरका खजाना सब मेरे हाथमें लगा। मैं लेकर अपने घरको चला आया। उसी दिनसे मैंने जान लिया कि जब भी देता है तब कानों को हिला करके भी देता है। तात्पर्य यह है जैसे जिसको द्रव्य मिलता है उसको उसी तरहसेही मिल जाता है। द्रव्यकी प्राप्तिमें पुरुषार्थ व्यर्थ हो जाता है; प्रारब्धही मुख्य है ॥ १२॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर १३.

किसी जंगलमें जाकर एक फंदकने जाल डाला। उस जालमें सुनहरे रंगका एक पक्षी अजीब तरहका फँस गया। थोडी देरके पीछे उस पक्षीने सोना हगा। फंदकने विचारा इस पक्षीको लेजाकर मैं राजाको भेट करूं। राजा मुझको बहुतसा इनाम देवेगा। अगर मैं इसको राजाको न दे दूँगा और अपने घरमें रखलूंगा तब जब राजाको मालूम होजायगा तब राजा पक्षीको भी लेलेगा और मुझको भी सजा करेगा। ऐसा विचार कर वह उस पक्षीको राजाके पास ले गया और उस पक्षीको राजाके प्रति देकर उसने कहा—हुजूर! यह सोना हगता है। राजाने पक्षीको जब अपने हाथमें लिया, तब वजीरने कहा हुजूर! कभी पक्षीने भी सोना हगा है? यह तो खाम ख्याल है। इस पक्षीको छोड दीजिये। वजीरके कहनेपर ज्योंही राजाने उस पक्षीको छोडा, त्योंही उसने आकाशमें जाकर सोना हगा;

उसको देखकर राजा और वजीर दोनों पश्चात्ताप करने लगे। इसीपर कहा है " भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम् " पुरुषका भाग्यही सर्वत्र फलीभूत होता है विद्या और पुरुषार्थ भाग्यके सामने काम नहीं देते हैं॥ १३॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर १४.

महाभारत होनेके पीछे धृतराष्ट्रने व्यास भगवान्से पूँछा। कौनसे पाप करके मैं अन्धा हुआ हूँ और मेरे सौ पुत्र मारे गये हैं? व्यास भगवान्ने कहा--हे धृतराष्ट्र तू पूर्व जन्ममें भी राजा था। एक दिन शिकार करनेको तू वनमें गया और एक मृगीके पीछे तूने घोडा दौडाया, वह मृगी दौडकर एक झाडीमें छिपगई। जब वह मृगी तेरे हाथमें न आई, तब तूने झाडीको आग लगादी। उस झाडीमें एक सर्पिणी रहती थी, उसके सौ बच्चे थे वे सौ के सौही जलकर मरगये और सर्पिणी अग्निके तापसे अन्धी हो गई, उसी पापसे तू अन्धा हुआ है और तेरे सौपुत्र भी मारे गये हैं। तुम्हारे अपने कर्मकाही यह फल है।

रामजीने भी कहा है:--

सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा॥ अहंकरोमीति वृथाऽभिमानः स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः॥ १॥

इस जीवको सुख और दुःखका देने वाला दूसरा कोई

भी नहीं है जो कहता है कि दूसरा देता है, यह उसकी कुबुद्धि, है, क्योंकि अपने २ कर्मोंकरके यह लोक गुँथा हुआ है ॥ १ ॥ १४ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर १५.

एक महात्मा विचरते हुए एक किसानके खेतमें जा निकले। वहां पर मकीके बालोंको वह किसान तोड रहा था। एक बालके साथ एक लाल रंगके दानेको देखकर वह महात्मा हँसे। इस किसानने उनसे पूँछा आप क्यों हँसे हैं? उन्होंने कहा मकीके इस बालमें जो फलाना दाना है वह फलाने देशमें एक मुरगी है उसका भोग्य है। किसानने कहा यहांसे इस दाने को कौन वहांपर ले जाकर उसको देगा? उन्होंने कहा उस मुरगीकी प्रारब्ध ले जायगी। किसानने कहा तुम झूँठे हो, मैं इसको अभी खा जाता हूँ। ऐसे कहकर किसानने उस दानेको अपने मुखमें डाल लिया। दैवयोगसे वह दाना ऊपर नाककी तरफ चढगया। महात्मा तो चले गये। दो तीन दिन पीछे उसका नाक फूल गया और उसको बहुत तकलीफ होने लगी, तब वह किसान वहांके सब वैद्योंके पास फिरा, परंतु किसीने भी उसकी मरजको न चीन्हा। तब एकने उससे कहा अमुक नगरमें एक वैद्य है तू उसके पास जा। वह उसी वैद्यके पास गया उसने उसके मरजको चीन्हकर उसको एक हुलासको सुंघनेके लिये दी, ज्योंही

उसने उस हुलासको सूँघा त्योंही उसको जोरसे एक छींक आई, वह दाना निकलकर दूर जाकर गिरा, वहांपर वही मुरगी फिरती थी, झट उसने उस दानेको उठाकर खा लिया । तब किसानने जानलिया कि महात्माका कथन सच था । जीवकी प्रारब्ध बडी तेज है ॥ १५ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर १६.

एक रामाधार नाम करके सूधा सादा ब्राह्मण एक दिन राजाके दरबारमें गया । राजाने उससे पूँछा हमारी मूठीमें क्या है ? तब उसने कहा-सारे जहानका हाल हम क्या जाने ? राजाने इसका अर्थ लगाया, पंडित कहते हैं तुम्हारी मूठीमें सब जहान है । उसका हाल हम क्या जानते हैं। राजा पंडित की इज्जत करने लगा । दरबारके लोग पंडितजीसे ईर्षा करने लगे। पंडितको भोला भाला जानकर एक दिन दरबारवालोंने सिखाया कि राजा सिंहासनपर आकर बैठे, तब तुम राजाके सिरसे मुकुटको उतार देना। उसने कहा अच्छा, ज्योंही राजा आकर सिंहासनपर बैठ गये तब उसने राजाका मुकुट सिरसे उतार दिया । उस मुकुटमें एक सांपका बच्चा बडा जहरीला निकला, राजाने पंडितको बहुतसा इनाम दिया और आगेसे भी अधिक उसकी इज्जत राजा करने लगा । तब फिर दरबारके लोगोंने उस ब्राह्मणको सिखाया । आज तुम राजाको दर्बारके बाहर बुलाकर राजाके सिर पर हाथ फेरना । ज्योंही राजा

दरबारमें आकर बैठे त्योंही पंडितने बाहर खडे होकर राजाको बुलाया ज्योंही राजा उसके पास गये त्योंही दरबारका मकान गिर पडा और दो चार आदमी दबकर मर गये और दसबीस घायल हो गये। राजाने प्रसन्न होकर पंडितको जागीर दे दी। जब ऐसी २ तदबीरोंसे दरबारके लोग पंडितकी हानी न कर सके तब राजाको सिखाया कि पंडितजी बडे शिकारी हैं और सिद्धभी हैं इनको शिकारमें अपने साथ लेकर चलना चाहिये। दूसरे दिन राजा जब शिकारको निकले तब पंडितसे भी चलनेके लिये कहा। पंडितजी भी बरछेको लेकर चल पडे। जंगलमें जब सिंह सामनेसे निकला तब सब लोग तो इधर उधर भाग गये और पंडितजी डरके मारे एक वृक्षपर चढ गये। उसी वृक्षके नीचे वह सिंह खडा होकर गुर्राने लगा, दैवयोगसे पंडितजीके हाथ कांपने लगे, तब वह बरछा नीचेको गिरा और सिंहके मुखमें पडा। उस बरछेसे सिंहका गला कटगया और वह सिंह तुरंत मर गया। सिंहको मरा देखकर राजा तिस पंडितकी और अधिक इज्जत करने लगे। तात्पर्य यह है जब दिन अच्छे आते हैं तब उलटा किया हुआ भी सीधा हो जाता है और जब दिन बुरे आते हैं तब सीधा किया हुआ भी उलटा हो जाता है। सारांश कर्मोंका फल अवश्यही भोगना पडता है॥ १६॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर १७.

एक मूर्खने किसी वैद्यसे हर्रके गुणोंको सुना और हकीमी करने चला। आगे एक आदमीके पेटमें दर्द था, उसने दर्दकी दवाई पूँछी, उसने पांच हर्र कूटकर खानेको बताई। जब उन हर्रोंको उसने खाया, तब उसको बहुतसे दस्त आये, दस्तोंके आनेसे उसका पेट साफ होगया और अच्छा हो गया। फिर एक कुम्हारका गधा खो गया था उसने उससे गधेके मिलजानेका इलाज पूछा। उसने कहा दो हर्रको रगड कर पीजाओ गधा तुमको मिल जायेगा। उसने दो हर्रको रगड कर पीलिया, थोडी देरमें उसको जंगल की हाजत हुई। ज्योंही वह बाहर झूडीपर जंगल फिरनेको गया, त्योंही उसको वहांपर चरता हुआ उसका गधा मिल गया। उसको सिद्धाई लग गई और नगरमें सिद्ध वैद्य मशहूर हो गया थोडे दिनों पीछे दूसरे राजाने उस पर चढाई की। उसने अपनी विजयका इलाज पूछा। इन्होंने कहा-दो २ हर्रको हरएक सिपाही रगडकर पीजायँ, विजय होजायगी। उस दूसरे राजाने भी यह वार्ता सुनी, जो उनके नगरमें एक सिद्ध रहता है और उसने दो २ हर्र रगडकर पीजानेको कहा है। उसने बहुतसी हर्र मँगाकर हर एक सिपाहीको दश २ हर्र रगडकर पिला दिया, इस राजाके सिपाहियोंको तो दोही दो दस्त आये और उस राजाके सिपाहियोंको इतने दस्त आये जो वह बेहोश हो गये। तब

इस राजाके सिपाहियोंने उसको लूट मारकर भगा दिया। अब यह राजा भी सिद्धजीको बहुत मानने लगे। तात्पर्य यह है जब दिन अच्छे आते हैं तब उलटा करनेसे भी सीधाही हो जाता है और सब मित्रही बनते जाते हैं॥१७॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर १८.

किसी पंडितने एक राजासे कहा—हमारी कथा सुनिये, प्रथम तो राजाने टालाटोल किया, जब पंडितने बहुतसा कहा; तब राजाने कहा आप क्या लावेंगे? पंडितने कहा—जो हमारे भाग्यमें होगा सो मिल जायगा। राजाने अपने मनमें कहा—हम इसको एकही रुपया देवेंगे देखें तो इसको भाग्यसे क्या मिलता है? ऐसा विचार करके राजाने पंडितसे कहा कथा बाँचो। पंडित एक महीना तक बराबरही कथा बाचता रहा। जब समाप्तिका दिन हुआ तब राजाने एक रुपया पंडित की कथा पर चढाया। पंडित उसी एक रुपयेको लेकर चला गया। जिस बनियांसे रोजही पंडित करजा लेकर खाता रहा था, उसके पांच रुपये पंडित पर चढगये थे। पंडितने उसको एक रुपया देकर कहा, एक रुपया हमको मिला है इसको तुम लेलो और चार रुपये तुम्हारे बाकी रहे बरन हमारी पोथीको रखलो। जब तुमको हम रुपया देवें, तब अपनी पोथीको लेजायँगे। पंडितकी वार्ताको सुनकर

बनियांने पांच रुपयाकी चिठ्ठी पंडित की पोथी पर चढाकर कहा कल मैं आपको खानेके लिये सीधा भेजूंगा आप उसीको बनाकर खाना। पंडितजी तो अपने डेरेपर चले गये और इधर राजाके मनमें आया कि पंडितको मैंने कुछ भी नहीं दिया, इस कारण पंडित मनमें दुःखी होकर चला गया है, इसका मेरेको पाप हुआ है, इसका प्रायश्चित्त करना उचित है। तब राजाने एक लौकीका फल मँगाकर उसमें एक सौ अशरफी भरकर फिर उसको बंद करके एक कंगालको देदिया। इधर सबेरे बनियाका आदमी पंडितके लिये तरकारी लेनेंको चला। इधर कंगालके पास लौकीको देखकर एक पैसेमें उससे उसनें लौकीको मोल लेलिया और सीधेके साथ पंडितजीको वह दे आया। पंडितजी जब रसोई बनाने लगे और उस लौकीको जब उन्होंने काटा तब उसमें एकसौ अशरफी पंडितजीको मिलीं। उनको पाकर पंडितजी बडे प्रसन्न हुये। फिर तीसरे पहर पंडितजी जब हवा खानेको निकले, तब रास्तामें राजासे भेंट हुई। पंडितको प्रसन्नवदन देखकर राजाने उसका हाल पूँछा। तब पंडितने सब कह सुनाया। राजाने कहा सच है जो पुरुषका भाग्य होता है सो अवश्य ही मिल जाता है, इसमें पुरुषका प्रयत्न काम नहीं देता है ॥ १८ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर १९.

एक पंडित किसी ग्राममें कथा बांचनेके लिये गये और वहांके सब लोगोंसे मिले, परंतु सबने कथा सुननेसे इनकार

किया। तब निराश होकर ग्रामके बाहर चले आये। वहांपर महादेवजीका एक मंदिर था, उस मंदिरमें आकर मनमें विचार करने लगे, मनुष्य तो कोई भी हमारी कथाको नहीं सुनता है हम अब देवताको अपनी कथा सुनावेंगे। पोथी खोलकर वह मंदिरमें कथा बांचने लगे। जब एक दिन समाप्तिमें बाकी रह गया और पंडित कथा बांचकर अपने डेरेपर गया, तब महादेवजीने हनुमान्‌से कहा कल इस पंडितकी कथा समाप्त होगी, इसकी पूजामें तुम क्या चढाओगे ? हनुमान्‌ने कहा मैं इसको एक हजार रुपया दिलवाऊँगा। बाहर मंदिरके एक साहूकार कृपण बनिया खडा सुनता था उसने विचार किया, पंडितजीसे हम पांचसौमें ठेका करलें, तब हमको पांचसौ मुनाफा होजायगा। बनियाने पंडितसे जाकर कहा कल मन्दिरमें तुम्हारी कथाका भोग पड़ेगा सो आप हमसे ठेका करलें अर्थात् हमसे पांचसौ रुपया ले लें, जो चढत चढे सो हमारी। पंडितजीको उम्मैद न थी, इस लिये पंडितजीने बनियांसे पांच सौ लेकर कह दिया, कल आठ बजे तुम मंदिरमें आ जाना, हम कथाकी समाप्ति करेंगे जो चढेगा तुम लेलेना। दूसरे दिन पंडित स्नान करके मंदिरमें जाकर कथाको बांचने लगे, बनिया भी वहांपर पहुँच गया। आठबजे पंडितजीने कथाका भोग पाया। बनियां पास बैठा देखता है कि, अब हनुमान् हजार रुपया चढावैंगे, जब हनुमान्‌ने कुछ न चढाया और एक घंटा बीतगया तब पंडितजी पोथी बांधके चलने लगे। तब बनियाने कहा

थोड़ी देर और बैठिये, वह और बैठे । फिर जानेलगे, तब फिर बनियाने कहा, थोडासा और बैठिये । इसी तरह करते २ जब कि बारह बजगये तब पंडितने कहा जजमान हमको भोजन बनाना है अब हम नहीं बैठेंगे । पंडितजी अब चले गये और कुछ भी न चढा तब बनियाने क्रोधसे एक लात हनुमान्‌को मारी और कहा ऐसे झूठ बोला, हजार रुपया चढाऊँगा । ज्योंही लात मारी त्योंही बनियाका पांव महाबीरके साथ चिपट गया । बनियाने जब अनेक उपाय करे और पांव न उखडा तब महादेवजीने हनुमान्‌से पूँछा । ब्राह्मणको हजार रुपया तुमने दिलवाया कि नहीं ? महावीरने कहा महाराजा पाँच सौ तो इस कृपण बनियासे दिलवाया है और पांच सौके बदले इसका पाँव रहन कर लिया है, जबतक यह पाँच सौ और उसको नहीं देगा तबतक इसका पाँव नहीं छूटेगा । बनियाने हाथ जोड कर पांच सौ रुपया देनेका करार किया तब उसका पाँव छूटा । बनियाने घरमें आकर पांच सौ रुपया उस ब्राह्मणको और दिया । ब्राह्मण एक हजार रुपया लेकर घरको चला आया । सारांश जिस तरहसे जिसको मिलना होता है उसको उसी तरहसे मिलता है ॥ १९ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर २०.

एक साधु कहींको जानेके लिये जहाजमें बैठ गया जब जहाज वहांसे चला, तब जहाजवालेको मालूम होगया कि

इस साधुके पास एक सौ अशरफी हैं, क्योंकि उसको गिनते हुए उसने देख लिया था। जहाजीका मन बेईमान हो गया, जहाजीने उसको ऊपर अलग सुलाया और रात्रिको जहाजीके लड़केको जब नींद आई तब लडकेने उस साधुको नीचे भेज दिया और आप उसकी जगहमें जाकर सोरहा। जब आधी रात बीतगई तब वह जहाजके ऊपर गया और साधु जान कर अपने लडकेको उसने कत्ल करदिया। जब कत्ल करके अशरफियोंको खोलने लगा तब उसको मालूम हुआ कि अपने लडकेकोही कत्ल करडाला है, तब वह रोनेलगा, साधुकोभी यह हाल मालूम हुआ। उसनेभी अफसोस किया और उन अशरफियोंको गरीबोंके प्रति खिलादिया। अब देखिये बुरे संकल्पका भी फल तुरत मिल जाता है और कर्मका फल कदापि विना भोगे नहीं छूटता है ॥ २० ॥

## दृष्टान्त कर्मके फलका २१.

एक जमींदारकी स्त्री मरगई। उसने दूसरी शादी की। पहली शादीमें उसके दो लडके हुएथे, फिर दूसरी शादीमेंसे भी दो लडके पैदा हुए। जब पिछली स्त्रीके भी लडके बडे होगये, तब भी वह स्त्री पहलेवाले लडकोंको हमेशाही दुःख दे और तंग करे। एक दिन वह चारों भाई खेतमें काम करते थे, उस स्त्रीने चार रोटियाँ विष डालकर पकाई और चार रोटी बिना विषवाली बनाईं और अपने आदमीको देकर कहा—यह चार रोटी तो मेरे लडकोंको देना और यह

चार हमारी सौतके लडकोंको देना। उसने जाकर वैसेही रोटियें उनको बांटकर देदीं। चारोंने आपसमें उन रोटियोंको मिलाकर खा लिया। थोडी देरके पीछे उस स्त्रीके लडके तो दोनों मरगये और सौतके लडकोंको कै शुरू होगई अन्तको वह बचगये। अब देखिये बुराईका बदला हाथोंहाथही उस स्त्रीको मिलगया ॥ २१ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर २२.

किसी नगरमें एक पुरुष बडा निर्धन रहता था, दैवयोगसे एक महात्मा उस नगरमें जा निकले, उस निर्धनको देखकर महात्माको उसपर बडी दया आई। महात्माने पारस निकालकर उसको दिया और कहा छः महीना इसको तुम अपने पास रखो और इसके साथ छुवानेसे लोहा सोना होजाता है सो तुम छःमहीनातक जितना सोना चाहो बनालेना और छः महीनाके पीछे हम आकर आपसे अपना पारस लेवेंगे। ऐसा कहकर तिसको पारस देकर वह साधु कहींको चले गये। और पारसको लेकर उसने अपने घरमें रख छोडा और दूसरे दिन वह बाजारमें लोहा खरीदनेके लिये गया; तब लोहेका भाव कुछ तेज होगया था, उसने कहा दो चार दिनोंके पीछे जब कि कुछ सस्ता होजायगा तब खरीदेंगे। फिर दो चार दिनके पीछे लोहा खरीदनेका गया तब कुछ और लोहा महँगा होगया। तब उसने कहा और दो चार दिनके पीछे जब कि कुछ सस्ता होजायगा तब लेवेंगे।

इसी तरह करते २ छः महीनें व्यतीत होगये और वह इसी फिकरमें ही रहे कि कुछ सस्ता होजायगा तब खरीद करेंगे । इतनेमें वह साधु वहांपर जा पहुँचे और उसने अपना पारस मांगा, तब उसने देदिया । महात्माने कहा तुमने कुछ सोना बनाया ? उसने सब हाल लोहेके महंगे होनेका कहा और यह भी कहा मैं सस्ते होनेकी उमेदपरही रहा । महात्माने कहा तुम्हारे घरमें कुछ लोहा है ? उसके घरमें एक सूई थी वह ले आया, उस सूईको महात्माने ज्योंही पारसके साथ छुवाया वह सोना होगई । तब महात्माने कहा अरे मूर्ख ! अगर रुपया तोला भर भी सोना होजाता तबभी तो तुमको एकके वीस होजाते । परंतु बिना भाग्यके किसीको भी कुछ नहीं मिलता है । यह तो दृष्टांत है । दार्ष्टांतमें अगर किसीको महात्मासे परलोकके सुधारका साधन मिल भी जाता है, तब भी वह आज करूंगा कल करूंगा इतनेमें काल उसको आकर ग्रसलेता है ॥ २२ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर २३.

एक ब्राह्मण किसी नगरको जाता था । रास्तामें एक कूपपर वह सुस्तानेलगा, उसके समीप खेतमें एक बालक सोया था । एक सांपने आकर उस बालकको काटखाया तब वह मरगया । फिर वह सांप शिकारी बनकर बनके पक्षियोंको मारने लगा । तब ब्राह्मणने उससे पूँछा तू कौन है ? उसने कहा मैं काल हूं जिससे जिसकी मृत्यु लिखी

होती है वैसाही रूप धारण करके मैं उसको मारताहूँ। ब्राह्मणने कहा हमारी मृत्यु कैसे होगी ? उसने कहा—गंगाके बीचमें मगरका रूप धारण करके मैं तुमको मारूंगा। इस बातको सुनकर वह राजपूतानामें गंगासे दूर एक राजाके पास जाकर नौकर रहा और राजाके छोटेसे लड़केको खिलाने लगा। वह बालक बड़ा सुंदर था इसलिये ब्राह्मणका उससे बड़ा स्नेह होगया। जब वह लड़का जवान हुआ तब उसको कहीं विदेशमें जानेका काम पडा। उस ब्राह्मणको और कुछ नौकरोंको साथ लेकर वह चला। रास्तामें गंगाजीके किनारेपर उतरकर वह स्नान करने लगा और सुवर्णकी अँगूठीको दान कर उस ब्राह्मणको देनेके लिये बुलाया, ज्योंही ब्राह्मणने गंगामें पांव रक्खा मगर उसको पांवसे पकड़ खैंचकर गहरे जलमें ले जाकर खागया। राजाका लडका भी उसका अफसोस करके अपने घरमें चला आया। तात्पर्य यह है जिस तरहसे जिसकी मृत्यु लिखी है उस तरहसे होती है। रामायणमें भी कहा है:—

दोहा.

सुनो भरत भावी प्रबल, बिलखि कही मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण, यशअपयशविधिहाथ ॥१

सोरठा.

कर कोइ कोटि उपाय, भावी टारे न टरै।
रहे सकल समझाय, तजो न रावण सीयको ॥ २ ॥

## दोहा.

निश्चय भावीको कहूं, प्रतीकार जो होय।
तो नलसे हरिचन्दपै, विपति न भरते कोय ॥ ३ ॥

अवश्यंभाविभावानां प्रतीकारो यदा भवेत् ।
तदा दुःखैर्न लिप्येरन्नलरामयुधिष्ठिराः ॥ १ ॥

अवश्यभावीका यदि प्रतीकार होता तब नलराजा और रामजी तथा युधिष्ठिर कदापि दुःखको प्राप्त न होते ॥१॥

इसी तरहके अनेक भावीके अवश्य होनहार मिलते हैं अर्थात् वह टरते नहीं हैं ॥ २३ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर २४.

किसी राजाकी एक महात्मापर श्रद्धा होगई। राजाने उस महात्माको अपने घरमेंही रहनेके लिये जगह दे दी महात्मा राजाके घरमेंही रहनेलगे। कुछ कालके पीछे राजाके लड-केकी शादी हुई और राजाकी स्नुषा राजाके घरमें आकर अपने पतिके साथ रहनेलगी। एक दिन रात्रिको वह लडकी पतिके पास सोई थी और लंप जल रहा था। अर्द्धरात्रिको लडकीकी नींद खुलगई, लडकेकी तलवार ऊपर टंगी थी, लडकीने उसको उतारकर और म्यानसे निकालकर ज्योंही हाथमें लेकर उसकी धारको देखने लगी त्योंही उसके हाथसे जो वह लडकेकी गर्दनपर गिरी त्योंही उससे उसकी गर्दन

कटगई और तुरंतही वह लडका मरगया। तब लडकी बडे जोरसे चिल्लाकर रोने लगी। तुरंतही राजा और राजाके नौकर चाकर सब वहांपर पहुँचगये। राजाने उससे पूछा किसने इसको मारा है? उसने कहा एक तपस्वीके रूपवाले आदमीने आकर इसका गला काट दिया है और ज्योंही मैं चिल्लाई वह भागगया। और तो वहांपर कोई और तपस्वी-के रूपवाले नहीं थे, बस वही महात्मा पकडे गये जो कि राजाके घरमें रहते थे। राजाने साधुके भेसमें जानकर उनको फांसी तो न दिया, परन्तु उसके हाथ कटवा कर देशसे उनको निकलवा दिया। वह साधु घूमते हुए काशीमें जा निकले। वहांपर एक भारी ज्योतिषीके पास जाकर उन्होंने अपने हाथ कटजानेका हाल कहा और पूछा मैंने इस जन्ममें तो कोई भी अपराध नहीं किया है फिर मेरे हाथ क्यों कट गये? और पंडितकी स्त्रीको देखा कि वह पंडितको बहुतही सताती है और पंडित बेचारे कुछभी बोलते नहीं हैं तब फिर उसने पंडितसे पूछा पूर्व जन्ममें आप कौन थे और यह स्त्री कौन थी। पंडितने कहा मैं तो पूर्वजन्म कौवा था और यह गधी थी इसकी पीठपर घाव था मैं उसको अपनी चोंचसे नित्यही काटता था एक दिन ज्योंही मैं इसकी पीठको काटने लगा तो मेरी चोंच इसकी पीठमें फँसगई हम दोनों गंगाजीमें गिरकर मरगये। गंगाके प्रभावसे मेरा और इसका ब्राह्मणके घरमें जन्म हुआ है और इसका मेरा फिर सम्बंध

हुआ। अब यह अपने पूर्व जन्मके बदलेको लेतीहै। कर्मका फल अवश्यही भोगना पडता है। फिर पंडितने कहा तुम पूर्वजन्ममें एक वनमें तप करते थे। एक दिन एक गैया कसाईसे भागकर तुम्हारे आगेसे निकल गई। कसाईने आकर तुमसे कहा कोई गैया इधरको गई है ? तुमने हाथसे इसारा किया। कसाईने आगे जाकर उस गैयाको पकड लिया और वह गैया मारीगई। किसी पूर्व जन्मके पुण्यसे वह गैया राजाकी लडकी हुई और वह कसाई राजाका लडका हुआ। दोनोंका विवाह हुआ रात्रिको वह लडकी उस लडकेकी तलवारको देखने लगी वह उसके हाथसे जो छुटी कि उस लडकेका गला कट गया, वह बदला उतर गया और तुमने जो अपने हाथोंसे इशारा किया था इसी पापसे तुम्हारे भी हाथ कट गये। तात्पर्य यह है कर्मोंका फल अवश्य ही भोगना पडता है, बिना भोगे नहीं जाता है ॥ २४ ॥

## दृष्टान्त प्रारब्धपर २५.

किसी मौलवीपर एक आदमीने जबरन् जनाका दावा किया, मगर जिस औरतके साथ जबरन जनाका दावा हुआ था उसके साथ मौलवीने कुछ भी नहीं किया था। मौलवीकी तरफसे वकीलने बहुतसा जोर लगाया मगर मुद्दईकी तरफसे सबूती पूरी पहुँचगई थी, इसलिये जजने मौलवीको छे महीनाकी कैदका हुकुम देदिया। मौलवीसाहिब तो जेलखानेकी हवा खाने लगे, उसके वकीलने विचारा बिना अपराध किये

तो आदमीको सजा होती नहीं फिर मौलवीको क्यों हुई ? वह इसकी खोज करने लगा तब उसको ठीक २ हाल मालूम होगया जो इस औरतके साथ तो मौलवीने कुछ भी नहीं किया था मगर इससे पहले दो तीन औरतोंको उसने जबरन् बिगाडा था; वकीलको विश्वास होगया कि उसी कर्मका इसको फल हुआ है ॥ २५ ॥

## प्रारब्धकर्मपर–श्लोक.

पत्रं नैव यदा करीरविटपे दोषो वसन्तस्य किं
नोलूकोप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ।
धारा नैव पतंति चातकमुखे मेघस्य किं दूषणं यत्पूर्वं
विधिना ललाट लिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः ॥ १ ॥

करीरके वृक्षमें जो पत्ता नहीं होता है तब इसमें वसंत ऋतुका क्या दोष है ? और जो उलूकको दिनमें नहीं दीखता है तब सूर्यका इसमें क्या कसूर है । चातकके मुखमें जो मेघकी बून्द नहीं गिरती है तब इसमें मेघका क्या दोष हैं । जो कुछ विधाताने पुरुषके मस्तकपर लिखदिया है उसको कौन हटा सकता है ॥ १ ॥

मज्जत्वम्भसि यातु मेरुशिखरं शत्रूञ्जयत्वाहवे
वाणिज्यं कृषिसेवनादिसकलाविद्याकलाः शिक्षतु ॥
आकाशं विपुलं प्रयातु खगवत्कृत्वा प्रयत्नं परं नाभव्यं
भवतीह कर्मवशतो भाव्यस्य नाशः कुतः ॥ २ ॥

चाहे पुरुष समुद्रमें गोता लगावे या चाहे सुमेरुपर चला जाय और चाहे व्यापार और खेती तथा नौकरी आदि संपूर्ण विद्याओंमें निपुण होकर शिक्षा करनेवाला हो और चाहे पक्षीकी तरह महान् आकाशमें गमन कर जाय तब भी जो नहीं होना है वह किसी प्रकारसे भी नहीं होता है और जो होना है वह किसी तरहसे भी नहीं हटता है ॥ २ ॥

पूर्वजन्ममें जो धर्म वा अधर्मरूपी कर्म किये हैं वेही उत्तरजन्ममें प्रारब्ध बन जाते हैं फिर उस उत्तरजन्ममें जो कर्म किये जाते हैं वह फिर उससे उत्तरजन्ममें जाकर प्रारब्ध कहे जाते हैं । बीज वृक्षकी तरह कर्मोंका अनादि प्रवाह चलाही जाता है । जो लोग पूर्व जन्मको नहीं मानते हैं किंतु वर्तमान जन्मकोही मानते हैं और जीवको अनादि भी नहीं मानते हैं किंतु सादिही मानते हैं उनके मतमें अनेक दोष आते हैं और उनका ईश्वरभी राग द्वेषवालाही साबित होता है । सो दिखाते हैं जब जीव सादि यानी उत्पत्तिवाला है तब उसकी उत्पत्ति किसने की ? किसी दूसरे जीवने की या आपसे आप उत्पन्न हुआ है ? जीव तो जीवको उत्पन्न कर सकताही नहीं है, क्योंकि उसमें इतनी बुद्धि नहीं है और न इतनी उसमें शक्ति है और जीवका स्वरूप चेतन है, चेतनकी उत्पत्ति न तो चेतनसे होसकती है और न जडसे होसकती है । क्योंकि इसमें कोई दृष्टांत नहीं मिलता है और फिर वह आपसे आपभी उत्पन्न नहीं हो सकता है । एक तो ऐसा कोई मतवाला भी नहीं जानता है, दूसरे कार्य जितना

होता है वह सब किसी कर्ता करकेही उत्पन्न किया जाता है बरन् ईश्वर भी जगत्‌का कर्ता साबित नहीं होगा। जैसे जीव आपसे आप पैदा होजायगा तैसे घटपटादि पदार्थभी सब आपसे आपही हुआ करेंगे ऐसा तो नहीं देखते हैं। इससे साबित होता है जीव आपसे आप पैदा नहीं हो सकता है । अगर ईश्वरको वह जीवका पैदा करनेवाला मानेंगे तब हम पूछेंगे कि ईश्वरने जीवको किससे पैदा किया है । अपनेही आत्मासे पैदा किया है या अपनी कुदरत मायासे पैदा किया और क्यों पैदा किया है ? जीवोंके पैदा करने बिना उसका क्या हरज था और पैदा करनेसे उसका क्या फायदा हुआ और किस देशमें किस जगहपर बैठके पैदा किया और किस सामग्रीसे घटकी तरह पैदा किया या बिनाही सामग्रीके जीवोंको पैदा किया ? फिर वह ईश्वर उनका न्यायकारी है या अन्यायकारी है ? अगर कहैं ईश्वरने जीवको अपनेसेही पैदा किया है तब हम पूँछते हैं वह ईश्वर देहधारी है या देहरहित है । अगर कहा देहधारी है तब अपने शरीरसे उसने जीवको पैदा किया है या किसी दूसरी चीजसे । अगर दूसरी चीजसे कहैं तब उनका कथन झूठा है क्योंकि दूसरी चीजकी वह दुनियांकी उत्पत्तिसे पहले मानते नहीं हैं अगर अपने शरीरसे कहैं तब ईश्वरका ईश्वर कौन चीजका है और कहां है इसमें कोई भी पूरी २ दलील नहीं मिलती है। फिर वह देहधारी होनेसे हाजर नाजर नहीं बनैगा । सूर्यका दृष्टान्त भी नहीं बनता क्योंकि सूर्य एकदेशी है

रात्रिमें उसका प्रकाश सब जगहमें नहीं है और जो देह-
धारी होता है वह जन्म मरणवाला भी होता है, ईश्वर भी
इनका ऐसा होजावेगा। फिर देहधारीका पैदा करनेवाला भी
कोई होता है ? जैसे पिताका बाप तब ईश्वरकाभी कोई
पैदाकरनेवाला दूसरा ईश्वर होगा। तब अनवस्था दोष
आवेगा अगर ईश्वरको निराकार चैतन्य स्वरूप मानो तब
निराकारसे निराकार जीवकी उत्पत्तिमें भी कोई दृष्टान्त
नहीं मिलताहै। बल्कि निराकारसे साकारकी उत्पत्तिमें भी
कोई दृष्टांत नहीं मिलता है इसीसे साबित होता है कि, जैसे
ईश्वर अनादि है तैसे जीव और माया भी अनादि हैं।
फिर ईश्वर पूर्णकाम है उसको किसीके पैदाकरनेकी जरूरत
भी नहीं है, इसी वास्ते उसका कोई हरज भी नहीं था
और न उसका कोई देशकाल ही है, क्योंकि वह निराकार
होनेसे सब जगहमें पूर्ण है इसी वास्ते वह शरीरसे भी रहित
है। फिर वह न्यायकारी भी है क्योंकि किसीको राजा
किसीको गरीब किसीको सुखी किसीको दुःखी बनाता,
यदि ऐसा मानोगे तब उनका ईश्वर भी न्यायकारीही नहीं
साबित होगा और उन्हींके मतानुयायी शुभ कर्मोंवालोंको
नरक और अशुभवालोंके दोजख भेजेगा क्योंकि वह अन्या-
यकारी है। बस इन्हीं युक्तियोंसे साबित होता है कि,
जीव अनादि है और कर्म भी अनादि हैं॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधरेण पेशावर-
नगरनिवासिना विरचितदृष्टान्तमञ्जूषानामकग्रन्थे चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

## पञ्चमाध्याय

★

अब इस अध्यायमें विद्यापर कुछ लिखा जायगा ।

### दृष्टान्त विद्याके गुणोंपर १.

एक पंडित महाशय नित्यही अपने लडकोंको उपदेश करता था कि, यह राज और लक्ष्मी हमेशा नहीं रहती है । आज अपनी है कल दूसरोंकी होजाती है और दौलतको अनेक प्रकारके डर भी हैं । प्रथम तो चोरोंका हमेशा डर रहता है, फिर सम्बन्धियोंका डर रहता और राजाका भी डर रहता है । परंतु विद्यारूपी लक्ष्मीको न तो चोरोंका भय होता है और न सम्बन्धियोंका और न राजा प्रजाका भय होता है । और न उसके रखनेके लिये कोई जगहही खोजनी पडती है । और जबतक पुरुष जीता है तबतक किसी दूसरेके पासभी किसी प्रकारसे नहीं जाती है और दान करनेसे हमेशा बढती जाती है और जहां तहां प्रतिष्ठाको ही पैदा करती है । राजाकी प्रतिष्ठा केवल अपनेही देशमें होती है विदेशमें जानेसे नहीं होती है और विद्वानकी प्रतिष्ठा सब देशोंमें होती है, इसलिये विद्याको संपादन करो, क्योंकि विद्याही संपूर्ण सुखोंकी खान है । फिर विद्यारूपी धनको वारस भी बांटकर नहीं ले सकते हैं और इस लोक तथा परलोकमें विद्याको ही लोक पूछते हैं । बाप दादा और जाती आदिकोंको कोई नहीं पूछता है और

विद्वान् की राजा बाबुओंके साथ तुरंत ही मुलाकात हो जाती है। मूर्ख उनके द्वारपर खडा भी होने नहीं पाता है, फिर विद्वान् ही सत्य असत्यका विवेचन कर सकता है और विद्याही ईश्वरसे भी मिला देती है, बस विद्या ही ईश्वरस्रूप भी है इसलिये येनकेन प्रकार करके विद्याका संपादन करना सब लोगोंको उचित है ॥ १ ॥

## दृष्टान्त विद्यापर २.

एक समयमें शामदेशमें बडा अकाल पडा और अनेक प्रकारके उपद्रव होनेलगे तब वहांसे हजारों आदमी अपनी जान बचानेके लिये विदेशमें चले गये। उनमें जो ग्रामीणोंके लडके पढे लिखे औरं अकलमंद थे वह तो जाकर राजाके पास दीवानी वगैरह भारी २ दरजोंमें नौकर होगये और जो वजीरोंके लडके मूर्ख थे वह जाकर ग्रामोंमें भीख माँगने लगे ॥ २ ॥

## दृष्टान्त विद्यापर ३.

विद्या नाम हुनरका भी है कोई भी हुनर उसको अवश्य संपादन करना चाहिये। क्योंकि किसी हुनरको भी जो जानता है वह अपने देश और विदेशमें भी जाकर दुःखी नहीं रहता है फिर छोटे लडकेकी रुचिकी तरफ देखकर उसको हुनर सिखाना चाहिये जिस लडकेका मन

पढनेमें नहीं लगता है या उसकी बुद्धि विद्याके संपादन करनेमें शिथिल है तब विचार करके देखे कि जिस हुनरके सीखनेमें उसका मन लगता है चित्रकारीमें या किसी दूसरे हाथके कसबमें उसीके संपादन करनेमें उसको लगावे, उसमें वह अवश्य तरक्की कर जायगा । अगर लडकेका बाप ऐसे नहीं करेगा तब वह लडका मूर्खही रहजायगा । इसी वास्ते बहुतसे लडके थोडासा पढकर मूर्ख रहजाते हैं । क्योंकि उनके मा बाप इस बातका ख्याल नहीं करते हैं। एक अमीरने अपने लडकेको विद्या संपादन करनेके लिये किसी उस्तादके पास बिठलाया एक सालतक उस्तादने उसके साथ बडी मेहनत की, तब भी उस लडकेको कुछ न आया, जब उसका बाप उस लडकेको मारने लगा तब एक अकलमन्दने कहा, जिसकी बुद्धि विद्यापढनेके काबिल नहीं है क्या वह मार पीटसे थोडा पढ जायगा ! इसकी किधर रुचि है सो देखनी चाहिये उस्तादने कहा यह तसबीरें खैंचता रहता है । अकलमंदने कहा इसको किसी मुसव्वरके पास बिठलावो । जब वह मुसव्वरके पास बिठलाया गया तब थोडेही दिनोंमें उस विद्यामें वह बहुतसी तरक्की कर गया इस दृष्टांतका यह तात्पर्य है कि, जिस हुनरके सीखनेमें लडकेकी रुचि हो वही हुनर उसको सिखाया जाय तब तो वह हुनरवाला हो सकता है नहीं तो वह मूर्खही रहजाता है ॥ ३ ॥

किसी नगरका राजा एक दिन अपने मंत्रीको साथ लेकर शिकार करनेको चला। रास्तामें एक कुएपर चार लडकियें पानी भर रहीं थीं, उनमें एक लडकी बडी सुन्दर थी उसको देखकर राजाने मंत्रीसे कहा इस लडकीके पिताके नाम तथा मकान पूछलेवो। वजीरने सब पूछलिया, क्योंकि राजाका मन उस लडकीपर मोहित होगया था। राजाने वजीरसे कहा उस लडकीके पिताको बुला करके कहो वह अपनी लडकीकी शादी मेरेसे करे। उसको वजीरने बुला-करके कहा। उसने कहा राजा कुछ हाथका हुनर सीखा है? वजीरने कहा राजाको हाथके हुनरकी क्या जरूरत है जिनके पास लाखोंकी आमदनी है। उसने कहा राजाका क्या भरोसा है। आज इसका है कलको दूसरेका होजायगा। जबतक राजा हाथका हुनर कोई भी नहीं सीखेगा तबतक मैं राजाके साथ अपनी लडकीकी शादी नहीं करूंगा। वजीरने राजासे उसका सब हाल कहा राजाने कहा आपही आकर मेरे घरमें मुझको सिखाजाया करे। वह आकर रुमालोंको बुननेका कसब राजाको सिखाने लगा। जब कि, राजा सीखगये तब उसने अपनी लडकीकी शादी राजाके साथ करदी कुछ कालके पीछे एक दिन राजा शिकारमें अकेले पडगये और भीलोंने राजाको लेजाकर अपने घरमें कैदकर लिया। इधर राजाके विना वजीर बडी चिंतामें पडे और राजाकी खोज करने लगे। इधर राजाने उनको दूसरे दिन

एक अशरफी देकरके कहा इसका रेशम लावो मैं तुमको उसके रुमाल बना देऊंगा । उनसे तुमको बडा लाभ होगा । वह रेशम खरीदकर लाये राजाने रूमाल बना दिया। उसको उन्होंने नगरमें जाकरके बेचा तब उनको बहुतसा रुपया मिला । दूसरे दिन राजाने एक रूमाल ऐसा बनाया जिसमें सब अपना हाल बनावटके हरफोंमें लिख दिया और उसने कहा इसको वजीरके पास जाकर बेचना और सौ रुपयासे कम मतलेना ? वह वजीरके पास लेगये । वजीरने सब हाल पढकर उनको कैद करलिया और उनका मकान पूँछकर फौज लेकर राजाको वहांसे छुडाकर ले आया। हाथके हुनरने राजाकी जान बचाई । इसलिये लडकोंको कोई न कोई हुनर अवश्य सिखाना चाहिये ॥ ४ ॥

## दृष्टान्त विद्यापर ५.

किसी नगरके राजाका लडका विद्या नहीं पढता था, किंतु कबूतरबाजीकाही उसको शौक था । कोई भी उस्ताद उसको न पढासका । तब एकने राजासे कहा मैं इसको पढाऊंगा । राजाने उसके हवाले कर दिया । उसने लडकेसे कहा तुम्हारे पास कितने कबूतर हैं ? लडकेने एक सौ बताया। उस्तादने कहा एक तो यह कम हैं दूसरे सुंदर जातिके नहीं हैं एक सौ अच्छे कबूतर और खरीदो । लडकेने एक सौ और खरीदे अब उस्ताद भी उसके साथ कबूतरबाजी करने लगे । एक दिन उस्तादने कहा बिनानामोंके धरनेके ठीकर

कबूतरोंका पता नहीं लगता है इसलिये इनके मैं नाम धर देताहूं । उस्तादनें अकारसे लेकर सर्ववर्णोंको उनके नाम धरदिये और जब लडकेसे कहे--काको लाओ तब वह दूसरा ले आवे । उस्तादने कहा यह ठीक नहीं है । पहले इनके नामोंको लिखकर याद करो तब पीछे पूरी पूरी कबूतरबाजी होगी । अब उस्ताद उसको अकारादि वर्ण सिखाने लगे जब कि सब उसको याद होगये तब एक किताब लिखकर कबूतरोंके रंगवगैरह उसको पढाये, फिर दूसरी, फिर तीसरी किताब उसको पढाई जब वह कुछ पढगया और उसको विद्याका रस आने लगा तब उस्तादने कहा कबूतर नहीं उडाते हो ? उसने कहा कबूतर उडाना भले आदमियोंका काम नहीं है बस थोड़े कालमें वह पंडित होगया । तात्पर्य यह है कि जब लोग तोते और मैना वगैरहको पढा सिखा लेते हैं, तब फिर मनुष्योंके बच्चेका सिखाना पढाना कौन मुश्किल है, किन्तु उस्ताद लायक होना चाहियें । विना विद्याके पुरुष किसी उपदेशको भी ठीक २ नहीं समझ सकता है, इसलिये विद्याका पढनाही जरूरी है ॥ ५ ॥

## दृष्टान्त विद्यापर ६.

किसी धनी बनियेका लडका बडा मूर्ख निकला, बनियाने उसको पढाने लिखानेके लिये बहुतसे यत्न किये, मगर वह कुछभी न पढा, तब बनियाने विचार किया कोई ऐसी हिकमत करनी चाहिये जिससे मेरे पीछे यह खराब न हो ।

बनियाके मकानके पास एक मसजिद थी उसकी छाया रोज बनियाके आंगमनमें आकरके पडती थी उसी जगह बनियाने बहुतसा द्रव्य लडकेसे चुराकर गाडदिया। जब कि बनिया मरने लगा, तब लडकेसे उसने कहा मेरे मरजानेके पीछे एक तो तुम छायामेंही दूकानपर जाना। दूसरा प्यारा भोजन खाना। तीसरा जिसको करजा देना फिर माँगना नहीं। चौथा जब कि तुमको धनकी जरूरत पडे तब मसजिदके नीचेसे निकाल लेना। यह चारों बातोंको वहीपर लिख लेवो। लडकेने उन चारोंकोवहीपर लिखलिया। कुछ रोजमें बनियां मरगया, तब लडकेने अपने घरसे लेकर दुकान तक सब छप्पर बनवादिये और नित्यही उम्दा २ लड्डू जलेबी वगैरहको खाने लगा। और जिसको करजा दे फिर मांगै नहीं। इन तीनही बातोंके करनेसे सब धन उसका थोडेही कालमें उजड गया और खाने विना मरनेलगा और विचार करने लगा मसजिदके नीचेसे कैसे धन निकाला जाय? इसी विचारमें रहने लगा। एक दिन उसके पिताके पूज्य एक महात्मा वहां पर आनिकले और लोगोंसे उस बनियाका हाल उन्होंने पूँछा। लोगोंने कहा वह बनिया तो मरगया है मगर उसका पुत्र बडा मूर्ख विद्यमान है। महात्मा जाकर उसके पुत्रको मिले और हाल पूछा तब लडकेने अपना सब हाल कह सुनाया। महात्माने कहा विद्याहीन होनेसे तुमने अपने पिताके उपदेशको ठीक २ समझा नहीं है इसीसे तू

दुःखी होगया है। पिताने जो तुमको छाया २ में दुकान-
पर जानेका उपदेश किया था; उसका यह तात्पर्य है कि
सूर्यसे पहले दूकानपर जाना और सूर्यके अस्त होजाने पीछे
दूकानको बंद करके आना! और मीठा खानेका यह तात्पर्य
है जब तुमको भूख लगे तब खाना और करजा देकर न माँग
नेका यह तात्पर्य है कि, किसीको करजा मत देना। और
मसजिदके नीचेसे धनको निकालनेका यह तात्पर्य है, तुम्हारे
घरके आंगनमें जहांपर उसकी छाया पडतीहै वहांपर धन
गडा है उसको खोदकर तुम निकाल लेवो। लडकेने उस
जगहको खोदा तब उसको धन मिलगया। महात्मा थोडे
दिन वहां पर रहगये और लडकेको सिखा पढा बुद्धियान्
बनाकर फिर चले गये। तात्पर्य यह है कि विद्याके विना
महीन बात भी समझमें नहीं आती है, इसलिये अपनी संत-
तिको विद्याका उपार्जन अवश्य कराना चाहिये ॥ ६ ॥

## दृष्टान्त विद्यापर ७.

किसी नगरमें एक विद्वान् बडा चतुर रहता था और
बातोंकी कमाई खाता था। एकबार वह बाजार जाकर
और एक ऊँची जगहपर खडा होकर कहने लगा एक रुप-
यासे लेकर सौ रुपया तक बातको मैं बेचताहूँ जिसको
खरीद करनी हो सो खरीदे। लोग बहुतसे जमा होकर
खरीदने लगे। उसी नगरके बनियाने अपने लडकेको पचीस
रुपया देकर बाजारमें किसी सौदाके खरीद करनेके लिये

भेजा था, वह लडका भी उसी जगहमें खडा होगया जहाँ पर वह बातोंको बेंच रहा था और उससे कहा पचीस रुपयावाली एक बात हमको भी दीजिये। उसने लडकेसे रुपया लेकर कहा "जहांपर कि दो आदमी परस्पर लडतेहों वहां पर खड़े मत होना"। लडका बातको लेकर घरमें चला आया। बापने पूँछा सौदा लाये हो? लडकेने कहा एक बातको पचीस रुपया देकर मैं एक आदमीसे खरीद करके आया हूँ। बापने कहा वह ठग है हम उसकी बातको नहीं खरीदेंगे चलो हमको बताओ वह कहां है हम अपना रुपया फेरकर लावेंगे। लडकेने साथ जाकरके बतादिया उसने रुपया वापस कर लडकेसे कहा कहो हम तुम्हारी बातपर अमल नहीं करेंगे। लडकेने कहा हम तुम्हारी बातपर अमल नहीं करेंगे। ऐसे कहकर लडका अपने घरमें चला आया। एक दिन लडका हवा खानेको जाता था, सडकके किनारे पर राजाका और वजीरका लडका परस्पर गेंद खेलते थे। बनियाका लडकाभी वहांपर तमाशा देखनेके लिये खडा होगया। वह लडके गेंद खेलते २ आपसमें लड-पडे और खूब मार पीट हुई। बनियांका लडका भी खडा होकर देखता रहा जब सब लडके अपने २ घरको चले गये, तब बनियाका लडका भी अपने घरको चला आया। रात्रिको राजाके लडकेने राजाके आगे फरयाद की। और वजीरके लडकेने वजीरके आगे फरयाद की। दूसरे दिन

राजाने दरबारमें लडकोंके मुकदमाको पेश किया। राजाके और वजीरके लडकेके जब इजहार होचुके तब वजीरने कहा तुम दोनों अपने २ गोलसे विना किसी गवाहको लिखवावो। राजाके लडकेने कहा बनियाका लडका खडा होकर तमाशा देखता था वही हमारा गवाह है। वजीरके लडकेने कहा हमारा भी वही गवाह है। उसके नामसे समन जारी हुआ। रात्रिको बादशाहके लडकेने उसको कहला भेजा अगर तू मेरी गवाहीको नहीं देगा तब मैं तेरेको मरवादूँगा। इधर वजीरके लडकेने कहला भेजा अगर तू मेरी गवाहीको नहीं देवैगा तब मैं तेरेको मरवाडूँगा। दोनोंके संदेशोंको सुनकर बनियाके लडकेने अपने बापसे कहा तुमने तो पचीस रुपयाको प्यार किया मगर मेरी अब जान जाती है। दोनों जबरदस्त हैं, किसकी बातको न मानूं ? लडकेकी बातको सुनकर बनियाभी चितामें पडा। तब लडकेने कहा उसी बातोंके वेचने वालेके पास चलो। वही कोई बातको बतावैगा। लडकेको लेकर बनिया उसके पास गया। उसने कहा एकसौ रुपया देवो तब एक बात बतलाऊँगा तुम छूटजावोगे। बनियांने सौरुपया उसको दिया उसने लडकेसे कहा जिस कालमें तुम राजाके सामने जावो उस कालमें तुम पागल बनजाना अर्थात पागलोंवाला व्यवहार करने लगजाना। तुमको छोड देवैंगे। दूसरे दिन जब लडका अदालतमें गया और लडकेसे पूछने लगे तब वह धोती खोलकर

नाचने लगा और फिर गाने लगा, फिर रोने लगा। लडकेकी इस तरहकी चेष्टाको देखकरके वजीरने राजासे कहा यह तो पागल है, कहीं पागलकी भी गवाही हो सकती है। राजाने उसको छोड दिया और मुकदमेको खारिज करदिया तात्पर्य यह जितने पंडित वकील और बारिष्टर हैं यह सब बातोंको ही बेचते हैं विद्वान लोग बातोंकी कमाईको खाते हैं। इस लिये विद्याका उपार्जन करना कराना बहुतही अच्छा होता है ॥ ७ ॥

## दृष्टान्त गुणपर ८.

किसी नगरका राजा रात्रिके समय अपने राजमंदिरके ऊपर हवा खानेके लिये टहल रहा था। एक वारगी राजाकी दृष्टि जो जंगलकी तरफ पडी तब उसने देखा कि जंगलमें बडी भारी रोशनी हो रही है और बड़ा खेमा लगा है, खेमाके बाहर सोने चांदीकी चौबोंको लेकर चोपदार खड़े हैं, राजाने वजीरको बुलाकर कहा जावो तुम दर्याफ्त करो यह खेमा किसका है। वजीर पालकीमें सवार होकर वहांपर गये और चोबदारोंसे पूँछा कि यह खेमा किसका है? उन्होंने कहा यह खेमा मदारीका है, वजीरने चोबदारोंसे इतना पूँछकर मदारीसे मुलाकात की और आकरके राजासे सबहाल कहा, राजाने मदारीको बुलाकरके कहा कुछ अपना गुण हमको दिखलाओ। उसी समय सभा लग गई और तमाशा होने लगा,

मदारीने थोडासा मोम अपनी पगडीसे निकालकरके उसका एक विच्छू बनाकर जमीनपर धरकर उसपर एक मंत्र पढा तब वह बिच्छू चलने लगगया। कभी इधर कभी उधर वह दौडने लगा। राजाकी गोदमें राजाका लडका बैठा था उसने उठकर ज्योंही बिच्छूको हाथमें पकडा त्योंही बिच्छूने उसको काटा वह मरगया,तब राजा दुखी होकर रोने लगा। वजीरने राजासे कहा जिसने मोमके बिच्छूमें जान-डालदी है वह क्या अपने मंत्रसे तुम्हारे लडकेमें जान नहीं डाल सकेगा। उसकी खुशामद करो! राजाने मदारीकी खुशामद की। अब मदारी लडकेको झाडने लगा, थोडी देरके पीछे लडका उठकर फिर खेलने लगा और मदारीने फिर उसी मोमके बिच्छूपर मंत्र पढकर फूँका वह फिर मोमका मोम बनगया। राजाने मदारीको बहुतसा इनाम दिया मदारीने कहा राजा! मेरे पास केवल एक बिच्छूका ही पूरा मंत्र है, उसीकी बदौलत मैं लाखों रुपयोंको कमाता हूं। तात्पर्य इस दृष्टांतसे यह है कि कोई गुण हो अर्थात् किसी प्रकारकी विद्या हो किन्तु पूरी हो क्योंकि जितने ऋषि मुनि बडे २ पूज्य होगये हैं वे सब विद्यारूपी गुण करकेही पूजे गये हैं। विद्याहीन निर्गुण न तो यह पहलेही पूजा गया है और न इदानीं कालमेंही पूजा जाता है। इसलिये अपनी संततिको विद्यारूपी गुणकरके सुशिक्षित करना चाहिये ॥८॥

इस वार्ताको सब लोग जानते हैं कि उपकारसे बढ़कर कोई भी धर्म नहीं है, इसलिये अब उपकारियोंके दृष्टांतोंको लिखते हैंः—

## दृष्टान्त उपकारपर १.

एक आदमी विदेशमें चला, एक दिन चलते २ उसको आगे दो रास्ते मिले। एक रास्ता छोटासा था और उसमें बहुतसे छायावाले वृक्ष भी थे। दूसरा रास्ता चौडा था मगर उसमें कोई वृक्ष नहीं था और वह जंगलको जाता था और जो छोटासा रास्ता था वह बस्तीको जाता था। वह आदमी उस जंगलवाले रास्तामें चलपडा जब एक मीलभर गया तब रास्तामें चार पांच बडे बंदर बैठे हुए उसको दिखाई पडे। बंदरोंने उसका रास्ता रोक रखा और उसको आगे जाने न दिया जिधरसे वह आगे जानेको चलै बंदर सब उसपर घुर २ करके दौडें और वह हटजाय। आखिर पीछेको लौटा और एक दरख्तके तले आकर सोरहा। बंदरभी सब उसके चारों तरफ थोडी २ दूरपर सोरहे जब सबेरा हुआ तब उसने विचार किया ये बंदर हमको आगेको तो जाने नहीं देते हैं इसलिये पीछेको लौटकर उस छोटे रास्तासे चलैं। ऐसा विचार कर वह मुसाफिर पीछेको लौटकर उसी जगहपर आया जहांपर वह छोटा रास्ता फूटा था और उसी रास्तामें चल पडा। और वह बंदर भी उसके आगे पीछे नाचते कूदते चल पडे। जब वह एक डेढ मील तक

चला तब उसको चार पांच दूकानें रास्ताके किनारे पर मिलीं वहांपर बैठ गया और हलवाईसे उसने अपना सब हाल कहा। हलवाईने उससे कहा इन बंदरोंने तुम्हारी जान बचाई है अगर ये बंदर तुमको न रोकते तब तुम आगे घोर जंगलमें चले जाते और वहां व्याघ्र या सिंह कोई न कोई तुमको मार कर खाजाता। क्यों कि आगे भी दो चार आदमी उस रास्तामें मारेगये हैं। जो आदमी भूलकर उस रास्तामें चला जाता है उसको ये बंदर रोककर फिर इसी जगहमें पहुँचा जाते हैं। ये बन्दर बडा उपकार करते हैं। उस मुसाफिरने दो रुपयाकी मिठाई लेकर उस बंदरोंको खिलाई। बंदर मिठाई खाकर अपने जंगलको चले गये और वह आदमी अपने रास्तापर चला गया। तात्पर्य यह है जब जानवर होकर भी उपकार करते हैं तब आदमीका उपकार करना मुख्य धर्म है॥ ९॥

## दृष्टान्त उपकारपर १०.

एक आदमी जंगलके रास्तासे किसी ग्रामको जाता था। एक टीलेके ऊपर उसने देखा एक पक्षी परोंसे हीन पडा है और पक्षी उसकी सेवा कर रहे हैं। कोई तो मुखमें उसके अपनी चोंचसे दाना डार रहा है और कोई अपनी चोंचसे पानी लाकर उसके मुखमें डाल रहा है उस पक्षहीन पक्षीका भी जीवन बना है। इस आदमीने विचार किया जब पक्षी

उपकार कररहे हैं तब फिर उपकार करना मनुष्यका तो मुख्य धर्म है ॥ १० ॥

## दृष्टान्त उपकारपर ११.

एक हकीम समुद्रके किनारेपर बैठके समुद्रकी सैर करता था, इतनेमें एक कौवा उडता हुआ समुद्रके किनारेपर गिर-पडा। एक दूसरे कौवेने आकर समुद्रके पानीको अपनी चोंचमें भरकर उस कौवेकी गुदामें डाला। थोडी देरके पीछे उस कौवेका मल गिरा और वह उडगया। उस कौवेके पेटमें दर्द था, समुद्रका खारा पानी पडनेसे उसका पाखाना उतरा और वह कौवा अच्छा होकर उडगया। हकीमने उसी जग-हसे यह हिकमत सीखी जिसके पेटमें दर्द हो पिचकारी नमकवाला पानी डालकर उसकी गुदामें लगाता वह अच्छा होजाता है। उपकार करना बडा भारी धर्म है ॥ ११ ॥

## दृष्टान्त उपकारपर १२.

एक आदमी जंगलके रास्तासे किसी ग्रामको चला-जाता था। रास्तामें उसने देखा कि, बहुतसे मूसे कतार बांधर चले जाते हैं। उनमें एक मूसा अधा था, उसके मुखमें एक घासका तिनका पकडा पडा था। उस तिनकेका दूसरा सिरा आँखवाले मूसाके मुखमें पकडा हुआ था और वह उस अन्धे मूसेको अपने पीछे लगाये हुए चला जाता था। उसी मूसेको देख उस आदमीने मनमें कहा जब मूसे

भी अपनी जातिपर उपकार करते हैं तब फिर मनुष्यका तो उपकार करना मुख्य धर्म है ॥ १२ ॥

## दृष्टान्त उपकारपर १३.

अमेरिकाके बरफानी पहाडमें एक ग्रामवालोंके पास एक कुत्ता था । वह कुत्ता रास्तामें भूले हुए मुसाफिरोंकी जानको बचाता था । बहुतसे आदिमियोंकी जानको उसने बचाया । उस कुत्तेके गलेमें एक शराबकी भरी हुई शीशी बँधी रहती थी । जब कोई मुसाफिर उसको दिखाई पडता; उसके पास जाकर उस शीशीको वह आगे करता । वह अदमी उससे शराब पीकर गरम हो जाता । फिर वह कुत्ता उसको अपने पीछे लगा लेता था और उसको ग्राममें पहुँचा देता था और येही उस कुत्तेका मुख्य रोजका काम था । जब कुत्ते विजातियोंके ऊपर उपकार करते हैं तब फिर सजातीपर उपकार करना तो मनुष्यका मुख्य धर्म है ॥ १३ ॥

## दृष्टान्त उपकारपर १४.

अमेरिकाके बरफानी पहाडमें एक आदमीने एक कुत्तेको पाला था । वह कुत्ता उनका पहरा चौकी करे एक दिन लडका कुत्तेको साथ लेकर घूमनेको निकला, एक पहाडके नीचे वह जारहा था, इतनेमें बर्फ बरसने लगी । वह लडका और कुत्ता पहाडकी कंदरामें खडे होगये । ऊपर पहाडसे बडा भारी एक बर्फका टुकडा गिरा तब कन्दराका रास्ता

बंद होगया, रात्रिभरमें अपने पंजोंसे खोदकर कुत्तेने एक छोटासा रास्ता बनाया और उसी रास्तासे निकलकर कुत्ता अपने घरमें जा पहुँचा। घरवाले लडकेका रास्ता देखते थे, जब कुत्ता पहुँचा और लडका न पहुँचा तब उन्होंने जाना लडका कहीं बर्फमें दबकर मर गया है। कुत्तेको उन्होंने रोटी खिलाई कुत्तेने खाई और एक रोटी मुखमें पकड करके उसी कंदरामें लडकेको लाकरके कुत्तेने दी। दो रोज तक कुत्ता एक रोटी सबेरे और एक रातको मुखसे पकडकर उस लडकेको बराबर पहुँचा देता। तीसरे दिन एकने कहा यह कुत्ता रोज मुखमें रोटी पकडकर लेजाता है इसके पीछे चलकर देखना चाहिये। यह कहां किसके वास्ते लेजाता है। वह कुत्तेके पीछे २ आये कुत्ता उसी बर्फके रास्तेसे कंदराके भीतर गया और भीतरसे कुछ लडकेका आवाज भी जरासा सुनाई पडा; तब वे जानगये कि इसीके अंदर लडका है। बर्फको हटा करके उन्होंने अपने लडकेको निकाला। फिर कुत्तेकी वह बडी खातिर करने लगे। अब देखिये कुत्तेने कितना बडा उपकार किया अर्थात् उसकी जानको बचाया ॥ १४ ॥

## दृष्टान्त उपकारपर १५.

कोई एक जहाज समुद्रमें किनारेसे तीन या चार मीलके फासलोंपर जब पहुँचा; तब बडे जोरसे तूफान आया और

वह जहाज तूफानसे फटगया, तब जहाजके तमाम लोग समुद्रमें जारहे । उस जहाजमें एक अंग्रेजके साथ एक भारी कुत्ता था वह अँग्रेज और उसका कुत्ता भी समुद्रमें गिरा। दोनों तैरकर किनारेकी तरफ जाने लगे । थोडी दूरतक तैरकर अंग्रेज थक गया उससे तैरा न गया तब कुत्तेने जब पीछे देखा तो मालिक हमारा तैर नहीं सकता है । तब कुत्तेने पीछे लौटकर अपनी पूँछको अपने मालिकके हाथमें थमाया और उस अंग्रेजने भी अपने कुत्तेकी पूंछको हाथसे पकडलिया । अब आगे २ कुत्ता और पीछे २ वह अंग्रेज दोनों किनारेकी तरफको चले । थोडी थोडी दूर जाकर कुत्ता पीछेको मुँह करके अपने मालिकको देख ले । कुत्तेके मनमें यह बात थी, कि ऐसा न हो जो कहीं मालिकका हाथ छूटजाय। धीरे २ कुत्तेने मालिकको किनारेपर लाकरके पहुँचा दिया । सूखी जमीनपर आकर दोनों थकनेके सबबसे बेहोश होकर गिरपडे । चार घंटेतक बराबर दोनों बेहोश पडे रहे । जब उनको होश आया तब लोक उनको ठिकानेपर लेगये । वह अंग्रेज भी भारी दरजेपर नौकर था। जब वह अंग्रेज अपने ओहदेपर गया तब कुत्तेके उपकारको रात दिन याद रक्खे । उसने उस कुत्तेकी खिदमतके लिये चार आदमियोंको नौकर रखा और अपनेसे अधिक

कुत्तेको आराम देता रहा। देखो कुत्ते भी कैसा उपकार करते हैं ॥ १५ ॥

अब सत्संगके फलको दिखाते हैंः—

## दृष्टान्त सत्संगपर १६.

एक न्यारिया नित्यही राजाके घरपर जाकर साफकर आता। उसको राजाका द्वार झाडते हुए बारह बरस बीतगये। लोगोंने उससे कहा तुम जो नित्यही राजाका द्वार झाडते हो तुमको कुछ मिलताभी है? उसने कहा महाराजका द्वार है कभी न कभी कुछ मिलेगाही। यह खबर राजाको भी पहुँची। राजाने एक दिन एक हीरा द्वारकी धूलमें फेक दिया। उसने जब द्वार झाडा तब हीरा उसको मिला, उस हीराको पाकर वह बडा प्रसन्न हुआ। परंतु फिर भी नित्यही राजाका द्वार सबेरे जाकर नेमसे वह झाड आवे। तब एकने उससे कहा अब क्यों तू नित्यही राजाके द्वारको झाडता है? उसने कहा जिस द्वारसे हमको हीरा मिला उसको त्याग कर देना उचित नहीं है, उसका उपकार मानना वाजिब है। यह तो दृष्टांत है। दार्ष्टांतमें जिससत्संगसे पुरुषको आत्मज्ञानरूपी हीरा मिलता है स सत्संगका पुरुषको कभीभी त्याग करना वाजिब नहीं है। उसे सत्संगमें जाकर नित्यही सेवा करनी चाहिये ॥१६॥

## दृष्टान्त सत्संगदोषपर १७.

एक धनुर्दास नामकरके बडे दुराचारी हुए । वह एक दिन रघुनाथजीके मेलेपर रंडीको साथ लेकर गये और वहांपर मांस मद्यको खाकर रंडीके सिरपर अपने हाथसे छाता लगाकर मेलामें इधर उधर घूमने लगे और उनका मन ऐसा उस रंडीमें लगा हुआ था कि, वह जिधरको कहती उधरकोही वह चलपडे । अर्थात् मनसे भी अधिक उसकी आज्ञामें प्रवृत्त थे । उसको रामानुजजीने देखकर कहा जैसा कि, इसका मन रंडीमें संसक्त होरहा है अगर ऐसा ईश्वरमें आसक्त होता तब न मालूम इनको कौनसी पदवी मिलती । ऐसा विचार करके रामानुजजीने धर्नुदास-जीको बुलाकर उस रंडीके सहित सन्मार्गका उपदेश किया । उनके उपदेशका ऐसा असर उनके मनमें हुआ कि, उसी कालसे वह दोनों ईश्वरपरायण होगये और तपस्वी बनगये । महात्माके संगका ऐसाही फल है कि, तुरंतही पुरुषको सुधार देता है ॥ १७ ॥

## दृष्टान्त सत्संगपर १८.

अफलातून हकीम हमेशा अपने लड़केको बुरे ख्यालोंवा-ले लड़के और लड़कियोंके पास बैठने न देता था । क्योंकि उसको सोबतके असरका बड़ा भारी ख्याल रहता था । एक दिन अफलातूनका लड़का एक बदचलनवाले आदमीके

साथबातें कर रहा था, इतनेमें अफलातून हकीमने उसको देखलिया और बुलाकर एकांतमें कहा—हे प्यारे बेटे ! फिर ऐसा काम मत करना, क्योंकि ऐसे आदमियोंके साथ बातचीत करनेमें भी बट्टा लगता है। लडकेने कहा आपका कथन ठीक है, मगर मैं इतना नादान और बेवकूफ नहीं हूँ कि ऐसे आदमियोंमेंसे मुझको कुछभी नुकसान पहुँचे। हकीम साहिब लडकेकी बातको सुनकर चुप होगये। थोडीसी देरके पीछे उन्होंने एक कोइला अपनी अँगीठीसे निकालकर लडकेको दिया और कहा यह कोइला गरम नहीं है इसलिये इससे तुम्हारा हाथ नहीं जलेगा। लडकेने उस कोइलाको बापके हुकुमसे हाथमें ले लिया। हाथ काला होगया और जो सुपेद कपडे पहना था, उनपरभी उस कोइलेका काला दाग लगगया। लडका विचार करके कहने लगा, कहांतक मैं इस कोइलेकी स्याहीसे बचूंगा। बाप इस बातको सुनकर हँसा और बापने कहा हे प्यारे बेटे ! अगरचे कोइलासे तुम जलोगे नहीं, तब भी हाथ तो तुम्हारे जरूरही काले होजायँगे। इसी तरह बुरे आदमियोंकी सोबतसे अगर तुम अपनी चतुराईसे नुकसानको नहीं भी उठावोगे तब भी लोगोंमें बदनाम जरूरही होजावोगे, इस लिये इनसे बातचीत भी मत करो॥ १८॥

## दृष्टान्त सत्संगदोषपर १९.

किसी साधुका ऐसा नियम था कि, नित्यही जब तक गंगामें स्नान किये हुए पुरुषका दर्शन न करता तब तक

भोजनको भी न करता। जब गंगामें स्नान किये हुए पुरुषका दर्शन कर लेता तब भोजनको भी कर लेता। वह साधु घूमताफिरता एक ग्राममें जा निकला, वहांपर उसको गंगामें स्नान किया हुआ कोईभी पुरुष न मिला तब वह उसदिन भूखा रह गया, फिर दूसरे तीसरे दिन भी उसको कोई भी न मिला, इसी तरहसे तीन दिन जब उसको विनाही अन्न खानेके गुजरगये तब चौथे दिन एक खाली मकानमें वह जाकर लंबा पडा रहा। उस मकानमें नित्यही कथा वार्ताका सत्संग होता था, रात्रिके समयमें वह क्या देखता है कि एक सफेद गौ बडी दुर्बल वहांपर आकर लेटने लगी और थोडी देरके पीछे वह सुंदर स्त्री बनकर स्वर्गको चली गई। फिर एक काले रंगकी गौ आकर उसी भूमिमें लौट पौट होकर सुन्दर स्त्रीके रूपको धारण करके वह भी स्वर्गको चली गई। पीछे एक बडा दुर्बल बैल आकर उसी भूमिपर लौटपौट होकर सुन्दर पुरुषके रूपको धारण करके जब वह भी स्वर्गको जाने लगा, तब उससे साधुने पूँछा यह सुफेद गौ और काली गौ कौन थी और तुम कौन हो? उसने कहा श्वेत गौ तो गंगाजी थीं और काली गौ यमुना थीं और मैं पुष्करराजतीर्थ हूं। हमतीनोंमें जब पापी पुरुष स्नान करते हैं तब हम उनके पापोंसे दुर्बल हो जाते हैं। यह सत्संगकी भूमि है, इसपर लोटनेसे हमारे पाप दूर होते हैं। सत्संगके माहात्म्यके आगे तीर्थोंका माहात्म्य तुच्छ है

तुम मूर्ख हो जो सत्संगकी महिमाको नहीं जानते हो । तीन रोजसे भूखे पडे तो सत्संगकी एक लेशमात्रके साथ भी किसी तीर्थका माहात्म्य नहीं पहुँचाता है । ऐसे कहकर वह पुरुष चला गया और साधुको भी सत्संगके माहात्म्यका ज्ञान हो गया और उसने अपने हठको छोड दिया और मजेसे खाने पीने लगा और सत्संगसे ही प्रेम करने लगा । इसका फल अपरोक्ष है याने तुरंतही मिलजाता है ॥ १९ ॥

## दृष्टान्त सत्संगपर २०.

समुद्रमें किसी टापूको एक जहाज जाता था । एक दिन वह जहाज किसी बडे भारी गिरदाबमें फँस गया । जब बहुतसे यत्न करनेसे भी वह जहाज गिरदाबसे बाहर निकल न सका, तब जहाजका कप्तान सोचने लगा । इतनेमें कप्तानकी निगाह पडी कि, एक तरफ गिरदाबके मछली आती जाती थीं । उनको देख कप्तानने पहले थोडा अनाज उस तरफ गिराना शुरू किया । जब बडी २ मछलियें उस तरफसे आनेलगी तब २ रस्सोंके साथ अनाजके बोरोंको बाँध करके उसने गिराना शुरू किया । वह मछलियें उन बोरोंको मुखोंमें पकडकर जहाजको गिरदाबसे बाहर निकाल कर लेगईं । तब कप्तानने बोरोंके रस्सोंको काट दिया और जहाज भी गिरदाबसे पार होगया । यह तो दृष्टांत है, दार्ष्टा-

तमें यह जीवरूपी जहाज संसाररूपी जन्ममरणके गिरदाबमें फँसा है, महात्मा निष्कामरूपी संसारसमुद्रकी मछलियें हैं, इनकी अन्न वस्त्रादिकरूपी सेवासे यह जहाजरूपी जीवको जन्ममरणरूपी गिरदाबसे निकाल देती हैं; मगर वह महात्मा शमदमादिरूपी गुणोंकरके युक्त सत्यवादी हैं और जोकि सकाम दाम्भिक पाखंडोंमें फँसे हैं वह उलटा उसी गिरदा-बमेंही ढकेल देते हैं ॥ २० ॥

## दृष्टान्त सत्संगपर २१.

सरकार रणजीतसिंह महाराजकी एक युवा अवस्थावाला बड़ी सुंदर वेश्या रक्खी हुई थी और लाहौर शहरके बीचमें वेश्याका बडाभारी मकान था । जाड़ेके मौसममें एक दिन माघके महीनामें बड़ी वर्षा हो रही थी उसी दिन संध्याके समयमें एक महात्मा नग्न कीचसे लिपटे हुए सरदीसे काँपते हुए उसी वेश्याके मकानके फाटकके आगे जा करके खड़े होगये । भीतरसे वेश्याकी लौंडीने उनको देखकर बीबीसे कहा—एक महात्मा द्वारमें नग्न सरदीसे काँपते हुए वर्षामें खड़े हैं और वह किसीसे बोलते नहीं हैं । बीबीने कहा उनका हाथ पकड़कर तू उनको मकानके भीतर ले आ । लौंड़ी उनका हाथ पकड़कर उनको मकानके अंदर लेगई । बीबीने झटपट उनको गरम पानीसे स्नान कराकर उनका बदन पोंछकर पलंगपर लेटाकर उनके ऊपर रूईदार रजा-

ईको उढादिया और गरम २ उनको पहले चाह पिलाई और पीछे भोजन कराया और आप फिर भोजन करके उनके पांवको दाबने लगी। उसकी भक्तिको देखकर महात्माने एकबार उसके नेत्रोंसे नेत्र मिलाकर फिर अपने नेत्रोंको बंद करके वह सोगये और उसके हृदयमें उन्होंने नेत्रोंकी निगाहसेही ज्ञान और वैराग्यरूपी अमृतकी धाराको बरसा दिया। इसीपर गुरु नानकजीने भी अपनी बाणीमें कहा है "नानक नदरी नदर निहाल" गुरु नानकजी कहते हैं महात्मा अपनी नजरसे यानी दृष्टिसेही दूसरेको कृतार्थ कर देते हैं। वह महात्मा जब सोगये तब वह वेश्या रात्रिभर ही उनके चरणोंको दाबती रही, जब प्रातःकाल हुआ तब उसको नींदने बहुत सताया इसलिये वह उनके पांवमेंही सोगई। जब सबेरा हुआ और महात्माकी नींद खुली तब रजाईको फेंककर चल दिये, वह तो किस तरफको निकल गये मालूम नहीं, क्योंकि उनको किसीमें ममता नहीं थी, मगर उस वेश्याको भी वह अपनेही तुल्य बना गये। इसी पर विचारमालामें कहा है:—

### दोहा.

पारसमों अरु संतमों, बडो अंतरो जान।
वह लोहा कंचन करै, यह करैं आप समान॥ १॥

जब बहुतसा दिन निकल आया और वेश्याकी नींद खुली तब उसने लौंडीसे पूँछा वह महात्मा किधरको गये?

लौडीने कहा-वह बाहर निकल गये हैं किन्तु मैं नहीं जानती हूं किधरको गये हैं इतना सुनकर वह वेश्या भी रजाई और कपडोंको फेंक नग्न होकर लाहौरसे बाहर जंगलमें जाकर एक वृक्षके नीचे गोडोंपर शिरको रखकर बैठगई। उसके इस तरहपर चलेजानेसे नगरमें बडा शोर मच गया और सरकारको भी खबर पहुँची। सरकार पालकीमें होकर वहांपर गये और उसके पास बैठकर उसको बुलाने लगे। जब वह बिलकुल नहीं बोली तब सरकारने हुकुम दिया इसके वास्ते चिलमको भरकर लावो क्योंकि, वह हुक्का पीती थी। आदमी जब चिलमको भरकर लाया, सरकारने अपने हाथसे चिलमको उठाकर उसके मुखके सामने किया। तब उसने एक हाथ ऐसा मारा जो चिलम दूर जा पडी और बोली चलबे काने ! अब मैं तुम्हारी पहलेवाली भंगन नहीं हूँ जो कि मैलाको उठाती थी। इतना कहकर चुप होगई। सरकारने हुकुम दिया इसके दूर २ पहरा रहे, कोई आदमी इसके समीप आने न पावै और जिधरको, इसका जी चाहे चली जावै। पहरेवाला इसको न रोके इतना कहकर सरकार तो चले गये और वह भी वहांसे किसी तरफको चलीगई। देखो महात्माके संगका तुरंतही फल हो जाता है ॥ २१ ॥

## दृष्टान्त सत्संगपर २२.

जैसे बाहरके चन्द्रमाकी सोलह कला हैं तैसे अन्तर मन-रूपी चन्द्रमाकीभी सोलहही कला हैं, फिर जैसे बाहरका

चन्द्रमा पूर्णमासीके दिन सोलह कलाकरके पूर्ण हो जाता है तैसे मनरूपी चन्द्रभी निराशा १, सद्वासना २, जिज्ञासा ३, करुणा ४, मुदिता ५, थिरता ६, कीर्ति ७, असंगता ८, उदासीनता ९, श्रद्धा १०, लज्जा ११, साधुता १२, तृप्ति १३, क्षमा १४, विद्या १५, प्रेम १६ इन सोलह कलाकरके भक्तिरूपी पूर्णमासीको पूर्णप्रकाशमान होजाता है। जैसे बाहरका चन्द्रमा कृष्णपक्षमें घटने लगता है तैसे मनरूपी चन्द्रमा भी अविद्यारूपी रात्रिमें आशा १, अश्रद्धा २, अविद्या ३, चिन्ता ४, भूल ५, लोलुपता ६, अपकीर्ति ७, ममता ८, ईर्षा ९, राग १०, द्वेष ११, निंदा १२, तृष्णा १३, हिंसा १४, मिथ्यादृष्टि १५, अविवेक १६, इन्होंकरके घटजाता है। जब सत्संगरूपी शुक्लपक्ष उदय होता है, तब फिर निराशा आदिक कला बढजाती हैं। जिन पुरुषोंके मन अविद्यारूपी रात्रिमें आशाआदिकों करके अपनी निराशारूपी कलासे हीन हो जाते हैं, तब अविद्यारूपी रात्रिमें कामक्रोधादिकरूपी चोर भी उसके विद्यारूपी और शमदमादिकरूपी गुणोंको चुराकरके लेजाते हैं। इस लिये सत्संगका त्याग पुरुषोंको कदापि न करना चाहिये ॥ २२ ॥

जैसे कि सतसंगसे पुरुषको अनेक गुणोंका लाभ होता है, तैसेही कुसंगसे पुरुषके सब उत्तम गुण नष्ट होजाते हैं

और महान् अनर्थको भी वह प्राप्त होजाता है। इसी वास्ते अब कुसंगपर भी दृष्टांतोंको दिखाते हैंः—

## दृष्टांत कुसंगपर २३.

मानस सरोवरपर किसी दिन एक कौवा चला गया, वहां एक हंसने कौवेकी बडी खातिर की, तब कौवेने कहा मित्र! तुम भी हमारे साथ हमारे मकानपर चलो, वह भी देखने योग्य है। हंस उसके साथ चला, आगे भंगी चमारोंके महलोंमें एक बबूरका वृक्ष था उसके चारों तरफ मांस और विष्ठा मूत्र फैला था, उसके ऊपर कौवेका घर था। उसी-पर कौवेने हंसको लेजाकरके बिठला दिया। हंस वहांपर कौवेसे कहने लगा हम ऐसी मलीन जगहपर नहीं ठहरेंगे। कौवेने कहा चलो हमारा घर एक दूसरा भी है, वहांपर आपको लेचलें, वह बडा सुन्दर है ऐसे कहकर कौवाने हंसको राजाके बगीचामें लेजाकर एक वृक्षके ऊपर बिठादिया। नीचे उसके राजा बैठा था। कौवेने राजाके ऊपर विष्ठा करदी, सिपाहीने जो गोली मारी तो कौवा उडगया परन्तु वह गोली हंसको लगी और हंस गिरा और ऐसे कह करके मरगयाः—

नाहं काको हतो राजन् हंसोऽहं निर्मले जले ॥ नीच-संगप्रसादेन जातं जन्म निरर्थकम् ॥ १ ॥

हंसने कहा हे राजन्! मैं कौवा नहीं हूं किंतु मैं निर्मल जलपर रहनेवाला हंस हूं नीचके संगसे मेरा जन्म व्यर्थही गया ॥ १ ॥

नीच पुरुषोंकी संगतिते पुरुष महान् अधोगतिको प्राप्त होता है । हजारों आदमी संसारमें नीचोंकी संगतिसे महान् अधोगतिको प्राप्त हुए हैं और बडे २ नीच जातिवाले भी श्रेष्ठ पुरुषोंकी संगतिसे अति उत्तम गतिको प्राप्त हुए हैं, इस लिये पुरुषोंको उचित है कि, सदैव काल उत्तम संगतिको किया करै ॥ २३ ॥

पद्मपुराणके तीसरे खंडमें सत्संगका फल कहा हैः—

साधुसंगाद्भवेद्विप्र शास्त्राणां श्रवणं प्रभो ॥
हरिभक्तिर्भवेत्तस्मात्ततो ज्ञानं ततो गतिः ॥ १ ॥

हे विप्र ! महात्माओंके संगसे शास्त्रोंका श्रवण होता है, तिससे फिर ईश्वरमें भक्ति होती है, पश्चात् ज्ञानकी प्राप्ति होती है ॥ १ ॥

साधुसंगं तु यः कुर्यात्क्षणं वार्द्धक्षणं द्विजः ॥
तस्य नश्यंति पापानि ब्रह्महत्यामुखानि च ॥२॥

जो पुरुष एक क्षण अथवा अर्द्धक्षण मात्र भी महात्माओंका संग करता है, उस पुरुषके ब्रह्महत्या आदिक पाप भी नष्ट हो जाते हैं ॥ २ ॥

पद्मपुराणके पातालखंडमें भी कहा हैः—

स हरिः प्राप्यते साधुसंगमात्पापवर्जितात् ॥ येषां कृपातः पुरुषा न भवन्ति सुखोज्झिताः ॥३॥

पापसे रहित साधुसंगसे वह हरि प्राप्त होते हैं जिसकी कृपासे पुरुष फिर सुखसे रहित नहीं होता है ॥ ३ ॥

साधवः शान्तरागाद्याः कामलोभादिवर्जिताः ॥
ब्रुवंति यन्महाराज तत्संसारनिवर्तकम् ॥ ४ ॥

दूर हो गया है पदार्थोंमें रागादि जिनका और कामलोभादिकों करके जो रहित हैं, हे महाराज ! उनका जो कथन है सो संसारका निवर्तक है ॥ ४ ॥

बृहन्नारदीयपुराणमें भी कहा हैः—

ज्ञानाऽज्ञानकृतं पाप यच्चापि कारितपरैः ॥
तत्सर्वं नाशयत्याशु परिचर्या महात्मनाम् ॥ ५ ॥

जो पाप जानके किये हैं और अज्ञानसे किये हैं वे सब महात्माओंकी सेवासे शीघ्रही नष्ट होजाते हैं ॥ ५ ॥

जडोऽपि याति पूज्यत्वं सत्सगाज्जगतीतले ॥
कलामात्रोऽपि यश्चन्द्रः शंभुना स्वीकृतो यथा ॥ ६ ॥

इस पृथवीतलमें जड भी सत्संगसे पूजा करनेके योग्य होजाता है । जैसे कलामात्र चन्द्रमाको महादेवजीने स्वीकार कर लिया है ।

सत्संगतिः परामृद्धिं ददाति हि नृणां सदा ॥
इहामुत्र च विप्रेन्द्राः सन्तः पूज्याः सदा स्मृताः ॥ ७ ॥

पुरुषोंको सत्संगति ही परम ऋद्धि देती है । हे विप्रेन्द्र ! इस लोक और परलोकमें महात्माही सदैव काल पूजने योग्य हैं ॥ ७ ॥

दोहा ।

नीचहु उत्तम संग मिल, उत्तमही है जाय ।
गंग–संग जल झीलहू, गंगोदकके भाय ॥ १ ॥
जाहि बडाई चाहिये, तजे न उत्तम साथ । ज्यों
पलाश सँग पानके, पहुँचे राजा पास ॥ २ ॥
भले नरनके संगसों, नीच ऊँच पद पाय ।
जिमि पिपीलिका पुष्प सँग, ईश शीश चढजाय ॥३॥
तुलसी लोहा काठ सँग, चलत फिरत जलमाहिं ।
बडे न डूबन देत हैं, जाकी पकडै बाहिं ॥ ४ ॥

सवैया ।

ज्ञान बढै गुणवानकी संगत ध्यान बढै तपसी सँग कीने ।
मोह बढै परिवारकी संगति लोभ बढै धनमें चित दीने ॥
क्रोध बढै नर मूढकी संगत काम बढै तिसके सँग कीने । बुद्धि
विवेक विचार बढै कविदीन सुसज्जन संगति कीने ॥ ५ ॥

दोहा ।

जिहि जैसी संगति करी, तिहि तैसे फल लीन ।
कदली सर्प भुजंग मुख, एक बून्द गुण तीन ॥ ६ ॥
जल जिमि निर्मल मधुर मधु, करत ग्लानिको
अन्त । पान किये देखे छुवे, हर्ष देत किमि संत ॥७॥

अब कृपणोंके दृष्टांतको दिखाते हैंः—

## दृष्टांत कृपणपर २४.

किसी कृपणके मकानपर उसके मिलनेको एक मित्र गया, उसने मित्रकी जुबानी खूब खातिरदारी की, मगर मनमें चाहता था जो भोजनके समयसे पहले २ इसको रुखसत करदें । वरना भोजन खिलाना पडेगा । ऐसा विचार करके उससे कहने लगा, मेरा कोई काम है मैं थोडी देरके लिये बाहर जाऊँगा । मित्रने कहा कोई हर-जाकी बात नहीं है आप बहुत देरके लिये जाइये मेरा तो यह अपना घर है आज दिनभर मैं भी इस जगहमें आराम करूँगा । तब उसने कहा आप तो एकही बार रात्रिको भोजन करते होंगे । उसने कहा नहीं दो बार तो करताही हूं मगर बीचमें भी यदि कुछ जलपान मिठाई वगैरह मिल जाता है तो उसको भी खा लेता हूँ । तब उसने कहा आप तो अपनेही हाथका भोजन बनाकर खातेहोंगे ? मित्रने कहा ऐसा हमारा नियम नहीं है किंतु चारों वर्णोंके हाथका बनाया हुआ भोजत मैं खा लेता हूँ । फिर आप तो हमारे मित्र और सम्बन्धी भी हैं आपके हाथके भोजन खानेमें तो हमको किसी तरहका भी उजर नहीं है । अब तो उसको भोजन करानाही पडा । जब खाने बैठे तब उसने ऐसी बात चलाई कि, जिसमें वह थोडासा भोजन खाये । उसने कहा

अमुक हमारा मित्र जो पहली तारीखको हमारे घरमें आया था वह तो बहुतही खाने वाला था, सेरभरसे कम नहीं खाता था और एक २ रोटीके दोही दो ग्रास करता था। मित्रने कहा सेरभर तो थोडी खुराक है मर्दकी पूरी खुराक डेढसे-रकी होती है और वह बेवकूफ था जो ऐसी पतली २ रोटी के दो २ ग्रास करता था, मैं तो इन दो रोटियोंका एकही ग्रास करता हूँ। ऐसा कहरकर दो २ रोटीका एक ग्रास करने लगा। कृपणका दिल फट गया। क्या करे कुछ भी न चली ॥ २४ ॥

## दृष्टान्त बनियेका २५.

एक बनिया बडा कृपण था, उसने अपने छोटे लडकेको उपदेश किया—बेटा ! किसी साधुको कभी दण्डवत् प्रणाम न करनी, यदि करोगे तब खिालना पडेगा। एक दिन बनिया नदीके किनारे पर सबेरे लडकेको साथ लेकर स्नान करनेको गया, वहाँपर एक वैष्णव साधु बैठा पूजा कर रहा था। लडकेने उसको प्रणाम करदी जब बनिया स्नान करके अपने घरकी तर्फ चला तब पीछे २ उसके उस वैष्णव साधुने भी प्रस्थान कर दिया। जब घरके समीप आकर बनियाने पीछेको देखा तब महात्मा भी धीरे २ चले आते हैं। पूँछा क्यों आते हो ? उन्होंने कहा आज तुम्हारे घरमें हम भोजन करेंगे। बनियाने कहा हमने तो तुमको नेवता नहीं दिया है, फिर तुम हमारे घरमें भोजन कैसे करोगे ?

महात्माने कहा जो हमको सबेरे दण्डवत् कर देता है उस दिन हम उसीके घरमें भोजन करते हैं; सो आज तुम्हारे लडकेने हमको दण्डवत् की है इसलिये आज हम तुम्हारेही घरमें भोजन करेंगे। बनियाने लडकेसे कहा हम जो तुमको मना करते थे तुमने हमारी बातको नहीं माना है आज बला गळे पडी। कितनाही बनियेने हीलाहवाला करके टरना कहा, मगर महात्माने एक न मानी, तिसके द्वारपर धरना लगाकर बैठही गये। लाचार होकर बनियाने उसको भोजन कराया। महात्मा जब भोजन कर चुके और हाथ पांवको धोने लगे, तब बनियाका लडका अपनी मातासे कहता है, मां मां फिर पांवको धोते हैं मां बोली बेटा अब मेरेको खायगा और बाकी क्या रहा है॥ २५॥

## दृष्टान्त कृपणका २६.

एक बनियासे एक मंदिरवाले पूजारीने कहा आज एक अतिथि महात्मा साधु मंदिरमें आये हैं, सो तुम उनको भोजन करा देना। बनियाने विचारा जैसे हम लोग एक दो रोटी नित्य खाते हैं तैसे यह भी खायगा। ऐसे जानकर उसने हां भी भरदी और कहा अच्छा भेज देना। बनियाके घरमें तीन आदमी थे सो आधासेर आटा अधिक लेलिया। महात्मा जो खाने बैठे तो उनकी सब रोटी चावल खाकर उठ गये। बाकी कुछ था भी नहीं जो वह और मांगते

उन्होंने अपने खानेके वास्ते फिर और बनाया, बनियाकी स्त्रीने जाकरके मंदिरवालेसे कहा महाराज ! माडे बैल भेज-दियो । माडो सगडो आटो चावल खागयो ॥ २६ ॥

## दृष्टान्त कृपणका २७.

एक कृपण सेठसे एक फकीरने कुछ मांगा । सेठ बही-खातेको लिख रहा था उसने कहा आगे दिया तब रात दिन लिखना पडता है अब देवैंगे तब न मालूम फिर कहां तक लिखना पडेगा । इस लिये । आप माफ रखिये ॥ २७ ॥

## दृष्टान्त कृपणका २८.

किसी कृपण अमीरसे एक फकीरने सवाल किया, अमी-रने कहा अगर तुम हमारी एक बातको मंजूर करलेवो तब फिर जो तुम कहोगे सो मैं करूंगा । बात यह है हमसे कुछ मांगो मत ॥ २८ ॥

## दृष्टान्त कृपणका २९.

एक कृपण मौलवी रातको मसजीदमें निमाज पढनेको निकले, तब रास्तामें उनको याद आया कि चिराग जलता हुआ छूट गया है पहले उनको बुता आवें, वरन मुफ्तमें तेल जल जायगा । ऐसा विचार कर घरको फिरे घर आये तो नौकरने किंवाड बन्द कर लिया था । इसने पुकारा किंवाड खोलो, नौकरने कहा जो काम हो सो कह दीजिये। किंवाडा

खोलनेमें तो चूले मुफ्तमें घिस जायँगे । कहा सच्च है चिरागको गुलकरदेना वरन तेल मुफ्तमें बलैगा । नौकरोंने कहा थोडासाही तो तेलका नुकसान होता अगर आप जो इतनी दूर चलकर आये हैं आपकी जूतियें तो घिसी होंगी, यह तो नुकसान भारी हुआ । नौकरकी बातको सुनकर मौलवीने कहा ना रे जूतियोंको तो मैंने पहलेही बगलमें दबालिया था ॥ २९ ॥

## दृष्टान्त कृपणका ३०.

किसी कृपण पंडितसे एकने पूँछा सबसे अधिकतर शूरबीर कौन है ? उसने कहा जो अपने पैसेको कदापि खर्च न करै वही सबसे भारी शूरबीर है । जब उम्दा २ भोजन खानेको चाहिये तब किसी अमीरके भंडारमें जाकर उसके पदार्थोंकी सुगंधी लेकर मनको बहलालेना ॥ ३० ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३१.

एक मिरासी किसी कृपण मियाके घरमें गया, परन्तु रातको वहांपर उसको खानेको कुछ न मिला तब सबेरे मियांसे उसने कहा रातको एक सुपेदरीशका आदमी मेरेको आपके घरमें नजर पडा था, उससे पूछा तुम्हारा नाम क्या है ? उसने कहा रमजान । फिर पूछा कहां रहते हो ? उसने कहा सालमें एक महीना मुसलमानोंके घरमें रहता हूँ और ग्यारह महीना इस घरमें ॥ ३१ ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३२.

एक मिरासी किसी कृपण अमीरके पास गया और जब भोजनका समय हुआ तब कृपण झाडा फिरनेके बहानेसे भीतर चला गया जब भोजनको खाकर बाहर निकला तब एक चावल उसकी दाढीमें अटक गया था। मिरासी उस चावलको देखकरके कहने लगा हुजूर ! आपकी दाढीमें जरासा पाखाना लगा है। कृपण बडा शरमिंदा हुआ ॥ ३२ ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३३.

एक आदमीने एक तोतेको पाला और उसको फारसी जबानमें दरीचे शक इस एकही बातको सिखाया। जब तोता उस एकही बातको खूब पढ गया, तब तोतेको बाजारमें बेचनेके लिये लेगया, दैवयोगसे एक कृपण अमीरने उससे पूँछा इस तोतेका क्या दाम है, मालिकने कहा इसका दाम एक सौ रुपये है अमीरने तोतेसे कहा सौ रुपया तुम्हारा दाम ठीक है ? तोतेने कहा—दरीचेशक याने इसमें क्या संदेह है। उसने सौ रुपया देकर उसको खरीद घरमें लेजाकर जो बात वह पूँछे तोता एकही जबाब देवै। उसने कहा मैंने बेकूफी की जो तुझको खरीदा। तोतेने कहा दरीचे शक ॥ ३३ ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३४.

एक महात्माने किसी अमीर कृपणसे कहा हम तुम दोनों बराबरके भाई हैं। क्योंकि मनुकी औलाद तुम भी हो और

हमभी हैं। तब फिर जितना द्रव्य तुम्हारे पास है उनको दोनों बराबर बाँट लें। अमीरने एक पैसा निकालकर उसको दिया। महात्माने कहा यह कैसा बटवारा है? कृपणने कहा बोलो मत वरना और भाइयोंको खबर होनेसे एक पैसा भी तुमको नहीं मिलैगा ॥ ३४ ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३५.

एक पंडित किसी कूवेमें गिर पडा, कूवेका पानी बहुत ही समीप था। इतनेमें उस कूवेके ऊपर बहुतसे आदमी भी जमा हो गये। हरएक आदमी पंडितसे कहै मिश्रजी हाथ लावो। मिश्रजी हाथको न दें। एक आदमीने कहा अरे यह ब्राह्मण हैं इसको तुम लावो २ मत कहो, क्योंकि यह देना नहीं जानता है इसको कहो लेवो तब यह हाथ देगा। एक आदमीने कहा पंडितजी! लेवो, पंडितने हाथको आगे कर दिया, उसने पकडकर बाहर निकाल लिया। सारांश जिन लोगोंने माँग करके खाया है वे देना नहीं जानते हैं, इसीसे वह कृपण होते हैं ॥ ३५ ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३६.

किसी कुबडेसे एकने पूँछा अगर परमेश्वर तुम्हारे कुबडको निकाल दे, तब तो तुम प्रसन्न होगे? उसने कहा मैं तब प्रसन्न होऊँगा जब परमेश्वर मेरे समान ही सबको कुबड बना दे और मैं उनको देख करके हँसूं ॥ ३६ ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३७.

किसी नगरमें एक वैश्य बडा धनी रहता था, परंतु अव्वल दरजेका कृपण भी था। जब आश्विनके महीनेमें श्राद्धोंके दिन आये तब उसको स्त्रीने कहा लोक बडी बदनामी करते हैं पितरोंके निमित्त कभी भी सेठ किसीको नहीं खिलाता है, भला आज तुम्हारे पिताका श्राद्ध है किसी एकही ब्राह्मणको बुला लावो। सेठ यमुना किनारेपर जाके इधर उधर देखने लगा, वहां एक चोबा तिलक छापे कर रहा था उसे सेठने कहा महाराज ! अगर रूखा सूखा अन्न यदि आपको भोजन करना हो तब आज मेरेही घरको पवित्र करिये। चौबेने कहा जजमान ! हम तो प्रेमके भूखे हैं भोजनके भूखे नहीं हैं। सेठ चौबेको साथ लेकर घरमें जाकर स्त्रीसे कहने लगा, यह बडे महात्मा हैं, इनको जो कहैं दाल चावल

सूखा रूखा खिला दीजिये।ऐसा कहकर सेठजी तो दूकान पर चले गये। सेठानीने चौबेसे कहा महाराज ! क्या भोजन कीजियेगा जो आपको रुचि हो सो बताइये। चौबेने कहा सेरभर मोयमदार किचौरी, सेर भर रेवडी, दो सेर जलेबी, पांच सेर दूध और तरकारी वगैरह उसने सब मँगा दिया। चौबेने भोजन करके कहा अब एक अशरफी इस भोजनकी दक्षिणा और सेठके पिताके लिये वस्त्र भूषण चाहिये। वह भी सब सेठानीने देदिये, लेकर वह अपने घरको चले गये।

पीछे सेठने आकर भोजनका हाल पूँछा तब सब उसने कह सुनाया । सेठ क्रोधसे चौबेके घर दौड गया । चौबेने अपनी स्त्रीको पहलेही सिखा रखा था, उसने सेठका दामन पकड लिया और कहा मेरे पतिको तुमने क्या खिलाया है ? वह बीमार पडा है, मैं तुमको राजाके पास ले चलूँगी । कुछ उसको देकर सेठने अपनी जान छुडाई और अपने घरको वापस आये ॥ ३७ ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३८.

किसी ग्राममें एक धनी जमींदार बडा भारी कृपण रहता था और कभीभी किसी गरीब साधु ब्राह्मणको पावभर मुट्ठी अन्न भी नहीं देता था, दैवयोगसे वह बीमार हो गया तब उसको भयानक शकलोंवाले पुरुष दिखाई पडने लगे और वह भी जीनेसे निराश होगया । तब तिसने अपने लडकोंसे कहा अब मेरे मरनेका समय आता है तुम लोग मेरेसे कुछ दान पुण्य करावो । उन्होंने कहा क्या करावैं । इसी तरह कहते सुनते कुछ दिन गुजर गये और उन्होंने कुछभी दान न कराया, किन्तु टालाटोलाही किया । तब एक दिन खफा होकर कहने लगा अधिक दान नहीं करते हो तब पांच सेर तेल ही दान करादेवो । जो यमराजके मार्गमें अँधेरेमें तो जाना न पडै, चांदना तो होजायगा । लडकोंने कहा चांदनामें लेनेवाले आकर पकडके तंग करेंगे और अँधेरेमें

कोई भी नहीं देखेगा चुपचापसे चले जावो, इसलिये तेलको मत दान करो। वह चुप होगया और थोडीसी देरके पीछे मर भी गया ॥ ३८ ॥

## दृष्टान्त कृपणपर ३९.

किसी ग्राममें एक पंडित बडा कृपण रहता था, उसके घरमें एक दिन मेहमान आया। उस पंडितने रूखी खिचडी बनाकर उसके आगे धरदी मेहमानने कहा आफत क्या है? आफत जिसमें कोई साग भाजी भी नदारत है। पंडितने कहा बोलो मत, अगर इतने दाने खेतमें बोये जाते तब बहुतसा अन्न इनसे होता, तुम्हारे पेटमें यह व्यर्थ ही जाँयगे। मेहमानने कहा भला और नहीं तो थोडासा घृत तो मँगावो। पंडितने कहा इस ग्रामकी हवा खराब है घृत खानेसे आदमी बीमार होता है। लाचार मेहमान रूखी खिचडी खाके उसी समय वहांसे चल दिया ॥ ३९ ॥

## दृष्टान्त कृपणका ४०.

किसी ग्राममें दो कृपण रहते थे और दोनों परस्पर मित्र भी थे और दोनोंके पास बहुतसा द्रव्य भी था। एक दिन दोनों नदीके किनारे पर बैठे थे, एकने दूसरेसे पूँछा कैसे गुजर करते हो? उसने कहा दो पैसेका आटा और एक पैसेका घृत लेकर जंगलसे लकडी बीनकर रोटी बना जिसके घरमें कोई तरकारी छौंकी जाती है उसकी सुगंधिसे

उसके द्वारपर बैठकर खाता हूँ। मैं तो ऐसे ही गुजर करता हूँ। दूसरेने कहा तुमतो बडे फजूलखर्ची हो जो तीन पैसा रोज खर्च कर देते हो। मैं तो कुछ भी नहीं खर्च करता हूँ और मजेसे खाता हूँ। एक पैसा घरसे लेकर भी नहीं चलता हूँ बनियाकी दूकानपर जाकर चावल और आटेका भाव पूंछकर थोडा नमूनेके बहानेसे ले लेता हूँ, फिर दूसरेकी दूकानसे लेता हूँ इस तरह अपने खानेभरको जमा करके फिर जंगलसे लकडी बटोर कर उसपर रोटी बनाकर मजेसे नित्य खाता हूं और जो पैदा करता हूं उसको जमा करता हूं ॥ ४० ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्या-
धरेण पेशावरनगरनिवासिना विरचितदृष्टान्तमञ्जूषा-
नामकग्रन्थे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

---

# षष्ठोऽध्यायः

*

अब इस अध्यायमें बुद्धिमानोंके दृष्टांत दिखाये जायंगे।

## दृष्टांत बुद्धिमानीपर १.

किसी देशमें एक राजाका बडा बुद्धिमान् वजीर मर गया और उसके पश्चात् उस वजीरका बारह बरसका एक छोटा लडका था। सो राजाके मनमें एक दिन यह ख्याल आया कि अगर वजीरका लडका लायक हो तब उसको बुलाकर उसके बापकी जगहपर नौकर कर देना चाहिये। ऐसा विचार

कर राजाने उस लडकेको बुला भेजा। जब लडका राजाके दरबार में जाने लगा, तब घरके हरएक आदमी उसको समझाने लगे, बेटा! यदि राजा साहिब ऐसी वार्ता पूँछैं तब उसका ऐसा जबाब देना, जो ऐसी पूँछैं तब ऐसा जबाब देना। जब सब कह चुके तब लडकेने कहा अगर इससे बाहर कोई दूसरी ही बातको पूँछैं तब क्या जबाब देऊं? उसकी इस वार्ताको सुनकर उसकी माताने कहा बेटा? शाबाश है तुम्हारी अकल पर! अब हमको विश्वास हो गया है कि जो वार्ता राजा साहिब तुमसे पूछेंगे उसका तुम पूराही जबाब देओगे और अपने बापके अनुसार राजा साहिबके तुम भी प्यारे होजाओगे, इसमें सन्देह नहीं ॥ १ ॥

## दृष्टांत बुद्धिमानीपर २.

एक दिन किसी बातपर नाराज होकर अकबर बादशाहने बीरबलको अन्धा कहा, तब बीरबलने कहा हुजूर! अंधे दो किस्मके होते हैं। एक तो वह अन्धे कहे जाते हैं जिनकी आंखें नहीं होती हैं सो मैं उन अंधोंमें तो नहीं हूं, क्योंकि मेरी आँखें मौजूद हैं। दूसरे आंखवाले तीन किस्मके अन्धे होते हैं एक आँखके, एक दौलतके, एक अकलके। जो एक कामको करते हुये किसीको देखते भी हैं और फिर पूँछते हैं आप क्या करते हो? जैसे एक आदमी लिख रहा था दूसरा उससे पूंछता है क्या करते हो? वह आँखका अंधा कहा

जाता है। दूसरा किसी दौलतमंदके पास जब कोई गरीब भाई जाकर मिलना चाहता है और वह आगेसे कहता है, मैं तुमको नहीं जानता हूं या जान बूझकर उससे मुलाकात कोही नहीं करता है, वह दौलतका अंधा कहा जाता है। तीसरा एक आदमी भूलकर एक रास्तामें जा रहा है, दूसरा उससे कहता है यह रास्ता ठीक नहीं। उसकी इस बातको वह नहीं सुनता है, वह अकलका अन्धा कहलाता है। सो मैं तो इनमें नहीं हूं फिर हुजूरने हमको कैसे अंधा कहा? बादशाह हँस पडे और बीरबलके अकलकी तारीफ करने लगे ॥ २ ॥

## दृष्टांत बुद्धिमानीपर ३.

रात्रिको एक पानीके घडेको कांधेपर उठाकर और एक हाथमें दियेको लेकर एक अंधा बाजारमें हटो २ कहता हुआ चला जाता था। एक आदमीने अंधेसे कहा तुमको तो दीखता नहीं है फिर दियेको लिये हुए क्यों जाते हो? उसने कहा तुम लोगोंके लिये, ऐसा न हो कि अंधेरेमें कोई आंख वाला मेरे घडेको फोडदे ॥ ३ ॥

## दृष्टांत बुद्धिमानीपर ४.

एक हकीम जब कबरस्तानके पाससे होकर कहींको जाते तब अपने मुखको ढांप लेते। किसीने उनसे पूंछा तुम कब-रस्तानसे मुखको ढांप लेते हो? उसने कहा बहुतसे लोग

शायद मेरीही दवाईसे मर गये हों उनके सामने मेरेको शरम आती है ॥ ४ ॥

## दृष्टांत बुद्धिमानीपर ५.

एक दिन अकबर बादशाहने बीरबलसे पूँछा गरमी, सरदी, बरसात इन तीनों मौसिमोंमें कौनसी मौसिम अच्छी है ? बीरबलने कहा जिस मौसिममें खाना हजम हो जाय वही मौसिम अच्छी है ॥ ५ ॥

## दृष्टांत बुद्धिमानीपर ६.

एक दिन अकबर बादशाहने बीरबलसे कहा चार आदमियोंको लावो । एक शूरवीर, दूसरा डरपोक, तीसरा शरमदार, और चौथा बेशरम। दूसरे दिन बीरबल एक औरतको बादशाहके सामने ले जाकर कहने लगा हुजूर ! इसीमें चारों बातें घट जाती हैं । कहा कैसे ? कहा सुनिये—जिस कालमें यह अपने ससुरालमें रहती है मारे शरमके ऊँचा भी नहीं बोलती। फिर जब खसमके पास रात्रिको बैठती है तब घरकी अंधेरी कोठडीमें भी नहीं जाती है, कहती है मुझको डर लगता है।जब विवाहमें गाने लगती है तब भाइयों और बाप वगैरहके सामने भी लाखों गालियोंको बकती है । फिर जब रात्रिको यारके पास जाती है तब बिनाही हथ्यारके अँधेरी रात्रिमें भूत प्रेत सांप वगैरहका भी भय नहीं करती है, उस कालमें महा शूरवीर बन जाती है ॥ ६ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर ७.

एक बादशाह लडाईके वक्त चालाक घोडेपर सवार था और एक सवार लँगडे घोडेपर सवार था। उसको देखकर बादशाह खफा हुआ, तब वह हँसने लगा। बादशाहने कहा तुम हँसते क्यों हो ? उसने कहा हुजूर ! आप तो भागनेवाले घोडेपर सवार हो और मैं ठहरनेवाले घोडेपर सवार हूँ; जो लडाईसे कभी भी न भागे। तिसपर भी आप नाराज होते हैं मैं इसी वास्ते हँसा हूं। बादशाहने उसको इनाम दिया और कहा तुम सच कहते हो ॥ ७ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर ८.

आलमगीरके पास किसी जिलेके आदमी आये और अपने नगरके हाकिमकी शिकायत की। बादशाहने कहा वहहाकिम बहुतही अच्छा है, क्योंकि उसका एक २ अंग इन्साफसे भरा है। उनमेंसे एकने कहा—हुजूर ! उस हाकिमके एक २ अंगको काटकर अपने हरएक जिलेमें भेज दीजिये जो आपके तमाम मुल्कमें इन्साफ फैल जाय। बादशाह उसकी बातपर खुश हुए और इन्साफ कर दिया ॥ ८ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर ९.

आलमगीरके जमानेमें किसी नगरमें बहुतसे मुसलमान एक मजलसमें बैठकर इधर उधरकी बातें कह रहे थे। एक मुसलमानने कहा—आलमगीर बड़ा जालिम है, अगर मैं

इसमें झूठ कहूं तो सूवर खाऊं। उसकी बातको सुनकर बाकी के मुसलमानोंने उससे कहा—तू जमानेके हालको नहीं जानता है और ऐसी सख्त कसम खाता है, इस वास्ते सूवर खानेका गुनाह अब तुमपर लगा। उस मुसलमानने जाकर एक नेक काजीसे यह हाल कहा और पूछा अब मेरा यह गुनाह कैसे छूटेगा ? उसने कहा अगर खुदा आलमगीरके जुल्मको माफ कर देगा तब तुम्हारा भी यह जरासा गुनाह तो माफ कर ही देगा। अगर उसके गुनाहको माफ नहीं करेगा तब तो वह जालिम साहिब हो जायगा, फिर तो तुम्हारा कहना सच्चाही होगा और तुम्हारा कोई गुनाह नहीं होगा॥ ९॥

## दृष्टान्त पंडितकी बुद्धिमानीपर १०.

सरकार रणजीत सिंहके जमानेमें मुलतानसे दस बारह सिख छुट्टी लेकर अपने २ घरोंको चले। उनमें दो एक मुसलमान भी थे रास्तामें रात्रिको एक एक कूवेंपर ठहरे। उस देशमें कूवेंपर अरट चलते थे और मिट्टीकी घडियें छोटी २ उनमें लगी रहती थीं। हर एक सिखने पानीकी भरी हुई एक २ घडी खोलकर अपने सिरकी तरफ रखली और सोये। एक सिखकी नींद खुली वह अँधेरेमें अपनी घडी तो भूलगया किंतु पासमें सोया जो मुसलमान था उसकी घडीका पानी पीता रहा। दूसरे सिखने देखकर कहा तुमको पाप लगा है, तुमने मुसलमानकी घडीका पानी पी लिया है। सबेरे सब सिखोंने सलाह करके कहा चलो पंडितसे इसका

प्रायश्चित पूँछे। सबेरे ग्राममें जाकर एक पंडितसे मुसलमानकी घडीके पानी पीनेका हाल कहा और यह भी कहा इसको प्रायश्चित लगावो। पंडितने मनमें विचार किया इस देशमें कूवेंके अरटकी घडियोंका पानी तो हिंदू और मुसलमान सभी पीते हैं, प्रायश्चित कौन बातका लगाया जाय। पंडितने कहा हमारे हिसाबसे तो जैसा तू पहले गुरुका सिख था अब भी तू वैसाही है, कोई भी पाप तेरेको नहीं लग सक्ता है॥ १०॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर ११.

प्यासे कौवेको एक घडा मिला, उस घडेमें थोडासा पानी था और पानी तक कौवेकी चोंच नहीं पहुँचती थी, तब कौवेने घडेको फोडनेका इरादा किया, मगर कौवा उसको फोड न सका, तब कौवेने उसमें पत्थर डालने शुरू किये, वह पानी ऊपरको आगया तब कौवेने उस घडेका पानी पीलिया॥ ११॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर १२.

सांप और केकडेकी परस्पर बडी मित्रता थी। सांपको टेढे चलते हुए देखकर केकडेने कहा–भाई टेढा मत चलना किंतु सीधाही चलना। मगर सांप अपनी आदतको न छोडै। अन्तमें केकडेने सांपकी मैत्रीको छोड दिया। थोडे दिनोंके पीछे एक रोज रास्तामें सीधा पडा हुआ और मरा

हुआ सांप उसको दिखाई पडा, केकडेने कहा अगर पहलेसे तू इस तरहसे सीधा होता तब कभी भी तेरी ऐसी हालत न होती ॥ १२ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर १३.

जंगलमें एक बकरीके पीछे चार शिकारी दौडे और बकरी एक अंगूरकी झाडीमें छिपगई। शिकारियोंको जब वह बकरी दिखाई न पडी, तब वह आगेको चले गये। बकरी उसी अंगूरके पत्तोंको चबाने लगी, जब वह उसके पत्ते चबा गई तब एक शिकारी जो पीछे रह गया था, उसको बकरी उस झाडीमें दिखाई पडी। उसने बाकीके शिकारियोंको पुकारके कहा जल्दी आओ यहांपर बकरी खडी है। सब शिकारी उसके ऊपर टूटपडे और बकरी को उन्होंने मार लिया। मरती दफा बकरीने कहा मैं ऐसी निमकहरामी की कि, जिस अंगूरने मुझको बचाया मैंने उसीको खाया, इसीसे मेरी यह गति हुई। निमकहरामीका फल ऐसाही होता है ॥ १३ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर १४.

किसी अमीरने अपने गरीब संबंधीसे कहा हम तुमको पांच सौ रुपया देवैंगे, उसने कहा अगर देओगे तब तो तुम्हारा पुण्य होगा अगर न देओगे तब हम तुम्हारे एहसानसे बचैंगे ॥ १४ ॥

## दृष्टान्त अकलमन्दीपर १५.

एक अमीर सडकके किनारेपर खडा था, उससे एक गरीबने कुछ सवाल किया, उसने उसको कुछ न दिया। वहांसे जब वह अमीर आगे बढकर दूरपर गया, तब फिर दौडकर उसी गरीबने उससे सवाल किया तब उस अमीरने कहा पहले तुमने उस जगहमें सवाल किया था और मैंने भी तुमको जवाब देदिया था, फिर तू क्यों इस जगहमें आकर सवाल करता है।? उसने कहा बाजी २ जगह नाकस होती है। वहांपर खडा होनेसे आदमीका दिल सूम होता है। और बाजी २ जगह उदार होती है। उस जगहमें खडे होनेसे आदमीका दिल उदार हो जाता है। वह जगह सूम थी इसी वास्ते उस जगहमें आपने मेरेको जवाब देदिया था, मैं अब इस जगहमें इस वास्ते आया हूं शायद यह जगह उदार हो जो तुम्हारे दिलमें भी उदारता आजाय। उसकी इस वार्ताको सुनकर अमीरने उसको कुछ देदिया ॥ १५ ॥

## दृष्टान्त सिकंदरका १६.

एक अमीर पर सिकंदर बादशाह नाराज हुआ उसका तमाम माल लूटकर अपने अमलेवालोंको बांट दिया। वजीरोंने कहा आपने ऐसा क्यों किया ? बादशाहने कहा इस वास्ते इसका माल बांट दिया है जो कोई अमलेमेंसे इसकी सिफारिशको न करे ॥ १६ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर १७.

एक आदमी अपने कुत्तेको साथ लेकर शिकारको जाता था, रास्तामें एक मस्त फकीर पडा था। फकीरसे उसने कहा यह कुत्ता हमारा अकलमंद है या तुम अकलमंद हो? उसने कहा कुत्ता अपने मालिककी निमकहरामी नहीं करता है, क्योंकि हमेशा अपने मालिकका हुकुम बजाता है और तुम हमेशा अपने मालिककी निमकहरामीको करते हो कभी भी उसके हुकुमको बजा नहीं लाते हो जानवरोंको सतातेहो, बस तुमसे कुत्ता अच्छा है ॥ १७ ॥

## दृष्टांत बुद्धिमानी पर १८.

एक मकानमें थोड़ेसे बूढे आदमी बैठकर बातें कर रहे थे, वहांपर दश पांच लडके भी खेलते हुए आ निकले और जाकर शोर मचाने लगे। एक बूढेने लडकोंको कहा बूढोंके सामने ऐसी बेशरमी न करो। उन लड़कोंमेंसे एक लड़केने आगे बढकर कहा अगर तुम अपनी जवानीमें परमेश्वरसे शरम करते तब हम भी कभी तुम्हारे सामने इतनी बेशरमी न करते ॥ १८ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर १९.

एक कृपणने दोस्तसे कहा मेरा मन ऐसा चाहता है कि, जो रुपया मेरे घरमें हैं उनको जंगलमें जाकर किसी दरख्तके तले गाड आऊँ, मगर तू मेरे साथ चल। उसने मंजूर

किया, दोनों गये । जंगलमें एक दरख्तके तले उसने अपने रुपये दोस्तके सामने गाड दिये और घरको चला आया । दो रोजके पीछे जो जाकर उस जगहको खोद करके उसने देखा तो रुपये वहांपर नहीं हैं, मनमें विचार किया रुपयोंको दोस्त निकालकर लेगया। अब कोई हिकमतसे रुपये निकालना चाहिये। उसने दोस्तसे जाकर कहा बहुतसा माल मेरे हाथ लगा है अगर तू साथ चले तो कल इसको भी उसी जगहमें गाड आवें । उसने कहा बहुत अच्छा । बहुत मालकी लालचसे उसके दोस्तने रात्रिको जाकर उसी दरख्तके तले उन रुपयोंको गाड दिया जो ले आया था । कृपणने जाकर सबेरे अपने रुपये वहांसे निकाल लिये॥१९॥

## दृष्टांत अकलमंदीका २०.

किसी आदमीकी आँखे दुखती थीं, वह पशुओंको इलाज करनेवाले वैद्यके पास अपनी आँखोंका इलाज कराने गया । जिस दवाईको वह पशुकी आँखोंमें डालता था, उसी दवाईको उसने उसकी आंखमें भी डाल दिया । उस दवाईसे वह तुरंत अंधा होगया तब उसने उस वैद्यपर हाकिमके पास नालिश किया । हाकिमने उससे कहा तू आदमी नहीं गधा है, अगर तू गधा न होता तो जानवरोंके वैद्यसे अपनी दवाई कदापि न करता । तात्पर्य इस दृष्टांतका यह है कि जो आदमी अनजानको भारी काम सुपुर्द कर देता है वह नुकसानको ही उठाता है और बुद्धिमानोंके समीप वह मूर्ख ही

समझा जाता है, इसी वास्ते जो आदमी अकलमंद हैं वह भारी काम कमीनो और मूर्खोंको नहीं देते हैं, किंतु पहले परीक्षा कर लेते हैं ॥ २० ॥

## दृष्टांत अकलमंदीपर २१.

एक आदमी एक भारी पहलवानके साथ विदेशमें निकला वह पहलवान भी ऐसा बली था जो दस आदमी मिलकरके भी उसको जमीनपर झुका नहीं सकते थे, और अपने बलका उसको बडा अभिमान भी था । एक दिन जंगलके रास्तासे दोनों चले जाते थे और पहलवान कहता था कहां है शेर जरा मर्दके सामने तो आवे और हाथी कहाँ है, जरा अपना मुख तो दिखलावे । इसी तरहकी बातें हांकता जाता था कि, दैवयोगसे झाडीमेंसे दो चोर निकले और उन्होंने डाटा और लड़नेको आये, तब पहलवानके साथीने पहलवानसे कहा देखते क्या हो मुद्दई तो आ पहुँचे अब क्या देखते हो इन दो चोरोंमेंसे एकके हाथमें लाठी और दूसरेके हाथमें पत्थर था । दुश्मनोंकी सूरतको देखते ही पहलवानका वदन कांपने लगा और हाथसे तीर और कमान उससे गिर पडा । इसका सबब यह था कि अगरचे वह पहलवान था मगर कभी घरसे बाहर नहीं निकला था और न कभी लडाई की और लडनेवालोंकी शकलको उसने नहीं देखा था । आखिरको पहलवान और उसका संगी दोनों अपना सब असबाब फेंककर भागे । इस दृष्टांतका यह

तात्पर्य है कि, भारी कामके लिये तजरबाकार आदमीको भेजना चाहिये ताकी वह मैदानमें शेरका भी मुकाबिला करे जो आदमी तजरबाकार नहीं है, वह छोटेसे दुश्मनका भी मुकाबिला नहीं कर सकता है ॥ २१ ॥

## दृष्टांत अकलमंदीपर २२.

किसी बादशाहने अपने वजीरसे कहा कि, मूर्खोंकी गिनती कर डालो। वजीरने कहा मूर्खोंकी गिनती नहीं हो सकती है, क्योंकि वे अनंत हैं, अलबत्ता अकलमंदोंकी गिनती होसकती है, क्योंकि दस पांच ही होवेंगे ॥ २२ ॥

## दृष्टांत अकलमंदीपर २३.

एक मुसलमानने एक दोस्तकी मेहमानी की; और वह दो लडकोंको साथ लेकर उसके घरमें गया। घर वाला एक आप था और एकही उसकी जोरू थी। उसने सात अंडे मुरगीके भुने हुए उस मेहमानके आगे धर कर कहा इनको बराबर हिसाबसे बांट दीजिये। उसने एक २ अंडा तो दो लडकोंको दिया और एक आप लिया और एक घरवालेको दिया और बाकीके तीन अंडे उसकी जोरूके आगे धर दिये। घरवालेने कहा यह कैसा हिसाब है? उसने कहा सबके पास बराबर तीन २ ही हो गये हिसाब ठीक है। फिर उसने चार मुरगे भुने हुये मेहमानके आगे धर कर कहा इनको भी हिसाबसे बराबर बांट दो। उसने एक मुरगा घरवाले और उसकी जोरूको दिया और एक मुरगा दोंनो लडकोंको दिया

और दो मुरगे आप लिये । फिर घरवालेने कहा यह कैसा हिसाब है ? उसने कहा दो तुम और एक मुरगा मिलकर तीन हुए । दो हमारे लडके एक मुरगा मिलाकर तीन और एक मैं और दो मुरगा मिलाकर तीन हुए । हिसाब तो बराबर है ॥ २३ ॥

## दृष्टांत अकलमंदीपर २४.

जब नादिरशाहने देहलीको फतह किया, तब एक रोज मुहमदशाह बादशाह देहलीका और नादिरशाह दोनों बराबर बैठे थे। मुहमदशाहने अपने नौकरको कहा हुक्का भरलाओ, वह जब हुक्का भरके लाया तब अपने दिलमे ख्याल करने लगा किसके आगे हुक्का रक्खूँ ! जिसके आगे पहले न रक्खूं वही नाराज होगा उसने मुहमदशाहके आगे हुक्का रखकर कहा बादशाहोंकी खातिरदारी करनी बादशाहोंको ही मुनासिब हैं, हम नौकरोंका काम नहीं हैं ॥ २४ ॥

## दृष्टांत अकलमंदीपर २५.

एक आदमीको दो लडके इकठे पैदा हुए जब कि, बाप मर गया और वह सयाने हुए तब जायदादका झगडा पडा और तमाम वकीलोंकी यह राय हुई कि, जो पहले बाहर निकला है वह बडा है और वही गद्दीका मालिक होना चाहिये ? एक वकीलने उस मुकदमे को लिया, जब पेशी हुई तब उस वकीलने एक तंग कुलिया

मट्टीकी और दो पैसे हाकिमके सामने रख दिये और कहा इन दोनों पैसोंको एक २ करके इस कुलियामें डाल दीजिये और फिर निकालिये। हाकिमने उन पैसोंको क्रमसे डाल-करके जो निकाला तब जो पैसा कि पहले डाला था वह तो पीछे निकला और जो पीछे डाला था वह पहले निकला। वकीलने हाकिमसे कहा मुद्दई बडा है क्योंकि जो नुतफा पहले भीतर गया और पीछे बाहर आया वही बडा हुआ, बहुत कालतक दूसरेकी अपेक्षासे गर्भमें रहा। जो पीछे नुतफा भीतर गया और पहले बाहर निकला वह छोटा हुआ। हाकिमने उसीको डिगरी देदी ॥ २५ ॥

## दृष्टान्त अकलमंदीपर २६.

किसीका लडका बहुत कालतक न्यायशास्त्र पढता रहा। जब घरमें आया तब बापने उससे कहा किसी दूसरी विद्याको तू पढता तब तो कुछ जीविका भी सिद्ध होती, इससे तो कुछ भी सिद्ध नहीं होगा। बेटेने कहा मैं इसीसे बहुत कुछ सिद्ध कर लेऊँगा। बापने किसी फलको उसके आगे धरके कहा भला इसमें तू क्या सिद्ध करेगा ? उसने कहा चाहूँ तो एकके दो सिद्ध कर देऊँ। बापने कहा अच्छा कर तो सही। बेटेने कहा हर एक चीज दोके मिलनेसे बनती है एक तो उसके अवयव होते हैं दूसरा अवयवी होता है। बस यह फल भी दो हैं एक अवयवीरूप हैं दूसरा अवयवरूप है। बापने उस फलको उठाकर खालिया

और लडकेसे कहा उस दूसरे फलको तुम खा जाओ जिसको तुमने सिद्ध किया है ॥ २६ ॥

## दृष्टांत अकलमंदीपर २७.

किसी राजाने एक दिन बैंगनकी तरकारी खाई, तब उनको बडा स्वाद मालूम हुआ। दरबारमें आकर राजा कहने लगे बैंगनकी तरकारी बडी अच्छी होती है। दीवानजी भी बैंगनकी तारीफ करने लगे, कि यह देखनेमें भी बडा सुन्दर होता है, वर्ण भी इसका श्याम होता है, तथा रेचक भी होता है, इस तरह बैंगनकी बहुत तारीफ की। फिर जो किसी रोज राजाने बैंगनकी तरकारी खाई तब बैंगनने राजाको नुकसान किया। राजा दरबारमें आकर कहने लगे बैंगन बडी खराब चीज है। दीवानने कहा बैंगनका रंग भी बुरा है, गर्म भी है और भी इसमें नुकसानकारक दोष हैं। दरबारवालोंने कहा उस दिन तो आप बैंगनकी तारीफ करते थे आज आप निंदा करते हैं, यह कैसी बात है? वजीरने कहा हम बैंगनके नौकर नहीं हैं हम तो राजा साहिबके नौकर हैं ॥ २७ ॥

## दृष्टान्त अकलमंदीपर २८.

किसी बादशाहने अपने वजीरसे कहा कि एक आदमीको हम अपनी खिदमतके लिये नौकर रक्खेंगे सो बुलाओ। वजीरने एक आदमीको बुलाया, बादशाहने उससे कहा चीनीका प्याला उठा लाओ, वह उठालाया। फिर कहा इसको फेंक

देओ । उसने फेंक दिया वह प्याला टूटगया । बादशाहने कहा क्यों तोडा है ? उसने कहा हुजूरनेही फरमाया था । बादशाहने कहा इसको निकाल देओ। वह निकाला गया। इसी तरह दूसरेसे कहा उसने भी वैसेही किया उसकोभी निकाल दिया । कई आदमियोंको निकाल दिया । एकसे बादशाहने प्यालेको तोडनेको कहा, उसने तोड दिया । बादशाहने कहा क्यों तोडा ? उसने कहा हमारा कसूर हुआ। बादशाहने उसको रख लिया । वजीरने इसका सबब पूँछा । बादशाहने कहा नौकर वही ठीक होता है जो मालिकके कसूरको भी अपनेही जिम्मे लगावे ॥ २८ ॥

## दृष्टान्त अकलमन्दीपर २९.

किसी उदारसे एक महात्माने सवाल किया । उस महात्माने मांगा सो देदिया महात्माने कहा तू बडा लालची है। फिर एक कृपणसे सवाल किया उसने कुछ न दिया, तब उससे कहा तू बडा संतोषी है। किसीने महात्मासे कहा आपने जो कहा है उसका तात्पर्य क्या है ? महात्माने कहा जो सुखी है वह इस वास्ते लालची है कि, जो एकके हजारों उसको मिलेंगे फिर भी तृप्त नहीं होता है । देताही चला जाता है, जो बहुत मिले। और जो कृपण है वह कुछ देता तो है नहीं इसलिये उसको कुछ मिलेगा भी नहीं वह अपना उतनेमें ही संतोष करके बैठा है जितना कि उसके पास है ॥ २९ ॥

## दृष्टान्त अकलमन्दीपर ३०.

किसी आदमीने कुत्तेसे पूँछा तुम हरवक्त रास्तेमें क्यों पडे रहते हो? उसने कहा मैं भले और बुरे आदमीकी परीक्षा करता हूं। उसने पूँछा कैसे ? कुत्तेने कहा भला आदमी तो अपने रास्तेसे चला जाता है मगर बुरा आदमी मुझको ठोकर लगा जाता है ॥ ३० ॥

## दृष्टान्त अकलमन्दीपर ३१.

किसी सेठ साहूकारसे एक ब्राह्मणने जाकरके कहा लालाजी ! आज हमको मिठाई पेट भरकर खिलाओ। सेठने उसको पेट भरकर मिठाई खिलादी। हाथ धोकर ब्राह्मणने कहा लाला तुमको स्वर्गकी प्राप्ति हो और फिर तुम्हारा जन्म ब्राह्मणके घरमें हो। इस बातको सुनकर उससे कहा अरे मूर्ख! स्वर्गके भोग तो हमको अभी सब मिले हुए हैं उनको दुःखरूप जानकर मैं उनके त्याग करनेके फिकरसे हूं और जो कि तूने कहा है तुम्हारा जन्म ब्राह्मणका हो सो ब्राह्मणके जन्मको तो मैं अच्छा नहीं समझता हूँ, क्योंकि लोगोंसे दान प्रतिग्रह लेना घर घर में तेरी तरह भीख माँगना ऐसा खराब वर हमको देता है इसलिये मार खानेके लायक है, जल्दी यहांसे निकल जा नहीं तो मार खायेगा ॥ ३१ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर ३२.

किसी राजाने एक पंडितसे कहा हमको ऐसी कथा सुनाओ जिसके सुननेसे हमको आत्मज्ञानका लाभ हो जाय।

पंडितने कहा श्रीमद्भागवतको सुनिये। राजाने कहा जिस विधिसे परीक्षितको शुकदेवने श्रीमद्भागवत सुनाया था, उसी विधिसे तुम हमको भी सुनाओ। परंतु यह शर्त है कि अगर हमको आत्मज्ञानका लाभ होजायगा तब तो मैं आपको एक ग्राम देऊँगा नहीं तो कुछ भी नहीं देऊँगा पंडितने उसी विधिसे राजाको भागवत सुनाया। जिस दिन भागवत समाप्त हुआ, पंडितने राजासे कहा आपको ज्ञानका लाभ होगया होगा। राजाने कहा हमको तो कुछ भी लाभ नहीं हुआ है। पंडित पोथी बांधकर अपने घरमें चला गया और राजाने तिसके प्रति ग्रामको न दिया। तब पंडित लोगोंसे कहता फिरे कि राजाको ज्ञान तो होगया है, परंतु ग्राम देना पडता है इस लिये ज्ञान होनेका इनकार करता है। यह खबर राजाको भी पहुँची, तब राजाने पंडितको बुलाकर कहा—इस वार्ताको किसी महात्मासे फैसला करना चाहिये। दोनों एक महात्माके पास गये। महात्माने दोनोंके हाथ पांव बांध दिये और पंडितसे कहा तुम राजाके हाथ पांवको खोल देवो। पंडितने कहा मेरे तो अपने ही बँधे हुए हैं मैं कैसे खोल सकता हूँ ? राजासे महात्माने कहा तुम पंडितके हाथ पांवको खोल दो। राजाने कहा मेरे भी हाथ पांव बँधे हैं मैं कैसे खोल सकता हूं ? तब महात्माने कहा तुम दोनों तो अनेक प्रकारकी वासना करके बँधे हुए हो ज्ञान किसको हो ? बस, पंडितजी शरमिंदे होकर अपने घरको चले गये ॥ ३३ ॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर ३३.

एक स्त्री रास्तेमें जाती थी, उसके पीछे एक बंदर दौडा वह एक दरख्तके गिरदे फिरने लगी। मूर्ख बंदरने दोनों हाथोंसे उस दरख्तकी जफा पा लिया। स्त्रीने उसके दोनों हाथ पकड लिये बंदर फस गया। इतनेमें एक अहीर आ निकला। उससे स्त्रीने कहा जरा तुम इस बंदरके हाथोंको पकड़ो तब मैं कपडा सँभाल लेऊं। अहीरने कहा अगर तू हमारे साथ रमण करनेको मंजूर कर लें तब तो मैं बंदरके हाथोंको थामता हूँ। स्त्रीने मंजूर किया। अहीरने बंदरके हाथोंको पकडा। स्त्रीने चाकू निकालकर बंदरका गला काट दिया और अहीरसे कहा चलो। आगे किसी एकांतमें थोडी दूरपर चलें। जब थोडी दूर वह गई, उसके ग्रामके आदमी उसको मिल गये; उनके साथ वह अपने घरको चली गई॥ ३३॥

## दृष्टान्त बुद्धिमानीपर ३४.

ईरानके बादशाहकी कचहरीमें रूमके बादशाहका वजीर बैठा था। उससे ईरानके बादशाहने पूँछा तुम्हारे बादशाहके पास कितना खजाना है और मुल्क कैसा आबाद है। फिर पूँछा कि, फौज कितनी है ? वजीरने जवाब दिया प्रजा सुखी है। फिर कहा तुम्हारे बादशाह बडे हैं या हमी। जवाब दिया आप पूर्णमासीके चन्द्रमाकी तरह हैं, वह दूजके

चन्द्रमाकी तरह छोटे हैं। रूमके वजीरको विदा करके ईरानके बादशाहने रूमके बादशाहकी तर्फ लिखा कि, तुम्हारे वजीरसे हमने इस तरहके सवाल किये और उसने इस तरह जवाब दिये। जवाबोंसे मालूम हो गया जो तुम्हारा वजीर अकलमंद नहीं है। जब वजीर देशमें गये तब रूमके बादशाहने उसको इनाम दिया और ईरानके बादशाहकी तरफ लिखा कि, हमारा वजीर बडा अकलमंद है। उसने जवाब पूरे दिये हैं। मुल्कका आबाद रहना ही बादशाहोंका खजाना होता है, अगर मुल्क आबाद न हो तब रुपये कहां बादशाहको मिल सकते हैं? और सुखी प्रजा ही बादशाहकी फौज है। अगर प्रजा दुःखी होगी तब दुश्मनसे मिलकर बादशाहीको गारत कर देगी। और प्रजा सुखी होगी तब अपने बादशाहकी मदद करेगी। फिर पूर्णमासीके चांदकी तर्फ कोई भी नहीं देखता है, किंतु सब लोग दूजके चांदकी ही तर्फ देखते हैं। दूजका चांद पूर्णमासीके चांदसे अधिक पूजनीय होता है ॥ ३४ ॥

## दृष्टान्त अकलमंदीपर ३५.

किसी बादशाहके दर्बारमें एक अय्याश पुरुष जाकर रहने लगा। थोडे दिनोंके पीछे बादशाह उसको बहुत मानने लगे। वजीर उसके साथ हसद ईर्षा करने लगे। बादशाह इस बातको जान गये। एक दिन बादशाहने बडे भारी दामवाले मोती

को दर्बारमें धर करके वजीरोंसे कहा इसको तोड दीजिये, किसीने भी न तोडा। तब बादशाहने उस अघ्याशसे कहा इसको तुम तोड डालो। उसने पत्थर मारकर मोतीको तोड दिया। बादशाहने वजीरोंसे कहा तुमने एक मोतीको न तोडा मगर मेरे हुकुमको तोड दिया। नौकर वही खैरख्वाह कहलाता है जो मालिकके हुकमको न तोडे। उस अघ्याशको बादशाहने वजीर बना दिया॥ ३५॥

## दृष्टांत अकलमन्दीपर ३६.

किसी राजासे एक दिन खिदमतगारने कहा हुजूर ! हम लोग रात्रिदिन खिदमत करते हैं तब भी हम लोगोंको थोडी २ तनख्वाह मिलती है और मुनशी लोग दो घंटा काम करते हैं उनको बहुत तनख्वाह मिलती है। इतने में एक बरात जाती हुई दूरसे राजाको दिखाई पडी। राजाने उस नौकरसे कहा—जाकर इसका हाल तू दर्याफ्त कर कि कहांसे आई है ? नौकरने पूँछकर राजासे कहा पूर्वसे आई है। फिर राजाने मुनशीको भेजा। मुनशीने पूँछा कहांसे आई है, कहांको जावैगी, लडका कितने बरसोंका है, लडकी कितने बरसकी है, कौन जातिकी है, जहां पर जावेगी उस ग्रामका क्या नाम् है, सब हाल लिख करके ले आया। राजाने खिदमतगारसे कहा जितनी जिसकी अकल उतनी उसको तनख्वाह दी जाती है॥ ३६॥

## दृष्टान्त अकलमंदीपर ३७.

एक आदमी जब विदेशमें चला तब उसने एक ऐसी छडी बनवाई जो बीचमें खाली थी। उसमें उसने सोनेकी अशरफी भर दी और ऊपरसे उसके मुखको बंद कर दिया। उसी छडीको लेकर वह विदेशमें चला। रात्रिको किसी ग्राममें एक बुढ़ियाके घरमें वह जाकर ठहरा। भोजन करके जब वह सो गया, तब उसकी छडीको सुन्दर जानकर बुढियाने चुरा लिया और उसकी जगहमें दूसरी छडी धर दिया। सबेरे जब जागकर उसने छडीको देखा तब मालूम हुवा कि वह छडी बदल गयी है। उसने विचार किया यदि मैं सीधी तरहसे मांगूंगा तब तो यह नहीं देगी, कोई हिकमत करनी चाहिये। उसने वहांसे चलकर दूसरे ग्राममेंसे बहुतसी खूबसूरत छडियोंको खरीदा और उसी ग्राममें आकर पुकारने लगा, पुरानी छड़ियोंपर नई छडियें बदला लेवो। लोग छडियोंको लाकर बदलाने लगे। इतनेमें वह बुढिया भी उसकी छडीको लाकर एक सुन्दर छडीसे बदलाकर ले गई। जब अपनी छडी उसके हाथमें आगई तब उसने लोगोंसे कहा अब आज नहीं और रोज बदली जायँगी और चल दिया॥ ३७॥

## दृष्टांत अकलमन्दीपर ३८.

किसी ग्राममें एक बडा धनी प्रारब्धका तेज और अकलका मंद रहता था। परंतु भाग्यके वशसे स्त्री उसको बड़ी

अकलमंद मिल गई थी और अति सुंदर भी थी। एक दिन बनिया हवा खानेके लिये जंगलमें चला गया, वहांपर एक आंखका काना ठग भी घूम रहा था, उसको देखकर वह ठग जान गया कि यह बनिया मूर्ख है। ठगने बनियाको सलाम करके कहा मेरे बापने आपके बापके पास सौ रुपये में एक आंख रहन रक्खी थी सो आप अपने रुपया लीजिये और उस आंखको दीजिये। ठगकी इस वार्ताको सुनकर बनियाने घबरा करके उससे कहा मेरे साथ मेरे घरपर चलो मैं वहांपर तुमको देऊँगा। वह ठग उसके साथ चला गया। बनियाने स्त्रीसे हाल कहा उसकी स्त्रीने ठगसे कहा आठवें रोज आकर रुपया देकर ले जाना। वह ठग चला गया। उसकी स्त्रीने कसाईको बुलाकर उससे दस बीस बकरोंकी आंखें मँगाकर एक डिबियामें धरदीं। आठवें दिन ठग रुपया लेकर उसके घरमें आया, स्त्री रुपये उससे लेकर वह आंखों-वाला डिब्बा उसके सामने रखकरके कहा अपनी आंखको निकालकर उसके साथ बराबर तौलवाली आंखको तुम इन-मेंसे ले लेओ। इस बातको सुनकर ठग घबराकरके भाग गया और उसके रुपये बनियाकी स्त्रीने रख लिये। यह अक-लमन्दीका फल है ॥ ३८ ॥

## दृष्टांत अकलमन्दीपर ३९.

एक लडकी नित्यही अपनी माईके साथ कथा सुननेको जाती थी और उसका मन बडा शुद्ध हो गया था, जब

उसका विवाह हुआ और वह ससुरालमें रहने लगी तब उसकी सास नित्य ही उसके साथ लडाई झगडा किया करे। जब फिर अपने मैकेमें आई और अपनी माईके साथ महात्माके पास कथा सुननेको गई तब महात्माने उससे पूँछा तेरे ससुरालवाले तेरे साथ कैसे वर्तते हैं ? उसने कहा और तो सब अच्छे हैं मगर मेरी सास मेरे साथ नित्य लडाई झगडा किया करती है। कोई यंत्र ऐसा कर देओ जो वह लडाई न करे। महात्माने एक सादे कागजको लपेटकर कपडेमें सीकरके उसको दिया और कहा जिस कालमें तेरे साथ सास लडाई झगडा किया करे उस काल तू इसको दांतोंमें दबाकर बोला न कर, थोडे दिन ऐसा करनेसे फिर वह तेरे आधीन हो जायगी। जब थोडे दिन ऐसा किया तब उसकी सासने लडाई झगडा करना सब छोड दिया और उसके अनुसार ही चलने लगी ॥ ३९ ॥

## दृष्टांत अकलमन्दीपर ४०.

किसी ग्राममें एक बनिया बडा बुद्धिमान् रहता था। उसके लडकेका जब विवाह हुआ और पतोहू घरमें आई तब बनियाने उसकी बुद्धिकी परीक्षा करनेके लिये पतोहूसे पूछा सब ऋतुओंमेंसे कौनसी ऋतु अच्छी है ? पतोहूने गरमीकी ऋतुको अच्छा बताया। तब उसने दूसरी शादी लडकेकी कराई और फिर उससे भी पूँछा कौनसी ऋतु अच्छी है ?

उसने सरदीको बताया । तब फिर तीसरी शादी की और उससे भी पूँछा की कौनसी ऋतु अच्छी है ? उसने वर्षाऋतुको अच्छा बताया । तब बनियाने चौथी और एक शादी लडकेकी कराई और उससे भी उसी तरह पूँछा कौनसी ऋतु अच्छी है ? उसने कहा युवावस्थारूपी ऋतु अच्छी है । उसीको बनियाने बुद्धिमती समझकर घरकी मालकिन बनाया । ठीक है सब अवस्थाओंमें युवाही अच्छी होती है ॥ ४० ॥

## दृष्टांत बुद्धिमानीपर ४१.

एक जमींदारके लडके मूर्ख थे कुछ भी खेती गृहस्थीका काम नहीं करते थे । मरनेके समय उस जमींदारने अपने लडकोंसे कहा फलाने खेत में मैंने धनको गाढ़ा है, सो तुम मेरे मरनेके पीछे खोदकर उसको निकाल लेना । ऐसे कहकर वह मर गया । उसकी क्रिया कर्मोंके पश्चात् लडकोंने जाकर उस खेतको सब तरफसे खूब खोदा, मगर धन कुछ भी उसमें न मिला । तब निराश होकर उन्होंने उसको बोय दिया । उस सालमें आगेसे चौगुना अन्न उस खेतमें पैदा हुआ, तब लडके पिताकी बुद्धिमानीको जानकर खेतीमें खूब मेहनत करने लगे ॥ ४१ ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामिहंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधरेण पेशावरनगरनिवासिना विरचितदृष्टान्तमञ्जूषानामकग्रन्थे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

## सप्तमोऽध्याय

अब इस अध्यायमें हाकिमोंके इन्साफपर दृष्टांतोंको दिखाते हैं:—

### दृष्टान्त इन्साफपर १.

किसी ग्राममें एक बनिया रोजगारमें घाटा पडनेसे बहुतसा करजदार हो गया था। जब लेनेवालोंने उसको बहुतसा तंग किया, तब रात्रिको उसने अपनी स्त्रीसे कहा लेनेवालोंने बहुतसा हमको तंग किया है, चलो तुम्हारे मैकेमें चलें। यदि वह कुछ मदद देंगे तब तो काम चलनिकलेगा। वहांसे चार कच्चे कोश उसके सुसरालका घर था, स्त्रीने कहा चलो। वह स्त्रीको साथ लेकर एक पहर रात्रिके बीतजानेपर घरसे चलपडा। धीरे २ जब ससुरालके ग्रामके समीप पहुँचा, तब एक कूवेके किनारेपर बैठकर उसने स्त्रीसे कहा—पहले तू उनके घरमें जा, अगर तुम्हारा वे कुछ आदर सत्कार करें तब फिर हमको भी बुलालेना, हम इसी जगह पर बैठते हैं। अगर तुम्हारा वे कुछ भी सत्कार न करें तब खडे २ ही लौट आना और अपने घरहीमें वापस चले जायँगे, जो बनेगी सो भोगलेवेंगे। जब स्त्री अकेलीही मैकेको चलीगई तब उन्होंने उसका कुछ भी सत्कार न किया, वह उसीदम लौटकर पतिके पास चली आई और उसी दम दोनों वहांसे अपनी ग्रामको वापस चले। जब ग्रामके समीप पहुंचे, तब बनियां-

की स्त्री रास्तामें गिरपडी, क्योंकि वह गर्भवती थी और बालकके उत्पन्न होनेका समय पहुंचगया था। उसने पतिसे कहा मुझको उठाकर रास्तासे किनारेके खेतमें लेचलो। ज्योंही पति उसको उठाकर खेतमें लेगया त्योंही उसके लडका पैदा हुआ। थोडी देरके पीछे जब स्त्री होशमें आई तब उसने पतिसे कहा लडकेको साफ करके मेरी गोदमें देदो और इस जेरको और रुधिर मलको बटोरकर एक कपडेमें बांधकर खेतमें जाकर गाडदो। उसके पतिने उस जेरको बटोरकर और कपडेमें बांधकर एक खेतमें गाडनेके लिये जमीनको ज्योंही थोडासा खोदा तो उसमेंसे एक हांडी अशरफियोंकी भरीहुई निकल आई। उसको लेकर स्त्रीके पास आकर उसने कहा काम तो बनगया है, अब जल्दी घरको चलो। बस स्त्रीको साथ लेकर धीरे २ कुछ रात्रिके बाकी रहतेही वह दोनों अपने घरमें पहुँचगये। उनको आने जानेके हालको किसी पडोसवालेने भी न जाना। दश पांच दिनोंमें बनियाने अपने सब कर्जको अदा करदिया और बडी चैनसे अपनी गुजर करनेलगा। उनको पडोसवालोंने देखा कि, इसके पास तो कुछ नहीं था अब कहांसे इनको द्रव्य मिल गया है। एक पडोसीकी स्त्रीने बनियाकी स्त्रीसे हाल पूछा वह बेचारी सूधी सादी थी उसने सब हाल द्रव्यका मिलनेका बतादिया। उस स्त्रीने अपने पतिसे कहा। उसका पति जमींदार था उसने कहा वह खेत तो हमारा है जिसमें उनको द्रव्य मिला

है। उस जमींदारने जाकर हाकिमके पास नालिश करदी, कि हमारे दादाका धन गाडा हुआ खेतमेंसे फलाना बनिया निकालकर लेगया है। हाकिमने बनियाको बुलाकरके कहा सच २ कहो तुमको द्रव्य कैसे मिला है ? उसने संपूर्ण हाल हाकिमके सामने सच २ बयान करदिया। हाकिमने जमींदारसे कहा यह द्रव्य तुम्हारे दादाका है सो तुम्हाराही दादा इनके घरमें जन्मा है, जबतक नहीं जन्मा था तबतक इनको द्रव्य भी नहीं मिला था उसके जन्मतेही द्रव्य भी इनको मिला है, सो जितना द्रव्य इन्होंने खर्च करदिया सो तो करदिया बाकीका द्रव्य अदालतमें जमा रहे जब यह बालक सयाना होगा तब सब द्रव्य इसको मिल जायगा। फिर जमींदारसे हाकिमने कहा तुम्हारेपर पांच रुपये महीनाको डिगरी होती है सो पांचरुपये महीना तुम अपने दादाकी परवरिशके लिये उस बनियाको दिया करो। तुम्हारे परदादाका हक है। अदालतने ऐसा पूरा २ इन्साफ करदिया ॥ १ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर २.

किसी अमीरका नौकर अपने मालिकका कुछ द्रव्य लेकर विदेशमें भाग गया। मालिक भी उसको पकडनेके लिये उसकी खोजमें निकला। एक नगरके बाजारमें वह नौकर मालिकको मिलगया, मालिकने उसका हाथ पकड लिया और कहा जो माल तू हमारा चुराकर लाया है सो हमको

दे वरना तुमको हाकिमसे सजा दिलवाऊंगा। नौकरने भी मालिकका हाथ पकडकर कहा जो माल हमारा तू चुरालाया है सो हमको देदे वरना तुमको सजा दिलवाऊंगा। दोनों आपसमें एक दूसरेको नौकर बताते और झगडते हुए हाकिमके पास गये। हाकिमने दोनोंकी बातको सुन करके हुकुम दिया दोनों तुम एक खिडकीसे शिरको बाहरकी तरफको निकालो जिस कालमें दोनोंने अपने २ शिरको बाहर निकाला उस कालमें हाकिमने कहा जल्लाद नौकरके शिरको काट डालो। इस बातको सुनते ही नौकरने झटपट अपने शिरको खिडकीके भीतर करलिया और मालिक बेखटके उसी तरहसे खडा रहा। हाकीमने नौकरको दण्ड दिया और उससे मालिकको माल भी दिलवादिया ॥ २ ॥

## दृष्टांत इन्‌साफपर ३.

एक आदमीने दूसरेको अपना कूवा बेचडाला, जब उसमेंसे पानी भरने लगा, तब उसने कहा मैंने कूवा बेचा है कुछ पानी नहीं बेचा, तुम पानी इसमेंसे भरो मत। दोनोंका आपसमें झगडा होनेलगा हाकिमके पास गये, हाकिमने कहा जब कि तूने कूवा बेचदिया है तब फिर उस कूवेमें अपना पानी क्यों रखा है जल्दी अपना पानी उसमेंसे निकालकर लेजावो वरना जुरमाना करूंगा। आखिर राजीनामा उसको देना पडा ॥ ३ ॥

## दृष्टांत इन्साफपर ४.

एक चारबरसके सुंदर लडकेके ऊपर झगडा करतीहुई दो औरतें हाकिमके पास गई। एक तो कहे यह लडका मेरा है, दूसरी कहे यह लडका मेरा है। हाकिमने गवाह पूँछे तब दोनोंने कहा हमारा गवाह कोई नहीं है। तब हाकिमने जल्लादको बुलाकरके कहा इस लडकेके दो टुकडे करके आधा २ एक २ को दे डालो। इस बातको सुनकर जो लडकेकी असली मा थी, उसने शोर मचाया और हाकिमसे कहा अगर येही इन्साफ है तब लडकेके दो टुकडे मत करो, इसी दूसरी औरतको यह लडका दे डालो। हाकिम जान गया जो यह लडका इसीका है। इसीके दिलमें प्रेमका जोश उठा है और दूसरी तो बोली भी नहीं है। हाकिमने उसीको लडका दिलवा दिया जिसने शोर मचाया था ॥ ४ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर ५.

एक आदमीने राजाके पास जाकर फरयाद की कि, कोई आदमी मेरी जोरूसे मिला है, मगर मैं उसको पकड नहीं सकता हूं। सरकारकी मदद चाहता हूं जो कि वह पकडा जाय। राजाने एक शीशी अतरकी उसको दे करके कहा इस शीशीको ले जाकर तुम अपनी औरतको देकर कहना इसको रख छोडै और इसमेंसे किसीको भी न देवे। उसने उस शीशीको लेकर अपनी औरतको देकर वैसे ही कह दिया। और

इधर राजाने दो चार जासूसोंको उसके घरके आस पास लगा दिया, जो आदमी उसके घरके पाससे निकलकर जाय और उसके कपडोंसे इतरकी सुगंधी आवे उसको पकड लावो उधर उसकी जोरूका यार मौका पाकर जो उसके घरमें गया उस स्त्रीने उसी शीशीमेंसे अतरको उसके कपडोंपर लगा कर कहा इस अतरको तो देनेका हुकुम हमको नहीं है, मगर तुमको मैं अपना प्यारा दोस्त जानकरके लगाती हूं। वह शख्स ज्योंही उस घरसे निकला और जासूसको रात्रिके समय उसके कपडोंसे इतरकी सुगंधी आई त्योंही उसको पकड लिया और राजाके पास हाजिर किया। राजाने उसको दण्ड किया ॥ ५ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर ६.

एक स्त्रीने हाकिमके पास जाकर फरयाद की, कि फलाने आदमीने जबरदस्ती मेरेसे भोग किया है। हाकिमने उस आदमीको बुलाकर पूँछा उसने इनकार किया, तब हाकिमने दस रुपये उस आदमीपर जुरमाना करके कहा यह दश रुपये उस औरतको दिया जाय। उस मर्दसे दश रुपये लेकर सिपाहियोंने उस औरतको दिलवा दिये। रुपयोंको लेकर जबकि वह औरत दरबारसे बाहर निकली तब हाकिमने उस मर्दसे कहा तुम जाकर अपने दश रुपये उससे मांगो। अगर न दे तब जबरदस्ती छीन लेना। उस मर्दने जाकर बहुतसा जोर किया मगर उस औरतने रुपये उसको नहीं

दिये। और आकरके हाकिमसे कहा यह मर्द हमसे दश रुपये छीनना चाहता था, मगर छीन नहीं सकता है। हाकिमने कहा जबकि दश रुपये यह तुमसे छीन नहीं सकता तब जबरजूजना कैसे किया होगा ? बस तू इसके रुपये इसको वापस करदे, क्योंकि तूही झूठी है ॥ ६ ॥

## दृष्टान्त इन्साफ़पर ७.

एक मिस किसी सौदागरकी दूकानपर कुछ सौदा लेने को गई, दूकानके भीतर लेजाकर तरह २ की चीजें सौदागरने उसको दिखाई, सौदागरका उसपर मन चला गया। तब उसको बहानेसे और भीतरके मकानमें लेगया और वहां पर उसको गिराकर उसने उससे भोग किया और भोगकर के उसको छोड दिया। वह मिस क्रोधसे बाहर निकलकर थानेमें गई और इधर सौदागर भागकरके एक वकील के घरमें जा छिपा। मिसके वारसोंने उसपर मुकदमा दायर किया। और वारंट जारी कराया। वकीलने उससे दश हजार रुपया लेनेका करार करके मुख्तारनामा लिखवाकर अरजी दे जमानत करादी। और उसको समझा दिया जब पेशी होगी तब तुम बहरा बन जाना। पेशीके वक्त वह बहरा बन गया। मिसने कहा वह जानकर बहरा बना है। वकीलने कहा मालूम तो ऐसा होता है जिस वक्त इस सौदागरने जबरदस्ती इसको पकडा है उसवक्त यह मिस बडे जोरसे चिल्लाई है, उसी चिल्लानेकी आवाजसे यह बहरा हो गया है। वकीलकी इस

वार्ताको सुनकर उस मिसने कहा मैं तो उस कालमें जरा भी नहीं बोली थी। वकीलने कहा जब तू जरासी भी नहीं बोली थी तब तेरी रजामन्दी हुई। जबरनूजना तो न हुआ। बस इसी बातपर मुकद्दमा खारिज हो गया ॥ ७ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर ८.

एक आदमीने बादशाहके पास जाकर फरयाद की कि, कल रातको एक आदमी हुजूरकी फौजका मेरे घर आया, और मेरी लौंडीके साथ जबरदस्ती जना करके चला गया। बादशाहने कहा फिर आज रोज रातको जिस वक्त वह तुम्हारे घरमें आवे उसी वक्त तुम मुझको खबर करना। इस हुकुमको सुनकर वह अपने घरमें चला गया। जब आधी रातको फिर वह आदमी उसके घरमें घुसा तब उसने बादशाहको उसी वक्त जाकर खबर की। बादशाह तलवारको लेकर उसके घरमें पहुँचे उस आदमीको देखकर पहले बत्तीको बुझा दिया और उस आदमीको कतल कर डाला, फिर बत्तीको जलाकर उस मुरदेको देखकर घरवालेसे कहा तेरे घरमें जो खाना तैयार हो उसको ला। घरवाला खानेको ले आया, बादशाहने शुक्रिया अदा करके खानेको खाया। घरवालेने पूंछा इसकी क्या वजह है जो पहले आपने बत्तीको बुता दिया और पीछे बत्तीको जलाकर शुक्रिया अदा करके खाना खाया। बादशाहने कहा जिस वक्त तूने मेरे पास जाकर फरयाद की थी उसी वक्त मैंने अपने दिलमें

इस बातकी कसम करली थी जबतक उस चोरको अपने हाथसे न मारूंगा तबतक खाना नहीं खाऊँगा। फिर जब मैं तुम्हारे साथ रात्रिको आया तब मेरे दिलमें यह ख्याल हुआ कि, ऐसा काम बगैर मेरे लडकेके कौन करेगा। ऐसा न हो जो मुहब्बतसे तलवार उसके मुखको देखकर न चलाई जाय इस वास्ते मैंने पहले बत्तीको बुता दिया जब उस आदमी को कतल करके फिर उसका मुख देखा तब मालूम हुआ जो यह हमारा लडकेका नहीं है, किंतु कोई सिपाही है। तब लडकेके बच जानेकी खुशीमें शुक्रिया अदा किया और पीछे खाना खाया ॥ ८ ॥

## दृष्टांत इन्साफपर ९.

किसी नगरसे एक आदमी कहीं सफरको जाने लगा और एक हजार रुपये एक अत्तारके पास अमानत रखकर विदेश में चला गया। तीन बरसके पीछे आकर उसने अपने रुपये अत्तारसे मांगे, अत्तार सुनकर अचंभित हो गया और कहने लगा तुमने रुपये किसको दिये हैं ? तू झूँठ कहता है, मेरे पास रुपये तूने नहीं रक्खे हैं। जब दोनोंका झगडा होने लगा, तब दश पांच आदमी जमा हो गये और उन्होंने उससे कहा अत्तार बडा ईमानदार आदमी है यह किसीका भी माल खानेवाला नहीं है तूही झूँठा है। तूने किसी दूसरे के पास रक्खा होगा। वह आदमी लाचार होकर अपने घरको चला आया, दो चार दिनके पीछे उसने जाकर

हाकिमके पास अरजी दी। हाकिमने कहा अब तू ऐसाकर जिस बाजारमें अत्तारकी दूकान है उसी दूकानके सामने तू तीन दिनतक बराबर बैठा रह, चौथे दिन हम उधरसे आवेंगे और तुमको सलाम करेंगे तुम पहले सिर हिला देना और जो हम कहें तो कुछ नहीं बोलना। हमारे चले जानेके पीछे उस अत्तारसे रुपये मांगना वह तुमको दे देगा उसने उसी तरह किया। चौथे रोज हाकिमकी सवारी उस रास्तेसे निकली, हाकिमने उसको सलाम करके कहा अब आजकल आपका दर्शन नहीं होता है आप कहां रहते हैं? उसने जरासा सिर हिला दिया, हाकिम जब चला गया और अत्तार ने इस हालको देखा तब अपने मनमें डरा और उसको बुला कर कहा—आपके रुपये हम भूल गये थे वह रक्खे हैं आप ले जाइये। चुपचापसे उसके रुपये अत्तारने उसको दे दिये वह लेकर चला गया ॥ ९ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर १०.

दो आदमियोंने अपना माल एक बुढियाके पास अमानत रखकर कहा—हम दोनों सफरको जाते हैं जब लौट आवेंगे तब अपना माल तुमसे लेवेंगे। ऐसे कहकर मालको उसके पास रखकर दोनों विदेशमें चले गये। कुछ कालके पीछे दोनोंमेंसे एकने आकर बुढियासे कहा वह हमारा संगी तो विदेशमें जाकर मर गया तू सब माल हमको देदे। बुढ़िया भोलीभाली थी, उनके फरेबको न जानकर बुढ़ियाने सब

माल उसको दे दिया, वह लेकर चलागया। दूसरे दिन दूसरेने आकर बुढ़ियासे कहा माल हमारा देओ। बुढ़ियाने कहा तुम्हारा संगी कल आकर तुमको मरा बताकर सब माल हमसे ले गया है। उसने बुढ़ियासे कहा तुमने क्यों उसको सब माल दे दिया? अब हम अपना माल तुमसे लेवेंगे। दोनों झगडते हुए हाकिमके पास गये। हाकिमने बुढ़ियाको एकांतमें ले जाकर पूँछा सच २ कहो। बुढ़ियाने सच २ कह दिया। हाकिमने उस आदमीसे कहा जिस कालमें तुमने बुढ़ियाके पास माल रक्खा था तब कहा था हम दोनों आ-कर लेवेंगे, अब तू अपने दूसरे संगीको साथमें ला, जबतक दोनों मिलकरके नहीं आवोगे तबतक मालको नहीं पावोगे। इस फैसलेको सुनकर वह भी चल दिया; क्योंकि उसका फरेब था ॥ १० ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर ११.

एक आदमी अपना बहुतसा माल एक सराफ महाजनके पास अमानत रखके विदेश चला गया। बहुत मुद्दतके पीछे आकर उसने सराफसे अपना माल मांगा, तब सराफने कहा तूने हमको नहीं दिया है और कसम भी खा ली। उसने जाकर हाकिमसे कहा। हाकिमने सोच विचार करके उससे कहा तुम अपनी अमानत रखनेका हाल किसी दूसरेसे मत कहना और परसों जाकर उससे अपना माल मांगना। वह

चला गया। हाकिमने उस सराफको बुलाकरके कहा हमको एक खजानूचीकी जरूरत है सो मैंने आपको बहुतही सत्य-वादी और धर्मात्मा सुना है, हमारी राय है जो आपकोही अपना खजानूची बनावें। सो परसों मैं आपको बुलाऊँगा आप आ जाना ऐसे कहकर सराफको बिदा कर दिया। परसोंके दिन उस आदमीने सराफसे कहा—हमारा माल दे दो वरना मैं हाकिमके पास जाता हूं। सराफने सब माल उसको दे दिया। फिर कौन खजानूची बनाता है ? ॥११॥

## दृष्टान्त इन्साफपर १२.

किसी नगरमें एक विधवा स्त्री बहुत शराब पीती थी और बदचलन भी थी। एक दिन रात्रिके समय उसका मित्र उसके पास आया और वह उसके साथ जब कुकर्ममें प्रवृत्त हुई तब उसका छोटासा लडका रोने चिल्लाने लगा। उस बद-कारने नशेकी बेहोशी और कामके मदमें उस लडकेको मार करके पडोसीके घरमें फेंक दिया। सबेरे जब उसका नशा उतर गया तब उसने हाकिमके पास जाकर पडोसवाली स्त्री पर दावा किया कि इसने मेरे लडकेको मार डाला है, वह बेचारी पकडी गई। हाकिमने उसको कसम देकर कहा तू सत्य २ बता दे। उसने सत्य सत्य बता दिया कि मैंने इसके लडकेको नहीं मारा है। तब उसको एकांतमें ले जाकरके कहा अगर तू मेरे सामने नंगी होकर खडी होजाये तब तो मैं तुझको छोड देऊँगा। वरना कतल करवादेऊँगा। उसने

कहा इस कामको मैं कभी भी नहीं करूंगी चाहे तू कतल कराओ और चाहे आगमें हमको जला दो मगर मैं ऐसे कभी भी नहीं करूँगी। हाकिम जान गया इसने लडकेको नहीं मारा है, क्योंकि यह बडी शरमदार है शरमदारसे ऐसा काम हरगिज नहीं हो सकता। फिर उस लडकेवालीको एकांतमें लेजाकर हाकिमने कहा अगर तू मेरे सामने कपडे उतारकर खडी हो जाय तब मैं तेरा इन्साफ करूँगा। वह तुरन्त ही तैयार हो गयी। उसके चालचलनको पूँछकर हाकिमने उसीको खूनी ठहराया और उसके मुखसे उसको कायल कराकर भारी दण्ड दिया ॥ १२ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर १३.

किसी नगरमें एक अमीर क्षत्रिय रहता था, वह जब तीर्थयात्राको जाने लगा तब एक थैलीमें एक हजार अशरफी भरकर उसको बन्द करके उसपर अपनी मोहर लगा उस थैलीको अपने गुरुगादीपतके पास ले गया और कहने लगा महाराज ! मैं तीर्थयात्राको जाता हूँ इस मेरी अमानतको आप रख छोडिये। जब मैं वापस आऊँगा तब ले जाऊँगा। गुरुने कहा भीतर हमारी कोठड़ीमें संदूक धरी है उसमें तुम इसको धर देवो जब आवोगे तब लेलेना। उसने भीतर जाकर उस थैलीको उनकी संदूकमें धर दिया और आप तीर्थयात्रा करनेको चलेगये। पीछे गुरुसाहिबने ऐसी हिकमत की जो उस थैलीको मोहर भी लगी रही और अशरफी भी

उसमेंसे निकल आयीं। अशरफियोंकी जगह पैसे थैलीमें भर दिये। जब वह तीर्थयात्रासे लौटकर आये तब गुरुके पास गये और अपनी अमानत मांगी। गुरुने कहा जहांपर तुम धर गये हो वह उसी जगहमें रखी है, जाकर अपनी उठा लावो, हमने तो उसको छूवा भी नहीं है। भीतर जा कर संदूकसे थैली निकाल बाहर ला करके उसको देखा तब मोहर उसी तरहसे लगी थी वह लेकर अपने घरको चला आया। जब उस थैलीको उसने खोलकरके देखा तो उसमें अशरफी नदारद हैं किंतु उनकी जगहमें उसमें पैसे भरे हैं। उसने विचार किया अगर गुरुसे कहता हूं तो तब बाकीके सेवक मेरेकोही झूठा जानकर कहेंगे तू महात्मा गुरुवोंको दोष लगाता है। उसने राजासे जाकर सब हाल कहा। राजाने कहा तुम थैलीको मेरेको लाकर दे देवो, उसने लाकर दे दी। राजाने उस थैलीको देख भाल करके धर दिया और दर्बार में जो राजाका मसनद था उसमें जाती दफा राजाने एक सूराख कर दिया। सबेरे जब फरस झाडनेवाला आया और उसने मसनदमें सूराख देखा तब वह बहुत डरा और घबराया कि राजा हमको दण्ड देवेंगे। उसने अपने मित्रसे कहा क्या करना चाहिये? उसने कहा यहांपर एक बडा कारीगर रफू करनेवाला है उसको बुलाकर अभी इसको रफू करा डालो। वह ऐसा रफू करेगा जो मालूम भी नहीं होगा। फराशने उसको बुलाकर उसने जो माँगा सो देकर रफू कराकर उसी

तरह लगा दिया। राजा जब आये तब उन्होंने देखा वह सूराख ऐसा रफू किया हुआ है जो मालूम भी नहीं होता है। फ़र्राशको बुलाकर कहा सच कहो सूराखको तुमने किससे रफू कराया था। उसने बता दिया। राजाने उसको बुलाकर कहा ऐसा रफू कभी आगे भी किया था? उसने कहा हां, फलाने गादीपतिकी थैलीका किया था। राजाने थैली निकालकर बताई येही है? उसने कहा, हां, और उस थैलीके रफूको भी राजाके प्रति उसने बताया। राजा जान गये जो यह कर्म महात्मा गुरुओंनेही किया हैं। उनको बुलाकर कायल कराया उससे अशरफी उसको दिलवाई और महागुरुवोंको बडी भारी सजा दी॥ १३॥

## दृष्टान्त इन्‌साफपर १४.

एक आदमीके घरमें रुपयोंकी थैली गुम होगई, उसने बहुतसा शिर पटका मगर नहीं मिली। तब उसने हाकिमसे जा करके कहा। हाकिमने उसके घरके सब आदमियोंको बुलाकरके एक २ लकडी बराबर लंबी और चौडी नाप करके सबको दी और कहा कल सब फिर तुम लोग आना जिसने थैली चुराई होगी उसकी लकडी एक अंगुल बढजा-यगी। सब लकडियोंको लेकर चले आये। जिसने थैली चुराई थी उसने अपने मनमें ख्याल किया, लकडी बढजायगी तब तो हमहीं चोर साबित होजायँगे इसलिये इसको एक

अंगुल काटडालें, क्योंकि एक अंगुलबढजानेसे फिर बराबर-ही होजायगी। इस ख्यालसे उसने उस लकडीको एक अंगुल काट दिया। दूसरे दिन जब कि काजीके पास गये तब सबकी लकडी तो बराबर निकली, मगर चोरकी एक अंगुल कम निकली। हाकिमने उसीको पकडकर उससे चुराया हुआ माल मालिकको दिलवा दिया ॥ १४ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर १५.

दो आदमियोंने आपसमें एक शर्त लगाई जो हार जाय वह अपने बदनका मांस एक सेर भर कटवाकर जीतनेवाले-को दे। दोनोंमेंसे एकने शर्त हार दी तब दूसरेने कहा तू बदनका मांस कटवाकर मुझको दे; उसने इन्कार किया। दोनों झगडते हुए हाकिमके पास गये। हाकिमने कहा जिसने शर्त जीती है वह इसके बदनका मांस सेर भर काट ले मगर यह शर्त है, अगर जरासा भी सेरसे अधिक या कमती काटेगा तब वह कतल कराया जायगा। इस हुकु-मको सुनकर मुद्दईने राजीनामा दाखिल कर दिया ॥ १५॥

## दृष्टांत इन्साफपर १६.

दो सगे भाई रोजगारकी तलाशमें घरसे निकले, रास्तामें जंगल पडा, उस जंगलमें एक दरख्तके नीचे वह दोनों सुस्ताने लगे। वहांपर एक थैली मुहरोंकी उनको मिली

जिसमें दो बडे २ हीरे भी थे। उन मोहरोंको आधा २ उन्होंने बांट लिया और एक २ हीरेको भी बांट लिया। दोनोंमेंसे एक भाईने कहा हम तो अपने घरको जायँगे। दूसरेने कहा हम तो विदेशमें सैर करनेको जायँगे और तुम हमारी अशरफी और हीरेको लेजाकर हमारी औरतको देदेना। ऐसा कह उसने अपने भाईको हीरा और अशरफी देदी। उसके भाईने घरमें आकर भाईकी स्त्रीको अशरफी तो देदी मगर हीरा नहीं दिया, आप रख लिया। थोडे दिनोंके पीछे जब उसका भाई अपने घरमें आया तब उसने अपनी जोरूसे पूछा तुमको अशरफी और हीरा मिला था? उसने कहा अशरफी तो मिली है मगर हीरा मैं नहीं जानती हूँ जो कैसा होता है? मेरेको हीरा तो तुम्हारे भाईने कोई भी नहीं दिया है। उसने अपने भाईसे पूँछा तब भाईने कहा, हमने देदिया है। उसने हाकिमसे जाकरके हाल कहा। हाकिमने उसके भाईको बुलाकर पूँछा उसने दो गवाह भी गुजार दिये जो मैंने इनके सामने हीरा देदिया गवाहियोंने भी कह दिया कि हमारे सामने इसने हीरा दे दिया है। तब हाकिमने सबको जुदा २ बिठला करके कहा तुम सब कोई मट्टीका एक २ हीरा बनाओ। उन दो भाइयोंने तो ठीक २ हीरेकी शकलें बनाई और गवाहियोंने दो बडे २ गिलासोंकी तरह बनाये और औरतने कहा मैंने तो कभी हीरेको देखाही नहीं है, मैं कैसे बनाऊँ? हाकिम जान गया जो गवाह झूठे हैं और

इसकी औरतको हीरा इसके भाईने नहीं दिया । हाकिमने गवाहोंको दण्ड दिया और हीरा उसके भाईसे उसको दिलवा दिया ॥ १६ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर १७.

एक आदमीने एक बूढेके पास सौ अशरफी रक्खी थीं, जब बाहरसे आकरके मांगी तब वह बूढा सुनकर चुप होगया । दोनों झगडते हुए काजीके पास पहुँचे । काजीने बूढेसे पूछा तब बूढेने कहा मैं इसको जानताही नहीं हूं । फिर रखनेवालेसे काजीने पूछा तुम्हारा कोई गवाह है ? कहा कोई नहीं । फिर तुमने किस जगहमें बैठकर इसको अशरफियां दी थीं उसने कहा फलाने दरख्तके तले । काजीने कहा वही गवाही देगा तू जाकर उससे कहो कि काजी तुझको बुलाता है । वह चल पडा । थोडीसी देरके पीछे बूढेसे काजीने पूछा वह आदमी उस दरख्तके पास पहुँचा होगा या नहीं ? उस बूढेने कहा अभी नहीं पहुँचा होगा इधर वह आदमी जब उस दरख्तके पास पहुँचा और उस दरख्तसे कहा काजी तुझको बुलाता है । जब उसको कोई भी जवाब न मिला तब वहाना उम्मैद होकर काजीसे आकरके कहने लगा, वह दरख्त तो नहीं आता है । काजीने कहा वह दरख्त यहांपर आकर गवाही देगया

है, कि बूढा झूठा है और दावा तुम्हारा सच है । बूढेने काजीसे कहा वह दरख्त यहांपर कब आया ? काजीने कहा जब हमने तुमसे पूछा था वह आदमी अभी पहुँचा होगा या नहीं, तब तुमने कहा था कि अभी नहीं पहुंचा होगा, अगर तू उस दरख्तको नहीं जानता था तब तुमने यह क्यों कहा था कि अभी नहीं पहुँचा होगा ? बस तू झूठा है इसकी अशरफी देदे । काजीने बूढेसे उसको अशरफी दिलवाकर बूढे पर जुरमाना करके छोड दिया ॥ १७ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर १८

नौशेरवान बादशाह एक रोज जंगलमें शिकार खेलनेको गये वहांपर उन्होंने एक हरिणका शिकार किया और उसके मांसको जब भूनने लगे, तब उन्होंने नौकरसे कहा कहींसे जाकर थोडासा नमक लावो । वह ग्राममें जाकर थोडासा नमक मांगकर लाया । बादशाहने पूँछा कितनेका यह नमक लाये हो ? उसने कहा दामसे नहीं लाया हूं किंतु मांगकर लाया हूं। बादशाहने कहा आज तो तुम हमारे नामसे नमक मांगकर लाये हो, कलको कोई भारी दामकी वस्तुकोभी इसी तरहसे मांगकर मुफ्तमें लावोगे तब तो जुल्म हो जायगा । इसलिये जल्दी जाकर नमकका दाम उसके हवाले करो वरना मैं इस नमकको नहीं खाऊंगा । गुलामने जाकर

नमकका दाम उसको देदिया। तब बादशाह ने उस नमकको मांसमें मिलाकरके खाया । इन्साफ इसीका नाम है ॥१८॥

## दृष्टांत इन्साफपर १९.

किसी जंगलमें एक तपस्वी रहता था । एक दिन उसके मनमें यह ख्याल उठा कि, परमेश्वर न्यायकारी नहीं है । क्योंकि पापी लोग तो संसारमें सुखी दीखते हैं और धर्मात्मा लोग सब दुःखी दिखाई देते हैं। अब यहांसे चलकर इसी वार्ता की पूरी २ परीक्षा करनी चाहिये । ऐसे विचार करके तपस्वी वहांसे चल दिया और थोडी दूरपर जाकर उसने देखा तो खेतके किनारे पर बहुतसे किसान बैठे हैं उनसे तपस्वीने कहा क्यों भाइयो ! परमेश्वर न्यायकारी है या अन्यायकारी है ? उन्होंने कहा परमेश्वर न्यायकारी नहीं हैं, क्योंकि समुद्रमें तो वर्षा नित्यही होती है, और हम लोगोंके खेतोंमें नहीं होती है, इसीसे जाना जाता है, परमेश्वर न्यायकारी नहीं है । उसका अधिक विश्वास होगया कि परमेश्वर न्यायकारी नहीं है । फिर वहांसे वह तपस्वी आगेको चल पडा । तब परमेश्वर अपनी न्यायकारिताको दिखानेके लिये एक युवावस्थावाले पुरुषका स्वरूप धारण कर उसी तपस्वीको आ मिला और तपस्वीसे उस मनुष्यने कहा तुम भी देशाटन करनेको जाते हो और हम देशाटन करनेके

लिये जाते हैं, हमारा तुम्हारा संग बन गया । दोनों कुछ दिन इकट्ठेही विचरेंगे । तपस्वीने भी उसके संगको मंजूर कर लिया । दोनों वहांसे चलकर आये किसी ग्राममें एक सेठके घरमें जाकरके ठहरे । सेठने अतिथि जानकर दोनोंको एक अलग मकानमें ठहराया और सोने चांदीके बर्तनोंमें उनको उत्तम २ भोजन कराये। जब सबेरे चलने लगे तब वह आदमी सोनेका गिलास बगलमें दबाकर चल दिया । तप-स्वीने जब रास्तामें उसके पास गिलासको देखा तब बडा नाराज हुआ । दूसरे दिन किसी ग्राममें जाकर एक कृपण महाजनके घरमें ठहरे। पहले तो वह ठहरनेही नहीं देता था, परंतु अंतमें मान गया और रात्रिको रूखा सूखा अन्नभी इन दोनोंको खानेके लिये दिया । सबेरे चलते समय तप-स्वीके साथी सोनेका गिलास उसी महाजनको देकर चल दिये इस वार्ताको देखकर तपस्वीने कहा जिसने सेवा की उसका तो तुमने चुराया और जिसने निरादरसे रक्खा उसको वह देदिया, ऐसा काम करना अच्छा नहीं है । मैं तुम्हारा संग नहीं करूंगा । उसने तपस्वीकी खुशामद करके राजी कर लिया । अब फिर वहांसे दोनों चले। आगे किसी ग्राममें एक भक्त रहता था, दोनों उसीके घरमें रात्रिको जा रहे । भक्तने तन मन धनसे उनकी सेवा की । सबेरे जब

चलने लगे तब तपस्वीके साथीने भक्तके छोटेसे लडकेकी गर्दनको दबाकर मार डाला और वहां से चल दिया। इस वार्ताको देखकर तपस्वी बडा दुःखी हुआ और बहुत चाहा कि इसका संग मैं छोड देऊँ, परंतु उसने तपस्वीका संग न छोडा। आगे एक पहाडीके ऊपर ग्राम बसता था और नीचे उसके दर्या बहता था, यह दोनों उसी दर्याके किनारेपर एक छप्परमें जाकर ठहरगये। उसी ग्राममें एक साहूकार बडा भक्त रहता था उसने सुना कि दो महात्मा नदीके किनारेपर आकरके ठहरे हैं। उस साहूकारने अपने नौकरको उनको बुलानेके लिये भेजा। जब नौकर उनके पास पहुँचा तब तपस्वीके संगीने उसको दर्यामें धकेल दिया। वह बहकर समुद्रमें गया। इसी वार्ताको तपस्वी उससे पूँछनेके विचारमें था इतनेमें वह अन्तर्धान होगया और उसी जगहपर सुफेद दाढीवाला एक पुरुष खडा हुआ तपस्वीको दिखाई पडा। उसने तपस्वीसे कहा आपको भ्रम हुआ था, कि परमेश्वर अन्यायकारी है सो परमेश्वर अन्यायकारी नहीं है, किंतु परमेश्वर न्यायकारी है और अपनी न्यायकारिताको दिखानेके लिये वह मनुष्यका रूप धारण करके आपके साथ होगया था जो भक्त सोने चांदीके बर्तनोंमें खिलाता था वह अभिमान संयुक्त होकर अपने नामके लिये

खिलाता था। किंतु प्रेमसे वह नहीं खिलाता था। गिलास चुरानेसे उसका अभिमान दूर होगया और जो खिलाता ही नहीं था वह अब लोभसे खिलाया करेगा और जिसका लडका मार दिया था उसका पहले ईश्वरमेंही अतिप्रेम था। जबसे उसका लडका पैदा हुआ था तबसे उसका प्रेम ईश्वरसे हटकर लडकामें होगया था। वह उसको अधोगतिको प्राप्त करता; इसलिये उसका लडका मार दिया वह अब वैराग्यको प्राप्त होकर फिर परमेश्वरमेंही लग गया है। और जो नदीमें गिरा दिया गया है वह मालिककी चोरी करता था, उसी कर्मका दण्ड परमेश्वरने उसको दिया है। सारांश परमेश्वर अन्यायकारी नहीं है किंतु न्यायकारी है। उसके मुखसे परमेश्वरकी न्यायकारिताको सुनकर तपस्वी भी फिर अपने स्थानमें जाकर परमेश्वरके ध्यानमें स्थिर होगया ॥ १९ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर २०

किसी ग्राममें एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसके घरमें लडका पैदा हुआ वह खर्च बर्चकी तलाशके लिये निकला। रास्तामें पांचसौके नोट एक आदमीके गिरे थे, वे उस ब्राह्मणको मिल गये और जिसके गिरे थे उसने

इश्तिहार दिया था कि, जो मेरे नोटोंको लाकर मुझको देगा मैं आधे नोट उसको देऊंगा। ब्राह्मणने विचारा आधा तो मिलेगाही इसलिये यह नोटें मालिकको ही देनी चाहिये। ऐसा विचार कर उसने सब नोटें उसके आगे धरदीं तब उसने कहा आधे और दीजिये। ब्राह्मणने कहा मैंने जितने पाये थे आपको देदिये। वह उस ब्राह्मणको हाकिमके पास लेगया। हाकिमने कहा तुम्हारे तो एक हजारके नोट गिरे हैं और यह पांचसौके हैं। यह तुम्हारे नहीं हैं तुम जाकर अपने नोटोंकी तलाश करो। यह इसी ब्राह्मणको मिलने चाहिये। वह पांचसौके नोट हाकिमने उसी ब्राह्मणको दिलवा दिये। क्योंकि ब्राह्मण सच्चा था और वह झूठा था ॥ २० ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर २१.

एक बादशाहने अपने दरबारसे बाहर एक लोहेकी तार लगा रक्खी थी कि, जिसको फरयाद करनी होगी वह उस तारको हिला दे और बादशाह उसे बुलाकर इन्साफ करदे। एक रात्रिको तार हिली बादशाहने सिपाहीको भेजा तब उसने देखा कि भैंसा हिलाता है। सिपाहीने बादशाह से कहा। बादशाहने भैंसेका बोझ तुलवाया तो सात मन था। उसी दिनसे साढेतीन मनका हुकुम हो गया ॥ २१ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर २२.

एक ब्राह्मण तीर्थयात्रा करने गया था। लौटती बार जंगलके रास्तामें एक शेर पींजरेमें चिल्लाता देखा। शेर भी संकटसे छूटनेका उपाय सोच रहा था। दैववशात् ब्राह्मणको देखतेही पुकारकर बोला कृपानाथ ! आप पुण्यात्मा हैं मुझे इस प्राण-संकटसे छुडाकर प्राणदानका पुण्य संचय करो। मैं आपके उपकारको कभी भूलूंगा नहीं। ब्राह्मणको दया आई और उसने किंवाड खोल कर व्याघ्रको बाहर निकाला। बाहर आते ही व्याघ्र बोला भूख बहुत लगी है मैं तुझे खाऊँगा। ब्राह्मण बोला वाहरे उपकारका बदला ! ब्राह्मणने अनेक दृष्टान्तोंसे शेरको बहुत समझाया पर कुछ वश न चला। आखिर ब्राह्मणने कहा हम दोनों हाकिमके पास जाकर इन्साफ करें और हाकिम कहे वैसा चलें। दोनों हाकिमके पास अपना २ बयान कर चुके, तब हाकिम बोला तुम्हारी पूर्व अवस्थाको जैसी की तैसी देखे बिना इन्साफ नहीं हो सकता इसलिये वहां चलो। तब तीनों पींजराके पास आये। शेर पींजरेमें गया, ब्राह्मणने किवाड़ बंद किया, तब हाकिम बोले-ब्राह्मण तू अपने रास्तासे चला जा, और हे दुष्ट शेर ! तू इसी पींजरेमें पड़ा रह। यही ठीक इन्साफ है ॥ २२ ॥

## दृष्टान्त इन्साफपर २३.

नौशेरवान बादशाह पहले प्रजापर बडा जुल्म करता था। एक दिन वजीरको साथ लेकर शिकारको जाता था, जब कि जंगलमें पहुँचा तब एक उल्लूकी स्त्रीने उल्लूसे कहा तुम लडकीकी शादी क्यों नहीं करते हो ? उसने कहा छै महीनोंके पीछे करूंगा क्योंकि, नौशेरवान जुल्म बहुत करता है छै महीनोंमें बारा कोसोंकी उजाड हो जायगी उसी उजाडको दहेजमें देऊंगा। उल्लूकी इस वार्ताको सुनकर वजीर हँसा। बादशाहने हँसनेका सबब पूँछा तब वजीरने साफ २ सुना दिया क्योंकि वजीर पक्षियोंकी बोलीको समझता था। बादशाहने घरमें आकर हुक्म दिया जिस पर जुल्म हुआ हो वह अपनी अरजी लिखकर संदूकमें छोडदे। जब सब लोग अपनी २ अरजियोंको लिखकर संदूकमें छोडने लगे तब एक तेलीने भी अपनेपर जुल्म होनेकी अरजी लिखवाकर संदूकमें छोडदी ! उस तेलीकी स्त्रीको नौशेरवानके लडकेने जबरदस्ती छीन लिया था। पहलेही तेलीकी अरजी बादशाहके हाथमें आगई। बादशाहने अपने लडकेको कतल करवाकर तेलीको स्त्री दीलवादी। उसी दिनसे नौशेरवानका दबदबा बैठ गया और तमाम चोरोंने

उसके राजमें चोरी करनी छोडदी। और नौशेरवान आदल उसका नाम पड गया ॥ २३ ॥

## दृष्टांत बेइन्साफीपर २४.

किसी जमींदारकी स्त्री अपने खेतपर शाकको खोदनेके लिये जब गई तब धोबीके गधेको शाक खाते उसने देखा। क्रोधमें आकर दो चार लाठी गधेको ऐसी उसने मारी कि वह जखमी होकर गढेमें गिर पडा। गधेको जखमी देखकर धोबीने क्रोधसे उस स्त्रीको जोरसे एक ऐसी लात मारी जो उसका गर्भ गिर गया। जमींदारको जब यह सब हाल मालूम हुआ तब वह हाकिमके पास फरयाद करने गया। हाकिमने दोनोंके इजहारोंको लेकर यह हुकुम दिया कि जबतक धोबीका गधा अच्छा न हो तबतक धोबीकी लादीको जमींदार ढोया करे। और जमींदारकी स्त्रीको धोबी अपने घरमें लेजाकर उसकी सेवा करे। और फिर उसको उसीतरह गर्भवती बनाकर जमींदारके हवाले करे, क्योंकि धोबीने उसके गर्भको गिराया है, इसलिये तबतक उसको रक्खे जबतक वह गर्भवती न होजाय ॥ २४ ॥

## दृष्टान्त बेइन्साफीपर २५.

किसी वनमें हंसकी कौवेके साथ मैत्री होगई, तब कौवा नित्यही हंसके घरमें जाया करे और हंस कौवाकी

बड़ी खातिरदारी किया करे। एक दिन कौवेने हंससे कहा हे मित्र ! मैं रोजही आपके घरमें आता हूं और आप मेरी नित्यही खातिरदारी करते हैं मुझको बडी शरम आती है, एक दिन आप भी मेरे घर चलें। हंसने कौवेकी अरजीको मंजूर कर लिया और अपनी स्त्रीको साथ लेकर कौवेके घरपर गया। वहांपर बबूरके वृक्षके ऊपर कौवेका घर था और उसके चारों तरफ मैलाके ढेर लगे थे। हंस वहांपर बैठतेही घबराया और कौवेसे कहा ऐसी मैली जगहमें हम एक घडीभर भी ठहर नहीं सकते हैं। ऐसे कहकर जब चलने लगा तब कौवेने हंसकी स्त्रीको पकड लिया और कहा यह मेरी स्त्री है, इसको तुम कहां लिये जाते हो ? अब दोनोंका परस्पर झगडा होने लगा और दोनों हाकिमके पास गये। कौवेने हाकिमके कानमें कहा जो तुम हमको हंसनीको दिलवा देवोगे तब मैं तुम्हारे बडोंको तुम्हें दिखला देऊंगा। हाकिमने कहा जिसके पास यह हंसनी उडकर जा बैठे यह उसीकी स्त्री समझी जायगी। कौवा उडकर हंसनीके पास जाकर बैठ गया। हाकिमने कहा कौवेकी प्रीति इसके साथ बहुत है इसलिये यह कौवेकोही मिलनी चाहिये। वह कौवेको दिलवाकर हाकिमने कहा अब तुम हमारे बडोंको दिखला

देवो। हाकिमको साथ लेकर कौवा वहांपर गया जहां पर बरसातका गोबर जमा किया हुआ था उसको चोंचसे हटाकर उसके बीचमें जो कीडे घूम रहे थे उनको दिखा करके कौवेने कहा येही तुम्हारे बडे हैं। तुम जानते नहीं कि कभी हंसनीभी कौवेकी स्त्री होती है? जैसे तुम इन्साफ करते हो वैसाही फल तुमको और तुम्हारे बडोंको होता है ॥ २५ ॥

इति श्रीमदुदासीनस्वामि–हंसदासशिष्येण परमानंदसमाख्याधरेण पेशावर-नगरनिवासिना विरचितदृष्टांतमञ्जूषानामकग्रन्थे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

---

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

**गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,**
**लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो**
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८